खण्ड-441, अंक-4
शुक्रवार, 27 वैशाख, शक संवत् 1924
(17 मई, 2002 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(चौदहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 2002)

खण्ड 441 में 8 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)

2002

मूल्य : बिना महसूल रु0 16.75 पैसे, महसूल सहित रु0 21.00 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल रु0 586.25 पैसे, महसूल सहित रु0 724.25 पैसे |

विषय-सूची

विषय					पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	...	...	...	...	क-ख
कार्य-मंत्रणा समिति द्वारा सदन के कार्यक्रम के निर्धारण का प्रस्ताव (स्वीकृत)				...	1
मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव (जारी)		...	...	...	1-13
नेता प्रतिपक्ष के भाषण के मध्य व्यवधान डाले जाने पर व्यवस्था का प्रश्न				...	13-14
मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव...(जारी)		...	...	...	14-30
मंत्रि-परिषद् में विश्वास के प्रस्ताव पर पक्ष एवं विपक्ष के मा० सदस्यों को अपनी बात रखे जाने के संबंध में व्यवस्था का प्रश्न				...	30-31
मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव...(जारी)		...	...	...	31-64
त्तर प्रदेश विधान सभा की (वर्ष 2002–2003) की समितियों तथा मंत्रियों को परामर्श देने वाली स्थाई समितियों में सदस्यता हेतु विधान सभा के सदस्यों के नाम-निर्देशित करने हेतु मा० अध्यक्ष को प्राधिकृत किये जाने का प्रस्ताव (स्वीकृत)				...	64
मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव...(पारित)		...	...	...	64-101

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(चौदहवीं विधान सभा)

शुक्रवार, दिनांक 17 मई, 2002

निम्नलिखित के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :—

1—मोख्तार अंसारी, श्री — मऊ

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शुक्रवार, दिनांक 17 मई, 2002

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप लखनऊ में दिन के 11 बजे अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।)

कार्य-मंत्रणा समिति द्वारा सदन के कार्यक्रम के निर्धारण का प्रस्ताव

श्री अध्यक्ष–

कार्य-मंत्रणा समिति ने अपनी दिनांक 15 मई, 2002 की बैठक में विधान सभा के दिनांक 16 एवं 17 मई, 2002 के उपवेशनों का कार्यक्रम निम्नलिखित रूप में रखे जाने की सिफारिश की है :–

मई, 2002	
16 गुरुवार	निधन के निर्देश (प्रश्नकाल न हो तथा नियम 51, 56, 300, 301 तथा 311 की सूचनायें न ली जायं) ।
17 शुक्रवार	मंत्रि-परिषद् के प्रति विश्वास का प्रस्ताव (प्रश्नकाल न हो तथा नियम 51, 56, 300, 301 तथा 311 की सूचनायें न ली जायं) ।

संसदीय कार्य, वस्त्रोद्योग एवं रेशम उद्योग मंत्री (श्री सुखदेव राजभर)–

मान्यवर, मैं प्रस्ताव करता हूं कि "यह सदन कार्य-मंत्रणा समिति की सिफारिश से जिसकी सूचना आज श्री अध्यक्ष द्वारा सदन में दी गई है, सहमत है ।"

श्री अध्यक्ष–

प्रश्न यह है कि कार्य-मंत्रणा समिति की सिफारिश विषयक प्रस्ताव, जो माननीय संसदीय कार्य मंत्री द्वारा प्रस्तुत किया गया है, से यह सदन सहमत है ?

(प्रश्न उपस्थित किया गया और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ ।)

मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

माननीय अध्यक्ष जी, मैं प्रस्ताव करती हूं कि यह सदन मंत्रि-परिषद् में विश्वास व्यक्त करता है ।

माननीय अध्यक्ष जी, उत्तर प्रदेश में 14 वीं विधान सभा के लिये फरवरी महीने में आम चुनाव हुये थे, जब रिजल्ट आया तो ऐसा रिजल्ट आया कि किसी भी पार्टी को अकेले अपने बलबूते पर सरकार बनाने के लिये पूर्ण बहुमत नहीं मिला और रिजल्ट आने के बाद जब ऐसी स्थिति उत्तर प्रदेश में उभरकर आई तो फिर समाजवादी पार्टी ने बड़ा दल होने के नाते हालांकि पूर्ण बहुमत के लिये इनके पास संख्या नहीं थी सरकार बनाने के लिये, लेकिन बड़ा दल होने के नाते उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल जी को इन्होंने लिखकर दिया कि हमें सरकार बनाने के लिये बुलाया जाये लेकिन महामहिम राज्यपाल जी ने भारतीय संविधान के हिसाब से सारे तथ्यों की छानबीन करके कहा आपके पास पूर्ण बहुमत की चिट्ठी जो मुझे देनी चाहिये थी वह आपके पास नहीं है तो मैं आपको जब तक, आप मेरे पास पूर्ण बहुमत की

चिट्ठी साबित नहीं कर देते हैं, मैं आपको सरकार बनाने के लिये नहीं बुलाऊंगा, और 6 मार्च, तक समाजवादी पार्टी पूर्ण बहुमत वाली चिट्ठी गवर्नर साहब के सामने नहीं प्रस्तुत कर सकी जिसके कारण 7 मार्च को गवर्नर साहब ने प्रेसीडेन्ट रुल लगाने को सिफारिश भारत सरकार को की और उसके बाद उत्तर प्रदेश में राजनीतिक अस्थिरता का वातावरण पैदा हुआ, राजनीतिक गतिरोध पैदा हुआ और फिर बहुजन समाज पार्टी, भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों ने लगभग दो महीने गम्भीरता से सोच विचार किया कि यह जो उत्तर प्रदेश में राजनीतिक अस्थिरता का माहौल पैदा हुआ है, गतिरोध पैदा हो गया उसको कैसे दूर किया जाय ? लगभग दो महीने गम्भीरता से सोच विचार हुआ और सोच विचार करने के बाद हम लोग इस नतीजे पर पहुंचे कि उत्तर प्रदेश में यदि प्रेसीडेन्ट रूल लग जाता है और इलेक्शन होते हैं तो ऐसी स्थिति में उत्तर प्रदेश की एक तरफ आर्थिक मामलों में स्थिति **जर्जर** बन चुकी है, और यदि ऐसी हालत में इलेक्शन होते हैं तो इसका सीधा प्रभाव उत्तर प्रदेश की जनता पर पड़ेगा और उत्तर प्रदेश और आर्थिक बोझ से डूब जायेगा । इस बात पर बहुजन समाज पार्टी और भारतीय जनता पार्टी तथा उसके सहयोगी दलों ने गम्भीरता से सोचा और सोचने के बाद हम लोग इस नतीजे पर पहुंचे कि उत्तर प्रदेश की जनता को और अधिक आर्थिक बोझ न पड़े इस बात को ध्यान में रखते हुए, उत्तर प्रदेश के हित को ध्यान में रखते हुए बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों को मिलाकर संयुक्त सरकार बनाने का फैसला लिया । इस सम्बन्ध में 29 अप्रैल को महामहिम श्री राज्यपाल को हमने बहुमत वाली चिट्ठी दी और जब वह उससे संतुष्ट हो गये तो हमको सरकार बनाने के लिए बुलाया जिसके फलस्वरूप 3 मई को मुझे उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री के पद पर और मेरे साथ कुछ मिनिस्टरों को ओथ दिलायी । तीन मई को इस तरह से सरकार का गठन हुआ और जब सरकार का गठन हुआ तो समाजवादी पार्टी और दूसरी विरोधी पार्टियों ने यह प्रचार करना शुरू कर दिया खासतौर से समाजवादी पार्टी ने, यह बहुजन समाज पार्टी ने अच्छा नहीं किया । बहुजन समाज पार्टी ने भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर जो फैसला लिया वह अच्छा नहीं है क्योंकि वह एक साम्प्रदायिक पार्टी है और इससे उत्तर प्रदेश में साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिलेगा । इतना ही नहीं यह भी कहा कि इससे उत्तर प्रदेश में असुरक्षा का वातावरण पैदा होगा । तो इस तरह से किस्म-किस्म की बातें कहनी शुरू कर दी ।

मान्यवर, मैं समाजवादी पार्टी के नेताओं को खासतौर से यह बताना चाहती हूं कि उनका यह कहना कि भारतीय जनता पार्टी एक साम्प्रदायिक पार्टी है और उसके साथ बहुजन समाज पार्टी को सरकार नहीं बनानी चाहिए मैं समाजवादी पार्टी के नेताओं को यह बताना चाहती हूं कि वे अपने गिरेबान में झांककर देखें कि जिस भारतीय जनता पार्टी को वे साम्प्रदायिक पार्टी बता रहे हैं उनके साथ पूर्व में उनके क्या रिश्ते रहे हैं । समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुलायम सिंह जी वर्ष 1967 में संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर जसवंत नगर विधान सभा सीट से निर्वाचित हुए थे तथा उनके दल ने भारतीय जनसंघ के साथ मिलकर श्री चरण सिंह जी के मुख्य मंत्रित्व में 24-6-67 से लेकर 25-2-68 तक सरकार गठित की । इस मंत्रिमण्डल में श्री राम प्रकाश गुप्त उप मुख्य मंत्री थे । वर्ष 1977 में श्री मुलायम सिंह यादव पुनः जसवंत नगर विधान सभा सीट से विधायक बने तथा श्री राम नरेश यादव जी के नेतृत्व में गठित सरकार में सहकारिता एवं पशुपालन मंत्री रहे । उपरोक्त गठन में जनसंघ भी शामिल था । यह सरकार 23-6-1977 से 27-2-1979 तक सत्ता में रही । श्री कल्याण सिंह जी भी उसमें स्वास्थ्य मंत्री थे ।

1989 में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुलायम सिंह यादव भारतीय जनता पार्टी के समर्थन से उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री बने । यह समर्थन लगभग एक वर्ष का था । मैं कहना चाहती हूं कि जो लोग यह कह रहे हैं भारतीय जनता पार्टी एक साम्प्रदायिक पार्टी है जब यह लोग भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़े और उनके सहयोग से सरकार बनायें तो भारतीय जनता पार्टी साम्प्रदायिक पार्टी नहीं है जब हम बनायें तो यह साम्प्रदायिक पार्टी हो जाती है । मैं इस बात से सहमत नहीं हूं । जब हमारी पार्टी से मुस्लिम विधायक चुनकर आये तो समाजवादी पार्टी के नेताओं ने यह कहा कि आप लोगों को इस्तीफा दे देना चाहिए क्योंकि इस सरकार में मुसलमानों का हित सुरक्षित नहीं है । लेकिन मुस्लिम समाज के हमारे भाइयों को विधायकों को इस बात का एहसास है कि 1995 में भारतीय जनता पार्टी के सहयोग से और कुछ और अन्य दलों के सहयोग से मेरे नेतृत्व में सरकार बनी । 1997 में बी०जे०पी० और बी०एस०पी० की मिली जुली सरकार बनी और दोनों बार के मेरे मुख्यमंत्रित्व काल में तो मुस्लिमों के जान माल की, उनके ईमान की और धार्मिक स्थलों की ईमानदारी और निष्ठा के साथ सुरक्षा की गयी थी, मुस्लिम समाज के लोगों को इस बात का एहसास है । मुस्लिम समाज के लोगों ने समाजवादी पार्टी के लोगों को दिखा दिया कि आप जो हमें प्रोवोक कर रहे हैं हम, आपके भड़कावे में आने वाले नहीं हैं । हमने मायावती जी का शासनकाल देखा है, उनका दो मुख्यमंत्रित्व काल देखा है उन दोनों मुख्यमंत्रित्व काल में मुस्लिमों का अहित नहीं हुआ है, हित हुआ है । उत्तर प्रदेश के अन्दर, भारत के अन्दर यह हमारी पहली सरकार थी, 1995 में हमने मुस्लिम समाज के हित के लिये अलग से अल्पसंख्यक कल्याण विभाग बनाया । यह हमारी पहली सरकार थी मुस्लिम समाज में जो पिछड़े वर्ग के लोग थे उनको अलग से आरक्षण की सुविधा प्रदान की । जब दूसरी बार हमारी सरकार बनी तो जो अनुदान की राशि थी उसको बढ़ाकर दुगुना किया गया । इसके अलावा और भी महत्वपूर्ण फैसले मुस्लिम समाज के हित में लिये गये । 1995 में हमारे मुस्लिम भाई जानते हैं कि मथुरा के अन्दर ईदगाह की मस्जिद के स्थान पर मंदिर बनाने की बात की गयी थी हमने किसी भी धार्मिक स्थल पर कब्जा नहीं करने दिया था । यह मुस्लिम समाज के हमारे विधायकों ने उनको जवाब दिया था ।

मान्यवर, इतना ही नहीं मेरी हुकूमत के दौरान, दोनों मुख्यमंत्रित्व काल में उत्तर प्रदेश के अन्दर कोई दंगा नहीं हुआ है । उत्तर प्रदेश के अन्दर कोई बड़ी से बड़ी मस्जिद की बात छोड़ दें, किसी छोटी मस्जिद को हमने नहीं टूटने दिया था । (सत्ता पक्ष की ओर से मेंजों की थपथपाहट) उत्तर प्रदेश में मुस्लिम भाइयों के धार्मिक स्थलों के साथ-साथ सभी धर्मों के धार्मिक स्थानों की, हमारी सरकार ने ईमानदारी और निष्ठा से उसकी सुरक्षा की थी, सुरक्षा का हर प्रकार का प्रबन्ध किया था । इसके साथ-साथ मैं समाजवादी पार्टी को याद दिलाना चाहती हूं कि जब आप लोगों ने भारतीय जनता पार्टी के सहयोग से उत्तर प्रदेश में सरकार बनायी तो मुझे याद है कि अक्तूबर, 1990 में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा था कि, उस समय वे मुख्य मंत्री थे, उत्तर प्रदेश के अन्दर अयोध्या में बाबरी मस्जिद पर परिन्दा भी पर नहीं मार सकता । परन्तु लोग ऊपर गुम्बद पर चढ़े और प्रदेश में साम्प्रदायिक तनाव पैदा हुआ । उत्तर प्रदेश के मुस्लिम बहुल इलाकों में प्रदेश के अन्दर भड़के इन दंगों में बड़े पैमाने पर मुस्लिम समाज के लोग मारे गये और उनकी काफी सम्पत्ति नष्ट हुई । यह मैं बताना चाहती हूं (शोर)

उस समय मैं बिजनौर लोक सभा सीट से मेम्बर आफ पार्लियामेंट चुनकर आयी थी । मुझे याद है कि बिजनौर के अन्दर जहां मुस्लिम पापुलेशन बहुत ज्यादा थी, बिजनौर, मुरादाबाद, देवबन्द, सहारनपुर,

मेरठ हैं, यह सारी जगहें दंगों की आग में झुलस गयी थी । यह पूरे प्रदेश के लोगों को मालूम है । लेकिन मेरी हुकुमत के दौरान ऐसा नहीं हुआ । भारतीय जनता पार्टी के बाहर से सहयोग से 1995 में हमारी सरकार बनी और 1997 में मिलजुलकर सरकार बनायी गयी जो पीसफुल चली और सभी धर्मों के धार्मिक स्थलों की सुरक्षा की गयी थी ।

मान्यवर, इतना ही नहीं मुस्लिम समाज के जो विधायक हैं उनको यह कह कर भड़काया गया कि आपकी नेता ने बाबरी मस्जिद के बारे में उनका जो मानना है अपनी नीति स्पष्ट नहीं की, आपकी सरकार की नीति स्पष्ट नहीं है । माननीय अध्यक्ष जी मैं बताना चाहती हूं कि हमारी सरकार की नीति स्पष्ट है कि बाबरी मस्जिद और राम जन्म भूमि का जो मामला है यदि आपसी सहमति से सुलझ जाये तो अच्छा है, नहीं तो हमारी सरकार कोर्ट के आदेश का पालन करेगी, कोर्ट के फैसले का हमारी सरकार निष्ठा से पालन करेगी । हमारी नीति स्पष्ट है और इतना ही नहीं यह भी कहा गया कि आपकी सरकार ने खास तौर से जो मेरे नेतृत्व में सरकार बनी है तो बी०एस०पी० के बारे में यह बातें उठाई गईं कि गुजरात के मामले में चुप है । माननीय अध्यक्ष जी, मैं बताना चाहती हूं कि 7 अप्रैल से पहले माननीय प्रधान मंत्री जी ने आल पार्टीज के लीडर्स की एक मीटिंग बुलाई थी उसमें मुझे भी बुलाया गया था, मैंने उसमें बोला था, माननीय प्रधान मंत्री जी, गुजरात का मामला बहुत गम्भीर है । लेकिन आपको इस मामले की जांच करानी चाहिये शुरुआत की जगह से, कि गोधरा में जो एक्सीडेंट हुआ और उसके बाद जो पूरे गुजरात में फैला, यह देखना चाहिये कि गुजरात में किन लोगों का हाथ है, इसकी उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिये और जो भी उसमें दोषी पाये जाते हैं तो आपको धर्म जाति के चक्कर में न पड़कर दलगत राजनीति से ऊपर उठकर जांच करानी चाहिये । इसकी उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिये । यह मैंने आल पार्टीज लीडर्स की मीटिंग में कहा था और उसी पर हमारी पार्टी आज भी कायम है और इतना ही नहीं पोटो के बारे में भी हमारे मुस्लिम विधायकों को भड़काया जा रहा है कि पोटो के बारे में आपकी पार्टी कुछ नहीं कह रही है । लेकिन माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपको बताना चाहती हूं कि उत्तर प्रदेश के अन्दर आतंकवादी गतिविधियों से निपटने के लिये बहुत से कानून-कायदे बने हैं हम उनसे सख्ती से निपटेंगे और अगर हमें पोटो लगाने की जरूरत पड़ती है तो हम जाति और धर्म के चक्कर में न पड़कर, पूरी ईमानदारी से इसका दुरुपयोग नहीं करेंगे । लेकिन जरूरत पड़ेगी तो इसका उपयोग जरूर करेंगे, लेकिन हम इसका दुरुपयोग नहीं करेंगे, यह मैं बताना चाहती हूं और माननीय अध्यक्ष जी, बी०एस०पी० के बारे में एक बात मैं रखना चाहती हूं कि जब हम भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों के साथ मिलकर सरकार बनाने का फैसला ले रहे थे, तो हमारे बारे में यह कहा गया कि बी०एस०पी० अपने सिद्धान्तों को भूल गयी है । मैं बताना चाहती हूं कि अध्यक्ष जी, बहुजन समाज पार्टी अपने सिद्धांतों से तिल भर भी अलग नहीं हुयी है । बहुजन पार्टी ने बाबा साहब अम्बेडकर, श्री ज्योतिबा फूले और अन्य नेताओं के बताये हुए रास्ते पर चलकर, बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने उनके बताये गये रास्ते पर चलकर इस देश के अन्दर सामाजिक परिवर्तन के लिये जो संघर्ष शुरू किया है हमारी लड़ाई पूरे देश के अन्दर जारी रहेगी । बहुजन समाज पार्टी तथा भारतीय जनता पार्टी की विचारधाराएं अलग हो सकती हैं, लेकिन देश और प्रदेश की जनता सर्वोपरि थी, तो हमने उत्तर प्रदेश की जनता के हित में विभिन्न विचारधाराएं होते हुए भी, हमने प्रदेश की जनता को ध्यान में रख कर फैसला लिया है और इतना ही नहीं यह कहना कि हमने भारतीय जनता पार्टी और उनके सहयोगी दलों के साथ जो

सरकार बनायी, यह बेमेल समझौता है, लेकिन मैं उनको बताना चाहती हूं कि यह समझौता बेमेल नहीं है । मैं उनको स्पष्ट करना चाहती हूं कि यह समझौता बेमेल नहीं है । हमारे विधायकों को हमारी पार्टी के लोगों को उधर भारतीय जनता पार्टी के विधायकों को उनकी पार्टी के लोगों को उनके सहयोगी दलों के नेताओं को लोग यह कह कर उकसाते हैं कि बी० एस० पी० और अपनी पार्टी को देखो कहां लड़ते-झगड़ते थे, कहां सरकार बना रहे हैं । यह सरकार ज्यादा दिन चलने वाली नहीं है । लेकिन माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपको बताना चाहती हूं कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार उत्तर प्रदेश में भी रही, सेन्ट्रल में भी रही लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने हमारे साथ ऐसा नहीं किया जैसा समाजवादी पार्टी ने 2 जून, 1995 में हमारे साथ किया । इसलिये यह जो समझौता हुआ है यह बेमेल नहीं है । उत्तर प्रदेश की जनता की जरुरत थी, जरुरत को ध्यान में रखते हुए यह समझौता किया गया । मेरे नेतृत्व में सरकार बनाने का फैसला लिया । यह सरकार पूरे 5 साल चलेगी, 5 साल से पहले नहीं गिरेगी और इतना ही नहीं उत्तर प्रदेश में यह समझौता आगे भी लम्बा चलेगा और उत्तर प्रदेश के अन्दर जब भी लोकसभा का इलेक्शन होगा तो बहुजन समाज पार्टी भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर लोकसभा का चुनाव लड़ेगी । अब लोग कहीं भी कोशिश करेंगे विपक्षी दलों के लोग, हमारा यह समझौता टूटने वाला नहीं है । मैं इस सदन से अनुरोध करती हूं कि उत्तर प्रदेश की जनता के हित को ध्यान में रखकर, सर्वसमाज के हित को ध्यान में रखकर मेरे द्वारा प्रस्तुत इस विश्वास प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित करने का कष्ट करें ।

श्री अध्यक्ष–

इसके पहले कि मैं विपक्ष को आमंत्रित करूं, मैं पूरे सदन से यह अनुरोध करता हूं कि जिस प्रकार माननीय मुख्य मंत्री जी का भाषण विपक्ष ने शान्तिपूर्वक सुना है उसी प्रकार माननीय नेता प्रतिपक्ष के भाषण को सत्तापक्ष के लोग शान्तिपूर्वक सुने । इसके बाद जब और आगे चर्चा प्रारम्भ हो सब लोग इसे शान्ति से सुनें तभी हम अपने विचारों की अभिव्यक्ति को अच्छा रूप दे सकेंगे ।

नेता विरोधी दल (श्री मोहम्मद आजम खां)–

माननीय अध्यक्ष जी, मैं सत्तापक्ष के प्रस्ताव के विरोध में खड़ा हुआ हूं और एक शेर से शुरुआत करता हूं :–

तुझको मालूम है दुनिया तुझे क्या कहती है,
हाथ रख लेती है, कानों पै तेरे नाम के साथ,
कुछ दिनों और रहे गर यही हालाते चमन,
बैठ सकता नहीं सय्याद भी आराम के साथ ।

मान्यवर, भाषण में एक ही मुद्दा हावी रहा मजबूत विधायिका, भारतीय जनता पार्टी, सेक्यूलर बहुजन समाज पार्टी, उसके सहयोगी और उन्हें भड़काने वाले, उन्हें उकसाने वाले बस एक व्यक्ति, न प्रदेश में रहने वाले करोड़ों गरीब, न भूखे, न नंगे, न बेरोजगार नौजवान, न किसान एक शब्द किसी के लिये नहीं निकला । (शोर)

इसीलिये कहा गया यह समाज का अपमान है । प्रदेश की करोड़ों जनता का, जो आज आस लगाये बैठी थी इसके बाद उसकी एक सरकार बनी है वह विश्वास मत प्राप्त कर सके, न कर सके लेकिन वह हमारी सरकार होगी हमारी समस्याओं के लिये होगी । आज गेहूं नहीं तौला जा रहा है, किसानों को दाम नहीं मिल रहा है इसके लिये 50 से 100 रुपये तक उसमें मुनाफा कमा रहे हैं दलाल मगर उनके लिये एक शब्द नहीं है । बिजली नहीं है, किसान के लिये पानी नहीं है, बढ़ती हुई अपराधिक प्रवृत्ति जिसमें बेरोजगार नौजवान, पढ़े लिखे हाथ, जिनके पास काम नहीं है, 2 प्रतिशत सरकारी नौकरियों में कटौती होगी राज्यपाल महोदय का एलान हो गया । यह भी घबराहट है नौजवान के दिल में कि जिस सरकार के पास इतना पैसा नहीं है कि वह अपनी मशीनरी को पैसा दे सके तो वह सरकार बेरोजगार को कहां से पैसा देगी । एक मायूसी है पूरे प्रदेश में । हम यह समझते थे कि एक वाक्य कम से कम इन बेरोजगार नौजवानों के लिये जो अपनी बेरोजगारी के सबब, जिनके पास अपने कपड़ों की धुलाई का पैसा नहीं है जिनके मां बाप ने उन्हें तन की बोटियां काटकर पढ़ाया था एक मजदूर, पत्थर तोड़ने वाले की औलाद किसी कार्यालय में चपरासी बनेगा, वह जानता है कि उसका बेटा और बेटी इस प्रदेश का मुख्य मंत्री नहीं बनेगा लेकिन वह जरूर सोचता था कि ढोंग के नारों पर चुने हुए लोग, समाज को धोखा देकर सत्ता में आने वाले लोग, ऐसी स्थिति में एक दिन वह आयेगा जब करोड़ों लोगों का लोकतंत्र से विश्वास उठ जायेगा । मान्यवर, इस सदन को ध्यान देना चाहिये, वह दिन भारत के लिये अच्छा दिन नहीं होगा । हमने सैकड़ों साल की गुलामी से, सात समुन्दर पार की गुलामी से निजात इसलिये पायी थी कि अपना वतन होगा, अपना आसमान होगा । लेकिन हमने यह नहीं सोचा था कि ऐसा होगा हमारा वतन और ऐसा होगा अपना आसमान कि बावरिया गिरोह के दरिन्दे पत्थरों से कुचल कर बच्चों के भेजे बाहर निकाल देंगे । मुख्य मंत्री के क्षेत्र में मस्जिद में टाइम बम मिलेगा । यह कहा गया था कि जब हम सत्ता में आयेंगे, मुसलमानों खबरदार रहना, हम चौकीदार हैं, जिनके हाथ तुम्हारे खून में रंगे हुए हैं उन हाथों को हम शरीर से काटकर अलग कर देंगे । आज उन्हीं हाथों को मुसलमानों का गला दबाने के लिये इस्तेमाल किया जा रहा है और सदन में यह कहा जा रहा है और वह एक व्यक्ति जिसका नाम-बार-बार आया है, बड़ी शिकायत है, लेकिन उसका नाम लेते हुए सर को झुका लेना चाहिये । ऐसी लोगों को उस नाम के आगे और पीछे, इधर और उधर देख लेना चाहिये । माननीय मुलायम सिंह यादव का नाम इज्जत से लिया जाए लेकिन जो इज्जत से नहीं लेता हो, मुझे माफ करेंगे, कहीं उसके संस्कारों में कमी है । दो दलों का एक नापाक गठबन्धन है, टेढ़ी बुनियाद पर इमारत बनाने की कोशिश है । टेढ़ी बुनियाद पर बनने वाली इमारत को एक मामूली झटके का इन्तजार है और इस टेढ़ी बुनियाद पर कोई इमारत कायम नहीं रह सकती । हमारे यहां यह कहा जाता है ...

(कई सदस्यों के एक साथ बोलने पर व्यवधान)

हमारे यहां यह कहा जाता है कि मोमिन एक बिल से दूसरी बार डसा नहीं जाता है । बहुजन समाज पार्टी के वह विधायक जो अपने आप को मुसलमान कहते हैं, उन्हें यह हदीस मालूम होगी ।

(बसपा के कुछ विधायक खड़े होकर बोलने लगे)

*परिवेश, पर्यावरण एवं आबकारी मंत्री (श्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी)–

हदीस के बारे में ये क्या कहेंगे .....

(बसपा के कई विधायकों के एक साथ बोलने पर)

श्री अध्यक्ष–

आप लोग शान्त रहें। अपने भाषण में अपनी बात रख लीजियेगा।

श्री अध्यक्ष–

कृपया सभी लोग बैठ जाएं। अपना स्थान ग्रहण करें और शान्त रहें। देखिये शब्दों से आलोचना होनी चाहिये लेकिन उत्तेजना नहीं होनी चाहिये।

श्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी–

मान्यवर, यह शब्द कार्यवाही से निकलवा दें।

श्री अध्यक्ष–

ठीक है, मैं कार्यवाही देख लूंगा।

श्री अम्बिका चौधरी–

मान्यवर, अगर किसी तथ्य का संबंध महाभारत, रामायण या हदीस से जुड़ा है तो उसका जिक्र किया जा सकता है।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

आप लोगे कृपया शान्त हो जाएं और बैठ जाएं। देखिये रामायण की चौपाई, महाभारत का प्रसंग और कुरान की आयतों का उल्लेख जो तमाम धर्म से जुड़ी बातें हैं उनका उल्लेख हमारी बातों का आधार पहले से बनी हैं। एक दूसरे की धार्मिक भावनाओं को ठेस न पहुंचे इस ढंग से अपनी बात प्रभावी ढंग से कहें। एक दूसरे को कोई ठेस न पहुंचायें।

श्री मोहम्मद आज़म खां–

मान्यवर, मैंने किसी को ठेस नहीं पहुंचाई है। ठेस तो पहुंची है क्षेत्र में उन वोटर्स को जिन्होंने इन्हें चुन कर भेजा। अध्यक्ष जी, अपने भाषण की शुरुआत में ही इसे किसने रखा था, आपके बीच, सदन के बीच और क्योंकि बात ही इन मुद्दों पर है। आज साम्प्रदायिकता पर, बहुजन समाज पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के मिलन पर, मधुर मिलन पर, उनके पुराने तजुर्बों पर, माननीय मुलायम सिंह यादव जी के कुछ कड़ुवे तजुर्बों पर। बताया तो गया कि कुछ हुआ था लेकिन यह नहीं बताया गया कि

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

वह क्या था । अगर हम यह जानना चाहें कि वह क्या हुआ था तो हमारी मालूमात में इजाफा होगा । लोगों को पता तो चले कि क्या हुआ था । लेकिन अभी तक सदन को यह नहीं मालूम हुआ कि वह क्या हुआ था ? मान्यवर, मैं कुछ आपके माध्यम से सत्ता पक्ष से जरूर कहना चाहूंगा कि जिस तरह उनके नेता का भाषण सुना गया है वह अपनी बर्दास्त का सबूत देंगे, आपको सरकार चलानी है और यह याद रहे कि विपक्ष आपकी आवाज से दबकर और आपके फासिस्ट तरीकों से दबकर यहां रहने के लिये तैयार नहीं होगा और मान्यवर, यह बता देना भी जरूरी है कि फासिस्टवादी ताकतों ने जिस तरह पूरे देश में कमजोरों को दबाने का काम किया है तथा फासिस्टवादी ताकतों ने जिस तरह से उत्तर प्रदेश में कमजोरों को दबाकर उनकी बात करने से रोकना चाहती है, इस सदन के अन्दर वह वातावरण नहीं चल सकेगा । इसलिये आज यह कहना जरूरी हो गया है और प्रदेश की जनता तक यह पैगाम पहुंचाना जरूरी हो गया है कि यह गठबन्धन नैतिक नहीं है, यह गठबन्धन उसूलों की बुनियाद पर नहीं है, यह गठबन्धन जनता की भलाई का गठबन्धन नहीं है । यह मौकापरस्तों का गठबन्धन है, यह प्रदेश को लूटने वालों का गठबन्धन है । जनता यह अच्छी तरह से जानती है कि जिन्हें पांच साल के लिये चुना गया था उन्होंने साढ़े पांच साल सरकार चलायी, सरकार चलाने के समय में भी डंडी मारने का काम किया था । ....

श्री अध्यक्ष–

साढ़े पांच साल कोई सरकार नहीं चली, विधान सभा चली है परन्तु सरकार नहीं चली ।

श्री मोहम्मद आज़म खां–

माफी के साथ यह कहने में अपने आपको हकबजानिब समझता हूं कि जब मैं राज्यसभा का सदस्य हुआ था उस तारीख से लेकर सरकार के जाने तक की तारीख और विधायकों के सैलरी और सहूलियतें मिलने वाली तारीख तक मेरे जैसे आदमी ने साढ़े पांच साल गिना था और सच्चाई भी यही है । यह सही है कि समाजवादी पार्टी और माननीय मुलायम सिंह जी के दल को बहुमत हासिल नहीं हो सका और सरकार नहीं बना सके । इसलिये सरकार नहीं बना सके क्योंकि मा० मुलायम सिंह यादव और उनकी पार्टी को, उनके नैतिक उसूलों को, इंसानी उसूलों को, साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ने वाली इच्छाशक्ति को सिर्फ हिन्दुस्तान ही नहीं हिन्दुस्तान के बाहर भी जाना जाता है ।

(सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा एक साथ बोलने पर व्यवधान/शोर)

यह कहा गया कि माननीय मुलायम सिंह यादव जी ने कहा कि परिन्दा पर नहीं मार सकता । मुझे अफसोस है कि इतने बड़े पद पर बैठे हुये किसी व्यक्ति ने गल ानी से काम लिया है । यह झूठा इल्जाम है । यह जरूर कहा गया लेकिन यह माननीय मुलायम सिंह जी ने कहा यह सच नहीं है । सच यह है कि 6 दिसम्बर, 1992 को भारतीय जनता पार्टी ने बाबरी मस्जिद को शहीद किया था । यह सच है कि बहुजन समाज पार्टी, बाबरी मस्जिद शहीद करने वालों, मुसलमानों का कत्लेआम करने वालों के साथ सरकार बनाये बैठी है । बहुत सी बातें हो सकता है सदन में नहीं कही जाती अगर कहीं पर मजदूरों के लिये कहा गया होता, किसानों के लिये कहा गया होता यहां पढ़े लिखे बेरोजगारों के लिये कहा गया होता । बिजली के बारे में कहा गया होता, गेहूं के बारे में कहा गया होता और साम्प्रदायिकता रोकने के लिये कहा गया होता । इंसान आज दरिंदा बना हुआ है उस दरिंदगी पर काबू पाने के लिये कहा गया

होता तो हो सकता है कि आज यह बातें आपके सामने न रखता । जो यहां कहा गया उसमें आधा प्रतिशत, एक शब्द, एक वाक्य भी प्रदेश के किसानों के लिये, बिजली की कटौती के लिये नहीं कहा गया । जो कुछ कहा गया वह मुसलमानों के साथ हुये अन्याय के बारे में था । मैं आज कहना चाहता हूं भारतीय जनता पार्टी के साथियों से हमारा कड़ा विरोध है कि यह बिल्कुल सही है कि मस्जिद तोड़ी गयी । यह सही है कि मस्जिद की जगह पर मंदिर बना और यह भी सही है कि एक इबादतगाह तोड़कर इबादतगाह बनायी । मैं यह कहना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी ने एक इबादतगाह तोड़कर इबादतगाह बनायी लेकिन बहुजन समाज पार्टी के नेता ने कहा कि अगर मुझे अख्तियार होता यह समस्या हल करने का तो मैं, [x x x] बनवाने का काम करूंगा ।

(शोर)

श्री अध्यक्ष–

आप लोग कृपया शान्त रहें ।

(पक्ष तथा विपक्ष के अनेक सदस्यों के साथ-साथ बोलने पर शोर)

श्री अध्यक्ष–

कृपया शान्त रहें । आप लोग कृपया बैठिये ।

(सदन में शान्ति होने पर)

श्री अध्यक्ष–

जिस वातावरण में हम बैठे हैं उस वातावरण में हमको विशेष सावधानी की आवश्यकता है । राजनीति में बहुत से लोग अनेक-अनेक स्थानों पर अनेक-अनेक प्रकार की बातें करते हैं । यह अपना विवेक होता है कि हम कौन सी बात कहां कहें और कौन सी बात कहां न कहें । इस सदन के सभी माननीय सदस्य विवेकशील हैं, बुद्धिमान हैं, सबके पास अपने विचारों की अभिव्यक्ति करने के लिये बड़ी क्षमता है और शब्दों का भण्डार है लेकिन मैं सभी से अनुरोध करूंगा कि कुछ बातें नहीं कहनी चाहिये । उनके कहने से वातावरण दूषित हो सकता है, उत्तेजना हो सकती है और भावनायें जाग सकती हैं । मैं अनुरोध करूंगा कि इस बात का ध्यान माननीय नेता प्रतिपक्ष रखें और सभी माननीय सदस्यों से कहना चाहता हूं कि शान्त रहें ।

(माननीय मुख्य मंत्री के खड़े होने पर ।)

श्री अध्यक्ष–

माननीय मुख्य मंत्री जी कुछ कह रही हैं ।

नोट :–[x x x] यह अंश मा० अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

सुश्री मायावती–

माननीय अध्यक्ष जी, बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मान्यवर, काशीराम जी के बारे में जो बात कही गयी है .....

(व्यवधान के मध्य)

जब आप अपनी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का नाम ले सकते हैं तो बहुजन समाज पार्टी अपनी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का नाम क्यों नहीं ले सकती हैं ? अध्यक्ष जी, बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के बारे में यह जो बात कही गई है यह बिल्कुल गलत है । यदि इस बात में सच्चाई होती तो 1993 में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी ने मिलकर चुनाव लड़ा था उस समय यह प्रचार गलत तरीके से मेरी पार्टी को बदनाम करने के लिये किया गया था । यदि इस बात में सच्चाई थी तो समाजवादी पार्टी ने मिलकर चुनाव लड़ा था उस समय यह प्रचार गलत तरीके से बहुजन समाज पार्टी के साथ सहयोग से क्यों सरकार बनाई ? इनको अपने शब्दों को वापस लेना चाहिये इसको कार्यवाही से निकाल देना चाहिये ।

श्री अध्यक्ष–

आने वाले बहुत से वक्ता हैं । मैं एक चीज कहना चाहता हूं । जब किसी की आलोचना करते हैं तो ऐसे व्यक्ति का नाम नहीं लेते जो इस सदन का सदस्य न हो । इसीलिये मुख्य मंत्री जी को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष की आलोचना करते समय मैंने उनको मना कर दिया था । लेकिन जब नेता प्रतिपक्ष ने मुलायम सिंह जी का नाम प्रशंसा करते समय लिया तो मैंने मना नहीं किया । क्योंकि वह आलोचना नहीं थी प्रशंसा थी । ऐसे व्यक्ति की आलोचना आप न करें जो यहां उत्तर न दे सके । नेता प्रतिपक्ष ने किसी का नाम नहीं लिया था । ऐसी बात न कही जाए जिससे उत्तेजना फैले ।

श्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी–

मान्यवर, जो आपत्तिजनक बात हो उसे कार्यवाही से निकाल दिया जाए ।

श्री अध्यक्ष–

आपत्तिजनक चीज अभिलेख में नहीं रहेगी ।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

अध्यक्ष जी, आप कार्यवाही निकलवाकर देख लें, नेता प्रतिपक्ष ने किसी व्यक्ति या नेता का नाम नहीं लिया है । न ही किसी पद का नाम लिया है ।

संसदीय कार्य, वस्त्रोद्योग एवं रेशम उद्योग मंत्री (श्री सुखदेव राजभर)–

जब नेता प्रतिपक्ष बोल रहे थे तो पीछे से एक माननीय सदस्य ने नाम लिया था ।

श्री अध्यक्ष–

जो पीछे से बोलते हैं उसका संज्ञान नहीं लेते हैं ।

(व्यवधान)

श्री मोहम्मद आज़म खां–

अध्यक्ष जी, मुझे सदन की परम्पराओं, यहां की रस्मोरिवाज का पूरी तरह से अहसास है। मेरी जमीर में यह बात शामिल है कि कोई ऐसी बात न हो नियमों के खिलाफ हो। मैंने बात बिल्कुल सच्ची कही लेकिन नाम लिया। मैंने तो यह भी नहीं कहा बेगम हजरत महल पार्क में कहा था कि [xxx] मैंने तो नाम तक नहीं लिया।

श्री अध्यक्ष–

सदन में सद्भावना का वातावरण बना रहे इसलिये बात इस प्रकार की नहीं कहनी चाहिए।

श्री मोहम्मद आज़म खां–

मैंने जब अपने गिरेबां के किये थे टुकड़े,

तुमको क्यों अपना गिरेबां याद आया।

मैंने तो किसी का नाम नहीं लिया लेकिन आपने नाम लेकर बात की, सच्चाई पर मोहर लगा दी है।

(व्यवधान)

सुश्री मायावती–

मान्यवर, फिर इन्होंने इनके सहयोग से अपनी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष को क्यों मुख्य मंत्री बनाया ? अगर इनमें थोड़ी भी नैतिकता होती तो अपनी सरकार नहीं बनानी चाहिए थी। बहुजन समाज पार्टी के सहयोग से अपने नेता को क्यों मुख्य मंत्री बनाया उत्तर प्रदेश का। थोड़ी भी नैतिकता होती तो विपक्ष में बैठते।

श्री मोहम्मद आज़म खां–

आज पूरा देश यह इन्तजार कर रहा है कि उत्तर प्रदेश की विधान सभा में क्या हो रहा है, क्या होने वाला है और देश का सबसे बड़ा प्रदेश, हिन्दुस्तान का धड़कता हुआ दिल कहलाने वाला प्रदेश क्या फैसला लेने वाला है और उस प्रदेश की विधान सभा में न किसी के जज्बात का ख्याल रखा जायेगा न अपनी मर्यादा का ख्याल रखा जायेगा, न अपने पद का गौरव रखा जायेगा, न करोड़ों वह लोग जो इन्तजार में हैं फैसले के, उनका ख्याल रखा जायेगा। एक व्यक्ति से नफरत है।

(सत्ता पक्ष की तरफ से कुछ कहने पर)

मान्यवर, एक जुमला आया है उधर से मंत्री का कि अब आया है, सिखायेंगे। मैं जवाब देना चाहता हूं.....

नोट :–[xxx] यह अंश मा० अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री अध्यक्ष–

इस तरह से टीका-टिप्पणी होती रहती है, उसका संज्ञान नहीं लिया जाता है ।

श्री मोहम्मद आज़म खां–

बहुत सिखाया है हमको लोगों ने । बहुत बुलाया है, बहुत काटा है इसलिये उन सारे लोगों को आज सुनना चाहिए कि प्रदेश के उन अल्पसंख्यकों को, एक अल्पसंख्यक की जबान से उधर के एक मंत्री की जबान से निकले हुए जुमले को सुनना चाहिए और समझना चाहिए कि उनके साथ घोर नाइन्साफी हुई है । उनके साथ धोखा हुआ है । उनसे वोट मांगा था कि जिन्होंने उनके साथ नाइन्साफी की है, उनसे बदला लेंगे । आज इस सदन में विश्वास मत हासिल करने वालों का यह याद रहना चाहिए कि यही सदन नहीं है, इस सदन के बाहर भी एक दुनिया है और वही असल दुनिया है । हां या ना करने के बाद जो सदस्य अपने क्षेत्र में जायेंगे उनको यह याद रखना चाहिए कि वही असल दुनिया है । यह धमकाने वाले लोग याद रखें कि जिसने कभी न झुकना सीखा उसका नाम मुलायम है । जिसे धमकी से डरायेंगे तो सुनों हम डरने वाले नहीं हैं । न सदन के अन्दर, न सदन के बाहर । यह मालूम था हमें, फासिस्टों के साथ सरकार बनाने वाले पोटा कानून हमारे ऊपर लगायेंगे, यह धमकी है कि जितने मदरसे हैं उनको आई०एस०आई० के अड्डे करार देंगे उन मदरसों के उलेमा को, उन मदरसों में पढ़ाने वालों को पोटा कानून के तहत (व्यवधान) पोटा कानून के अन्तर्गत, उनको पकड़ने की तैयारी यह कर चुके हैं ।

(व्यवधान)

श्री अम्बिका चौधरी–

मान्यवर, सदन की परम्पराओं को उच्चीकृत कराएं ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता प्रतिपक्ष बोल रहे हैं ।

(व्यवधान)

श्री मोहम्द आज़म खां–

सदन में विश्वास मत प्राप्त करने के लिए बहुजन समाज पार्टी उत्तर प्रदेश के किसानों, गरीबों के हितों की बात नहीं कहेगी, यह भी हमें मालूम था, बहुजन समाज पार्टी आज भारतीय जनता पार्टी के फासिज्म को गुजरात से लेकर सहारनपुर की मस्जिद और फैजाबाद की बाबरिया काण्ड से लेकर बहराइच तक सेक्युलर सार्टिफिकेट जारी करेंगी, यह भी हमें मालूम था, यह इसलिये मालूम था कि जब पहली बार गठबंधन की सरकार बहुजन समाज पार्टी के साथ बनी, यह तथ्यों के खिलाफ बात है, मेरे जिस जुमले पर इतना एतराज हुआ, जिस पर मुख्य मंत्री जी को खड़ा होना पड़ा वह जुमला सरकार का गठबंधन खत्म होने के बाद, हमारा गठबंधन टूटने के बाद, दिल्ली में लालकिले के मैदान में रैली में कहा गया था । मैं कहना चाहता हूं बहुजन समाज पार्टी इस सदन में भारतीय जनता पार्टी को साथ लेकर, चल रही है लेकिन बहुजन समाज पार्टी ने जिस तरह से कई वर्ष पहले माननीय मुलायम सिंह यादव को खंजर

घोंपने का काम किया, 6 महीने के लिए खैरात में मुख्य मंत्री बना दिया। हमेशा के लिए, ऐसा रास्ता जो हमें दूर तक, मंजिल तक पहुंचा सकता था वह खत्म कर दिया, मैं समझता था कि फासिज्म की साजिश से कुछ सीखेंगे, हमें बजाए सीखने के उसका शिकार बनाया गया और इसका इज्म तक हुआ जब एक बार नहीं, दो बार नहीं, तीन बार बहुजन समाज पार्टी ने दोस्ती की, ऐसी पार्टी जिसने हिन्दुस्तान में ही नहीं, हिन्दुस्तान के बाहर भारत के माथे पर कलंक लगाने का काम किया (व्यवधान) और प्रदेश के करोड़ों लोगों के साथ विश्वासघात किया। पोटा का कानून जो पास हुआ है उसके लिए भी यहां प्रमाण-पत्र जारी किया जाएगा। आने वाले दिनों में मुसलमानों के तमाम मदरसों को आई०एस०आई० का अड्डा घोषित किया जाएगा...

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

शान्त वातावरण के निर्माण में मेरी सहायता करें।

नेता विरोधी दल के भाषण के मध्य व्यवधान डाले जाने पर व्यवस्था का प्रश्न

(व्यवधान)

श्री अम्बिका चौधरी–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता विरोध पक्ष अपनी बात कर रहे हैं और यह बीच में टोका-टाकी कर रहे हैं। ये वरिष्ठ लोग हैं जो इस तरह की टोका-टाकी कर रहे हैं। मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूं, कदाचित आपने ध्यान नहीं दिया, यह सुनिश्चित करायें कि माननीय नेता प्रतिपक्ष के बोलने पर मंत्रियों के स्तर से जो टोका-टाकी हो रही है इसकी पीठ की ओर से भर्त्सना होनी चाहिए। आप इंगित कीजिये, दण्डित कीजिये आप यह सुनिश्चित करायें कि माननीय नेता प्रतिपक्ष के भाषण पर कहीं अवरोध न हो। अगर कोई प्रश्न ही करना हो तो जो परम्परा है उसका निर्वाह करें। नेता प्रतिपक्ष बोल रहे हों और माननीय सदस्य बीच में खड़े होकर बोलने लगें तो यह परम्परा नहीं है। इसमें आपकी व्यवस्था आनी चाहिए।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

आप लोग कृपया शान्त रहें।

श्री नरेश चन्द्र अग्रवाल–

मान्यवर, इस पीठ की व्यवस्था रही है कि नेता सदन और नेता प्रतिपक्ष कभी भी खड़े हो सकते हैं। बाकी कोई नेता बिना अध्यक्ष की अनुपति के खड़े नहीं होंगे।

(इस समय 12 बजकर 05 मिनट हुए।)

श्री. अध्यक्ष–

माननीय नेता प्रतिपक्ष अपना भाषण कर रहे थे । माननीय नगर विकास मंत्री जी ने व्यवधान नहीं किया । वह कुछ करने की अनुमति मांग रहे थे । अभी मैंने अनुमति नहीं दी है । हो सकता है कि कोई विशेष बात उनके ध्यान में आ गयी हो । मैंने अनुमति नहीं दी । माननीय नेता प्रतिपक्ष से अनुरोध है कि वे कृपया अपना स्थान ग्रहण कर लें । वह कुछ कहना चाहते हैं और अनुमति मांग रहे हैं ।

(व्यवधान)

नेता विरोधी दल (श्री मौहम्मद आज़म खां)–

मान्यवर, आप इंसाफ करेंगे, ऐसी आपसे उम्मीद है और आपसे इंसाफ मिला भी है । मैं पहले भी इस सदन में सदस्य की हैसियत से रहा हूं और आप भी इसी पद पर रहे हैं । मैं वही लौटा रहा हूं जो मुझे मिला है । जो इस सदन से मिला है मैं वही लौटा रहा हूं ।

श्री अध्यक्ष–

कुछ इसमें सुधार करके वापस करें ।

श्री मोहम्मद आज़म खां–

मैं इसमें बेईमानी समझूंगा क्योंकि मुझे जितना मिला है मै वही वापस करूंगा । जो मुझे मिला है देश को मिला है ।

मंत्रि-परिषद में विश्वास का प्रस्ताव (क्रमागत)

नेता विरोधी दल (श्री मोहम्मद आज़म खां)–

प्रदेश को जानकारी मिलनी चाहिए, यह जो गठबंधन है, 97 विधायकों की ताकतों पर एक कमजोर बैशाखी के सहारे, भारती जनता पार्टी की बैशाखी के सहारे बनने वाली सरकार न तो किसानों के लिए, न मजदूरों के लिए और न ही गरीबों के लिए है । पूरा भाषण नेता सदन का मुसलमानों के लिए, मुस्लिम विधायकों के लिए, मदरसों के लिए है मान्यवर, भाषण हुआ था इसलिए हुआ था कि प्रदेश के बाहर रहने वाले करोड़ों लोग जिन्होंने वोट दिया था कहा गया था कि जिनकी संख्या ज्यादा होगी उसकी उतनी ही हिस्सेदारी होगी । बाबरी मस्जिद गिराने वालों के सर धड़ से अलग कर देंगे और यह भी कहा था कि अगर हम सरकार नहीं बना सके तो विपक्ष में बैठेंगे लेकिन भारतीय जनता पार्टी के साथ सरकार नहीं बनायेंगे ।

(व्यवधान)

मान्यवर, इस सरकार में चन्द घण्टे बाद बलिया जिले के उप ब्लाक प्रमुख की हत्या हो गयी उसका नाम राजिन्दर राम है । यह ईनाम हमारे प्रदेश के एक कमजोर वर्ग, दलित वर्ग को मिला इस सरकार के बनने के तुरन्त बाद ।

श्री भरत सिंह–

मान्यवर, यह सपा के लोगों ने करवाया ।

श्री मोहम्द आज़म ख़ां–

मान्यवर, डाक्टर साहब का जिस बेदर्दी से क़त्ल हुआ, बच्चे मारे गये उनकी पत्नी आज भी बेहोशी के आलम में है। आज तक उसका हत्यारा गिरफ्तार नहीं हुआ। सरकार की जिम्मेदारी होती है कि हर जगह वह अपनी उपस्थिति का अहसास कराये। राज्यपाल के शासन के बाद हमारे साथ अन्याय हुआ। हमारी 143 विधायकों वाली पार्टी को सरकार बनाने का न्योता नहीं दिया गया। समाजवादी पार्टी से बहुत कम बहुजन समाज पार्टी और भारतीय जनता पार्टी को सरकार बनाने का न्योता दिया गया। जनता को सजा देने का तरीका यह है कि चुनाव के दिन उसने बैलेट पर और मशीन पर बटन दबाकर अन्याय करने वाली भारतीय जनता पार्टी को सजा देकर सबक सिखा दिया कि जनता के हितों के साथ खिलवाड़ करने वालों, साम्प्रदायिकता फैलाने वालों, दबे-कुचले लोगों को सताने वालों से हम लोग बदला लेते हैं। उन्हें नकार दिया जनता ने, न बी०एस०पी० और न बी०जे०पी० किसी को इतने विधायकों की तादाद हासिल नहीं हो सकी। हमें थी हासिल। हमें न्योता मिलना चाहिये था, जबकि बी०एस०पी० को कम तादाद पर न्योता मिला है व हमें मिलना चाहिये था। इस पर मा० सुप्रीम कोर्ट के फैसले हैं। बिहार में केन्द्रीय मंत्री नितीश कुमार साहब को शपथ दिलायी गयी, बहुत कम तादाद पर इस उम्मीद पर कि हार्स-ट्रेडिंग हो जायेगी लेकिन ऐसा नहीं हो सका। श्री नितीश जी को दिल्ली वापस आना पड़ा। हम बहुमत साबित न कर पाते तो वापस चले जाते। लेकिन ईमानदारी के साथ हमें मौका मिलना चाहिये था, नाइंसाफी हुई है।

लिहाजा मैं अपनी बात को यहीं खत्म करते हुए आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि नेता सदन का भाषण न गरीब के लिये था न किसान के लिये था, न मजदूर के लिये था, इस प्रदेश में रहने वाली कराहती हुई जनता व मुस्लिम जिनके बल पर आप चुन कर आये हैं जनाब ये हैं। सिर्फ 14 विधायकों के बल पर खड़ी सरकार के उन 14 विधायकों से आपके माध्यम से मान्यवर, यह जरूर कहना चाहूंगा कि अपने जमीर की आवाज पर, गुजरात की घटनाओं पर, वहां की बेवाओं की सिसकियों और यतीमों, मसीहों की आह पर फैसला लेने की कोशिश करें।

(व्यवधान)

मित्रों यह जिन्दगी बहुत छोटी है, सदन की जिन्दगी बहुत छोटी है, उन्हें किसी और को भी जवाब देना होगा। नेता सदन का पैगाम प्रदेश के करोड़ों लोगों तक पहुंच गया है कि भारतीय जनता पार्टी के मंसूबे भारतीय जनता पार्टी के हाथों से न होकर बल्कि बी०एस०पी० के हाथों से अमली तौर पर पूरा करने की कोशिश होगी और उन्हें पूरा किया जायेगा। लेकिन प्रदेश की जनता यह याद रखे कि प्रदेश की जनता होशियार रहे इस नापाक गठबंधन के फैसले अगर जनता के खिलाफ होंगे तो सदन के अन्दर और सदन के बाहर उन सारी बातों के लिये समाजवादी पार्टी पूरी ताकत के साथ खड़ी होगी। यहां, राजा के दरवाजे पर, हत्या हुई विधायक मंजूर अहमद जी की। (व्यवधान) प्रदेश की जनता को यह बता देने की जरूरत है कि सदन से लेकर गांव, खलिहान तक, पगडंडी, मुहल्लों तक गरीब के उस दरवाजे तक, जहां टाट का फटा परदा नहीं है, उससे यह कहना चाहता हूं कि उनके हितों के लिये समाजवादी पार्टी के नेता और हम लोग जिन्दगी की आखिरी सांस तक लड़ाई लड़ेंगे (विपक्ष की ओर से मेजों की थपथपाहट।)

* श्री राजनाथ सिंह–

अध्यक्ष महोदय, मैं प्रतिपक्ष के लिए अपने तथा अपने दल की तरफ से सम्मान व्यक्त करता हूं। 14वीं विधान सभा के जो चुनाव परिणाम हम सबके सामने आये हैं उससे कोई भी राजनीतिक पार्टी अपने बल के आधार पर अपने संख्या बल के आधार पर सरकार बनाने की स्थिति में नहीं थी। हम सबने समाचार पत्रों में भी तथा प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया में देखा भी है सुना भी है कि जो भी जनादेश 14वीं विधान सभा चुनाव में प्रकट हुआ है उसे किसी ने खण्डित जनादेश कहा है किसी ने कुछ और कहा है लेकिन जनादेश, जनादेश होता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनादेश शब्द का एक अपना महत्व है जनादेश शब्द की अपनी पवित्रता है मैं इस जनादेश को खण्डित जनादेश नहीं कहना चाहता। जनादेश, जनादेश होता है। यह बात सच है कि यह जनादेश जटिल है लेकिन जब असाधारण और जटिल जनादेश हमको प्राप्त हुआ है तो निश्चित रूप से जनता को हमसे यह अपेक्षा भी रही होगी कि जिन जटिल परिस्थितियों में हमने राजनीतिक दलों को खड़ा किया है इसमें से तुम्हें ही समाधान निकालना होगा। क्या यह सच नहीं है कि संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की सबसे बड़ी अपरिहार्यता सबसे बड़ी आवश्यकता होती है लोकप्रिय सरकार का गठन। यदि किसी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ था तो क्या राजनीतिक दलों का यह दायित्व नहीं बनता था कि इस जटिलता में से ही वह कोई रास्ता निकालने की कोशिश करें। यह बात सच है कि समाजवादी पार्टी इस बार के विधान सभा चुनाव में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में आयी है इसके लिए समाजवादी पार्टी के लोग बधाई के पात्र हैं। समाजवादी पार्टी के नेता की तरफ से महामहिम राज्यपाल के समक्ष सरकार बनाने का दावा भी पेश किया गया, माननीय राज्यपाल महोदय ने कहा कि सरकार बनाने के लिए अपेक्षित संख्या की एक सूची हमें उपलब्ध करा दीजिए तब मैं आपको सरकार बनाने के लिए आमंत्रित कर सकता हूं। महामहिम राज्यपाल ने अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करते हुए कहा था कि आप जब भी सूची मुझे दे दें, हम सरकार बनाने के लिए आपको आमंत्रित करेंगे। समाजवादी पार्टी ने यह भी कहा था कि एक महीने के अन्दर जितने विधायकों की संख्या चाहें उतने विधायकों की संख्या इकट्ठी कर सकता हूं, उसकी सूची उपलब्ध करा सकता हूं। एक महीने की बात तो दूर दो महीने का समय बीत गया लेकिन समाजवादी पार्टी की जो संख्या थी उससे एक भी संख्या ऊपर नहीं आयी। मैं तो खुद भारतीय जनता पार्टी का हूं श्रीमान्, भारतीय जनता पार्टी के ऊपर साम्प्रदायिकता का आरोप लगता है, हम फासिस्ट हैं, हम साम्प्रदायिक हैं, यह आरोप हमारे ऊपर लगाया जाता है।

एक सदस्य–

सही है, सही है।

श्री राजनाथ सिंह–

यदि हम साम्प्रदायिक हैं, यदि हम फासिस्ट हैं तो धर्म-निरपेक्ष ताकतें क्या कर रही हैं ? क्या दो महीने का समय सरकार बनाने के लिए पर्याप्त नहीं था ? क्या लोकतंत्र के साथ इस तरीके से मजाक

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

किया जायेगा और हम आंखें बन्द करके उसे देखते रहेंगे। मैंने तो समाचार पत्रों के माध्यम से अपील की थी कि जो भी हो वह मिलकर उत्तर प्रदेश के लिए लोकप्रिय सरकार का गठन करें। जनता ने आपको स्पष्ट बहुमत नहीं दिया तो इस सच्चाई पर भी हमने फैसला किया। भारतीय जनता पार्टी विपक्ष में बैठेगी और यह फैसला हमने इस सोच के आधार पर किया था कि शायद समाजवादी पार्टी सबसे बड़ी पार्टी है और इस पार्टी के सरकार बनाने पर सेक्यूलर पोलिटिकल पार्टीज का समर्थन बढ़ जाये और उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी सरकार बना लेगी और भारतीय जनता पार्टी विपक्ष की भूमिका का निर्वाह करेगी। मैं तो नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस उनसे भी कहना चाहूंगा, बार-बार उन्होंने आग्रह किया आपका समर्थन चाहिए क्यों नहीं समाजवादी पार्टी को आपने समर्थन दिया। दूसरे सारे राजनीतिक दलों के लोग जो यहां बैठे हुए हैं, जो अपने को सेक्यूलर होने का दावा करते हैं क्यों नहीं समर्थन दिया, क्या भारतीय जनता पार्टी ने रोका था ? क्या भारतीय जनता पार्टी ने रोका है ? क्या एक राष्ट्रीय पार्टी होने के नाते पार्टी की यह जिम्मेवारी नहीं बनती थी कि उत्तर प्रदेश में एक लोकप्रिय सरकार का मार्ग प्रशस्त करें ? यदि हमने इस जिम्मेदारी का निर्वाह किया है तो बहुत बड़ा अपराध किया है ? चाहे जो कुछ भी हो जाय भारतीय जनता पार्टी के लोग जो फैसला करते हैं वह अपना फैसला लाभ हानि के आधार पर नहीं करते हैं हम फैसला करते हैं तो इंसाफ की तराजू पर तौलकर फैसला करते हैं। क्या आप सब दलगत स्वार्थ से ऊपर नहीं उठ सकते थे, क्या आप सब व्यक्तिगत अहंकार नहीं छोड़ सकते थे क्यों सरकार आपने नहीं बनाई, क्या हम केवल नौकरशाही के हवाले ही उत्तर प्रदेश को छोड़ देते, क्या हम लोकतंत्र का इस उत्तर प्रदेश में चीरहरण होने देते ? हमने अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह किया है। क्या प्रतिपक्ष वैध राजनीति नहीं कर सकता। हम विरोधी दल नहीं कहते हैं सदन में पक्ष और प्रतिपक्ष होता है। मैं यह भी विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि जब कभी भी प्रतिपक्ष रचनात्मक भूमिका का निर्वाह करेगी हम सदन में खड़े होकर उन्हें साधुवाद देगें, बधाई देंगे। मैं याद दिलाना चाहता हूं जब जिस समय आपका निर्वाचन था उस समय प्रतिपक्ष ने जो भूमिका निभाई थी उसकी हमने सराहना की थी, बधाई दी थी लेकिन महामहिम राज्यपाल महोदय जब अपना अभिभाषण प्रस्तुत करने के लिए इस सदन में उपस्थित हुए तो प्रतिपक्ष ने जिस प्रकार का व्यवहार किया, मैं किन शब्दों का प्रयोग करूं जैसे लगता है कि संसदीय लोकतंत्रात्मक व्यवस्था पर से विश्वास ही समाप्त हो गया है।

श्रीमन्, महामहिम राज्यपाल, राज्य का सबसे बड़ा संवैधानिक प्रमुख होता है तो उसके सम्बन्ध में ऐसे असंसदीय शब्दों का प्रयोग किया जाय जैसे कोई राज्यपाल महोदय ने अपराध किया है। श्रीमन्, नेता प्रतिपक्ष ने यह भी कहा कि हमने साढ़े 5 वर्षों तक सरकार चलाई है, विधानसभा साढ़े पांच वर्षों तक कैसे चली है। मैं जानता हूं कि नेता प्रतिपक्ष भारत की संसद में रह चुके हैं, पुराने राजनीतिज्ञ हैं, संविधान के प्राविधानों की भी उनको जानकारी होगी। क्या जो सरकार चली है साढ़े पांच वर्षों तक वह संविधान की मंशा के प्रतिकूल चली है, सरकार चली है तो संविधान की मंशा के अनुरूप चली है। अब आप यह कल्पना कर लीजिए कि चौदहवीं विधान सभा के जैसे परिणाम आये हैं, किसी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं प्राप्त हुआ है। अगर उस समय चुनाव करा दिये गये होते, तो कैसी स्थिति पैदा होती ? क्या प्रतिपक्ष को इस बात की जानकारी नहीं है। जब कभी भी आम चुनाव होते हैं तो सैकड़ों करोड़, जहां तक मुझे जानकारी है 4500 करोड़ खर्च होता है उत्तर प्रदेश के चुनाव में सरकारी और गैर सरकारी।

(प्रतिपक्ष के कुछ सदस्यों के एक साथ बोलने पर कुछ व्यवधान)

मैं प्रतिपक्ष पर कोई आरोप नहीं लगाना चाहता हूं। मैं जानता हूं, हमारे प्रतिपक्ष में बैठे हुए लोग उंगली उठाकर नहीं कह सकते कि भ्रष्टाचार के मामले में राजनाथ सिंह के दामन के ऊपर कोई दाग लगा है। यदि आपको ऐसा कुछ मालूम हुआ हो तो मैं सिर झुकाकर कहता हूं, आप अपने स्थान पर खड़े होकर उसे कहिए, मैं बैठ जाऊंगा।

(कुछ सदस्यों के टीका-टिप्पणी करने पर)

श्री अध्यक्ष–

कृपया शान्त रहें। हमारे जो नए सदस्य आए हैं उन्हें भी कुछ सीखने का मौका दें।

श्री राजनाथ सिंह–

मान्यवर, हम तो विपक्ष में ही बैठना चाहते थे, लेकिन आप लोग मिले नहीं। क्या श्रीमन्, प्रतिपक्ष यही चाहता है, एक बार इसी सदन में जैसा खून-खराबा हुआ, जैसी शर्मनाक स्थिति पैदा हुई उससे सारे प्रदेशवासियों का मस्तक सारे देश में ही नहीं, सारी दुनिया के सामने झुक गया। मुझे स्मरण है, एक बार ऐसा भी खून-खराबा हुआ है जब आपके सिर से भी खून बहते हुए मैंने देखा है। क्या श्री राज्यपाल की यही जिम्मेदारी बनती थी कि वे ऐसी ही स्थिति पैदा कर दें और फिर से खुन-खराबा हो ? क्या प्रतिपक्ष चाहता है कि वैसी ही स्थिति पैदा हो ? लेकिन मैं जानता हूं और जो इस बार का प्रतिपक्ष है वह निश्चित रूप से प्रतिपक्ष की भूमिका का निर्वाह करेगा। श्रीमन्, बहुजन समाज पार्टी, भारतीय जनता पार्टी और सहयोगी दलों के गठबन्धन से सरकार बनी है। यह बात सच है कि सरकार बनाना हमारी राजनीतिक विवशता थी लेकिन उस राजनीतिक विवशता को हमने स्वीकार किया और दलगत लाभ-हानि से ऊपर उठकर इसे स्वीकार किया और यदि स्वीकार किया है तो हम उसे चलायेंगे। सिर्फ एक-दो साल नहीं, इसे पांच साल तक चलायेंगे। लेकिन मैं इस सदन का ध्यान कुछ ऐतिहासिक तथ्यों की ओर भी आकर्षित करना चाहता हूं। श्रीमन् 20वीं शताब्दी के इतिहास से हमारे अधिकांश सदस्य परिचित हैं। बीसवीं शताब्दी में दो चेतनाओं का उदय हुआ है। एक चेतना दलित चेतना थी और दूसरी चेतना थी राष्ट्रवादी चेतना। दलित चेतना के नायकों के रूप में चाहे वह श्री पेरियार, अन्नादुरई या अम्बेडकर जी रहे हों या बाबू जगजीवन राम और उसके बाद कांशीराम जी का नाम ले सकते हैं। गांधी जी को मैं भूल ही नहीं सकता हूं। गांधी जी के सिद्धांतों की हत्या कर दी जाए यह भारतीय जनता पार्टी के द्वारा कभी नहीं होगा और राष्ट्रवादी चेतना के पीछे श्री सावरकर, मालवीय जी, दीनदयाल उपाध्याय और राममनोहर लोहिया जी को जोड़ना चाहता हूं। इन दो चेतनाओं का एक ही साथ उदय हुआ था और यह सच्चाई है कि आधुनिक भारत के निर्माण में इन सब की अहम भूमिका रही है। यह सच्चाई बन चुकी है और इस यथार्थ को नकारा नहीं जा सकता है। आज यदि हमने बहुजन समाज पार्टी के साथ मिलकर सरकार बनायी है तो ऐसा नहीं है कि हमने-अपने दर्शन से हटकर, सिद्धान्त से हटकर नीतियों से हटकर सरकार बनायी है। दलित चेतना के कुछ सिद्धान्तों पर हमारा मतभेद हो सकता है लेकिन मूल चिन्तन से हमारा कभी भी मतभेद नहीं रहा। पंडित दीन दयाल उपाध्याय की अन्त्योदय अवधारणा से मैं भली-भांति परिचित हूं। उनका मानना था कि समाज के दलित वर्ग का उत्थान होना चाहिए। इसी मूल

चिन्तन के आधार पर हमने बहुजन समाज पार्टी को समर्थन दिया । महात्मा गांधी जी का भी कहना था कि जिस दिन किसी दलित के हाथों में शासन की बागडोर आ जाएगी उस दिन में मानूंगा कि भारत की आजादी या स्वतंत्रता सार्थक हो गई और भारतीय जनता पार्टी की सोच का आधार भी यही है । भारत के राष्ट्रपति श्री के० आर० नारायणन जो दलित वर्ग से आते हैं क्या उन्हें भारतीय जनता पार्टी ने समर्थन नहीं दिया । क्या यह सच नहीं है कि लोक सभा में जब स्पीकर का चुनाव था उस समय भी हमारी नजर जाकर इसी पर टिकी थी, जो किसी दलित वर्ग के राजनेता पर ही जाकर टिकी थी । उन्हें हम लोगों ने लोकसभा का स्पीकर बनाया था और इसी तरह से उत्तर प्रदेश में भी । कांग्रेस अथवा समाजवादी पार्टी किसी ने नहीं । बार-बार चूक खाने के बावजूद तीन-तीन बार इस प्रदेश का मुख्य मंत्री किसी दलित को नहीं बल्कि दलित महिला को मुख्य मंत्री बनाने का श्रेय भारतीय जनता पार्टी को ही गया है । श्रीमन् मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी यदि राज करती है तो केवल सरकार बनाने के लिये ही नहीं करती है । हम राजनीति करते हैं तो समाज बनाने के लिये, देश बनाने के लिये राजनीति करते हैं ।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

कृपया शोर न करें और शान्त बैठें ।

श्री राजनाथ सिंह–

मान्यवर, इसी भारतीय जनता पार्टी, सहयोगी दलों का बहुजन समाज पार्टी के साथ गठबन्धन हुआ है । मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि श्रीमन्, बातें तो अभी भविष्य के गर्भ में छिपी हैं, लेकिन सचमुच भावी समाज के निर्माण में भारतीय जनता पार्टी और बहुजन समाज पार्टी का गठबन्धन मील का पत्थर साबित होगा । हम एक ऐसे सशक्त भारत का निर्माण करना चाहते हैं जो 21वीं सदी में दुनिया का प्रतिनिधित्व कर सके । मान्यवर, 19वीं शताब्दी में भी दो विचार धारायें और दो चिन्तन सामने आये थे । एक तो ज्योतिबा फूले जी का सत्यशोधक समाज और दयानन्द सरस्वती जी का आर्य समाज । शायद 1852 और 1853 के लगभग ये दोनों विचार धाराएं सामने उभर कर आयीं थी और उस समय आयीं थी जब राष्ट्रीय चिन्तन की नींव भारत में पड़ी थी । लेकिन महात्मा गांधी जी इस यथार्थ को समझते थे कि जब तक इन दोनों का समन्वय नहीं होगा, जब तक इन दोनों धाराओं के बीच ताल-मेल नहीं बैठेगा तब तक हम जैसे भावी भारत का निर्माण करना चाहते हैं नहीं कर सकते । इसीलिये वह जिन दलित बस्तियों में जाकर रुकते थे, वहीं पर गांधी जी राम-राज स्थापित करने का प्रयास करते थे । दोनों विचारधाराओं का समन्वय बिठाने की महात्मा गांधी ने कोशिश की है । सचमुच उस महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने की दिशा में ही यह बहुजन समाज पार्टी और भारतीय जनता पार्टी का गठबन्धन हुआ है । इसलिये मैंने कहा कि यह भावी भारत के निर्माण में मील का पत्थर साबित होगा । श्रीमन्, एक बात मेरी समझ में नहीं आती है कि क्यों बहुजन समाज पार्टी के मुस्लिम विधायकों को कोसा जा रहा है, जैसे लगता है कि भारतीय जनता पार्टी के साथ बहुजन समाज पार्टी ने गठबन्धन कर लिया तो कोई बहुत बड़ा अपराध कर लिया है । फतवे जारी किये जा रहे हैं कि उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाये । कौन सा अपराध कर दिया है इन मुस्लिम विधायकों ने ? भारत एक पंथ निरपेक्ष राष्ट्र है । भले ही मजहबी आधार पर

भारत और पाकिस्तान का विभाजन हुआ है । विभाजन के बाद पाकिस्तान ने अपने को मजहबी राष्ट्र घोषित किया जबकि भारत ने अपने को पंथ निरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया । भारत के स्वभाव को हमको पहचानने की आवश्यकता है । क्या भारत में फतवे जारी किये जायेंगे ? इण्डियन मुस्लिम फोरम ने भी फतवा जारी कर दिया कि इनका सामाजिक बहिष्कार किया जाये । क्या मोहम्मद आजम खां साहब आप और हम मिलकर इस सोच को नहीं बदल सकते ?

भारतीय समाज की जीवन धारा को एक नहीं, दो नहीं, तीन-चार स्तरों से हम अपने-अपने तरीकों से एक नई दिशा नहीं दे सकते । यहां पर हिन्दू और मुसलमान की बात की जाती है । मैंने भी उत्तर प्रदेश में सरकार चलायी है, उत्तर प्रदेश इस बात का गवाह है कि कानपुर में जहां दंगाइयों ने सिर उठाने की कोशिश की, उनमें किसी के साथ भेदभाव नहीं किया । फिर भी हम फासिस्ट हो गये, साम्प्रदायिक हो गये, कहने के पहले इंसाफ की तराजू पर तौल तो लिया होता । इस भारत को पहिचानिये । भारत दुनिया का अकेला देश है, सारी दुनिया के जो 6 प्रमुख धर्म हैं उन 6 प्रमुख धर्म के मानने वाले, धार्मावलम्बी अगर किसी एक देश में रहते हैं तो वह भारत में रहते हैं और वह आदर के साथ, स्वाभिमान के साथ जिन्दगी जीते हैं । क्या भारत के सेकुलर करेक्टर को जब राजनीतिक स्वार्थ साधना होता हैं तो भूल जाते हैं । भारतीय जनता पार्टी भारत के पंथनिरपेक्ष चरित्र को कभी भूल नहीं सकती । आप तो समाजवादी पार्टी के सम्मानित विधायक हैं, नेता हैं । आपने बाबरी मस्जिद, बाबरी मस्जिद की रट लगा रखी है । मैं ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा, स्थिति साफ हो चुकी है । नेता सदन ने स्पष्ट कर दिया है, इस पर मैं कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता हूं । बाबर के संबंध में तो डा० राम मनोहर लोहिया ने भी कहा था कि वह आक्रमणकारी थे । यदि इसका खण्डन करना चाहते हों तो खण्डन कीजिये । मैं इस सदन में यह कहना चाहता हूं कि जहां पर पूजा होती है, इबादत होती है उस स्थान पर यदि कोई हमला करने की कोशिश करेगा, क्षति पहुंचाने की कोशिश करेगा, तो सबसे पहले सीने का बटन खोलकर बचाने के लिये आगे आयेगी तो भारतीय जनता पार्टी आयेगी । हम जाति और मजहब की राजनीति करने पर विश्वास नहीं करते । हम राजनीति करते हैं तो इंसाफ और इंसानियत की करते हैं । मुझे श्रीमन्, अब तो यह लगने लगा है कि इस हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमान की समस्या को राष्ट्र की समस्या के रूप में नहीं देखते हैं । अब इसे राजनीति की समस्या के रूप में देखा जाता है । लोगों के जज्बात को उभाड़ कर, भावनाओं को भड़का कर कैसे सत्ता हासिल की जाय और सरकार बनायी जा सकती है यह एक रूप में देख रहा हूं । सच बात तो यह है कि यदि दृढ़ इच्छा शक्ति होती तो जिस समय इंडियन इस्लामिक फोरम और मिल्ली काउंसिल ने फतवा जारी किया था भारतीय जनता पार्टी के विरोध में कुछ राजनीतिक पार्टियों के पक्ष में तो आपने उसकी भर्त्सना किया होता उसका खण्डन किया होता । लेकिन उस समय आपने अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय नहीं दिया । चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे ईसाई हो, अगर इन सारे मजहबों को राजनीति से जोड़ा जायेगा तो क्या उसकी भर्त्सना नहीं की जा सकती है । सिमी जैसे संगठन, उसकी जो गतिविधियां हैं क्या हम उसको कंडम नहीं कर सकते, उसकी भर्त्सना नहीं कर सकते । जम्मू काश्मीर क्या भारत का हिस्सा नहीं है, क्या वह पाकिस्तान का हिस्सा है । क्या सिमी के रवैय्ये की भर्त्सना नहीं कर सकते । मुझे तो ऐसा लगता है कि हमारी आत्मा मर चुकी है । भारत माता की कोख से जो पैदा हुआ है, वह सब भाई-भाई हैं ।

एक आवाज–

आजम खां नहीं हैं ।

श्री राजनाथ सिंह–

हमारा जो अतीत हैं, भारत के अन्दर रहने वाले ही नहीं बल्कि सारी वसुधा, सारे विश्व की धरती पर रहने वाले सब एक परिवार के सदस्य हैं, एक कुटुम्ब के हैं । इसलिये "वसुधैव कुटुम्बकम" का उद्घोष हमारे ऋषियों, मनीषियों ने किया है । लेकिन आज यह क्यों नहीं किया जा रहा है ? मैं आह्वान करना चाहता हूं पक्ष और विपक्ष के सब लोग आयें और साथ मिलकर एक मिसाल कायम करें यदि किसी के मन में कोई शंका है, किसी प्रकार की कटुता है तो हम सब मिलकर उसको दूर करें । जब जब 6 दिसम्बर आता है तो भारत संसद में खड़े होकर अयोध्या का मुद्दा उछालने की कोशिश की जायेगी, क्या यह मुद्दा उछालना एक समुदाय विशेष के जख्मों को कुरेदना नहीं है । मैं याद दिला दूं, 1984 में सिक्ख समुदाय के साथ क्या हुआ ?

एक आवाज–

आपने करवाया था ।

श्री राजनाथ सिंह–

ऐसा अपराध भारतीय जनता पार्टी नहीं कर सकती है । श्रीमन्, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जख्मों पर मरहम लगाना चाहिये, जख्मों को कुरेदना नहीं चाहिये ।

श्री अम्बिका चौधरी–

जख्म देने भी नहीं चाहिये ।

श्री राजनाथ सिंह–

श्रीमन्, हमारे समाजवादी पार्टी के मित्रगण पता नहीं क्यों उनकी आदत है कि जहां जख्म हो गया उसको बराबर कुरेदने की । आज यह समय की आवश्यकता थी कि बहुजन समाज पार्टी और भारतीय जनता पार्टी की सरकार का गठन हो । जहां तक नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि किसानों, गरीबों, नौजवानों की चर्चा नेता सदन ने नहीं किया तो मैं कहना चाहता हूं कि वैसे भी हम बहुत ज्यादा कहने में विश्वास नहीं करते हैं, करने में विश्वास करते हैं । आज जिस विश्वास मत के प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है उससे हटकर बोलने की भी आवश्यकता नहीं है । आज इसके औचित्य व अनौचित्य पर बोलना चाहिये था । यह भारतीय जनता पार्टी व सहयोगी दलों के साथ जो बहुजन समाज पार्टी का गठबन्धन हुआ है । यह कहां तक औचित्यपूर्ण है और कहां तक अनौचित्यपूर्ण है, इस पर बोलना चाहिये था । सम्भवतः इसीलिये नेता सदन ने अन्य किसी मुद्दों को स्पर्श करने की कोशिश नहीं की । हम लोगों ने भी सरकार चलाई है । यह हमारी सोच है कि अति पिछड़ों व अति दलितों को न्याय मिलना चाहिये इसके पहले ऐसा किसी ने नहीं सोचा । समाजवादी पार्टी की भी हुकुमत रही है किसानों के गन्ने खेत में ही जलाने पड़े हैं लेकिन हम लोगों के कार्यकाल में किसी को गन्ना खेत में नहीं जलाना पड़ा । समाजवादी पार्टी के कार्यकाल में गेहूं की खरीद औने पौने दाम पर हुई । धान के किसानों को उनका उचित मूल्य मिल जाए इसकी समाजवादी पार्टी ने कभी चिन्ता नहीं की । यह चिन्ता भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने की । चुनाव के दौरान हम समाजवादी पार्टी के लोगों से पूछते रहे क्योंकि इन्होंने चुनाव के दौरान यह बात कही थी

कि हमारी सरकार आई तो हम नौजवानों को बेरोजगारी का भत्ता देंगे मैं पूछता रहा कि क्या समाजवादी पार्टी बेरोजगार नौजवानों को बक्शीश देकर उनकी नीयत और ईमान खरीदना चाहती है । इन्होंने यह क्यों नहीं कहा कि हमारी सरकार अगर प्रदेश में बन जाएगी तो एक भी नौजवान शेष नहीं बचेगा जिस नौजवान के अन्दर काम करने की योग्यता है, क्षमता है, प्रतिभा है जो काम करने की इच्छा रखता है सारे नौजवानों को काम करने का अवसर मुहैया कराया जाएगा यह बात इन्होंने सोची नहीं । आज कह रहे हैं कि बेरोजगार नौजवानों की चिन्ता नहीं कर रहे हैं । बेरोजगारी दूर करने के लिये भी यह सरकार प्रभावी कदम उठाएगी । यह मिली जुली सरकार है । हम सारी बातों को स्पर्श करेंगे । सारी समस्याओं के समाधान करने की कोशिश करेंगे । नेता प्रतिपक्ष मुस्करा रहे हैं । इससे मुझे शुभ संकेत मिल रहा है ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

आपकी लाचारी पर दुःख हो रहा है ।

***श्री राजनाथ सिंह–**

नेता प्रतिपक्ष की मुस्कराहट से ऐसा लगता है कि या तो वह सरकार का समर्थन करेंगे या सदन से वाक आउट कर देंगे । आज के अवसर पर इससे ज्यादा न कहते हुए नेता सदन सुश्री मायावती जी ने जो विश्वास मत का प्रस्ताव पेश किया है उसका मैं समर्थन करता हूं । नेता प्रतिपक्ष से विनम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहता हूं कि यह समय की मांग थी समय का तकाजा था ऐतिहासिक तथ्यों को ध्यान में रखते हुए फैसला किया गया है । एक नये भारत के निर्माण के लिये फैसला किया गया है, सशक्त भारत के निर्माण के लिये फैसला किया गया है जो सारी दुनियां का नेतृत्व कर सके । इसलिये अभूतपूर्व व ऐतिहासिक यह गठबन्धन हुआ है । इसे प्रतिपक्ष का भी समर्थन प्राप्त हो यह अपेक्षा करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

विश्वास मत के पक्ष और विपक्ष में मेरे पास जो माननीय सदस्यों के नाम आये हैं, जो विचार व्यक्त करना चाहते हैं उनकी संख्या लगभग 30 है । स्वाभाविक है कि समय का विनियमन करना पड़ेगा । मैं कुछ प्रमुख विपक्षी दल के नेताओं से अनुरोध करूंगा कि कृपया 10-15 मिनट तक सीमित रहते हुए अपने विचार व्यक्त करें और शेष सदस्यों से कहूंगा कि अंग्रेजी की एक कहावत है कि संक्षिप्त बोलना ही बुद्धिमानी का परिचय देना है । इसलिये वे कृपया 5 मिनट में अपनी बात कह सकेंगे तो अच्छा है । मैं सबसे पहले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता प्रमोद कुमार जी को बुला रहा हूं ।

*** श्री प्रमोद कुमार–**

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं वह गलती नहीं करूंगा जो नेता भारतीय जनता पार्टी ने करी है । मैं नेता सदन द्वारा रखे गये विश्वास के प्रस्ताव के विपक्ष में, इसके विरोध में अपने विचार प्रकट करने के लिये खड़ा हुआ हूं । (सत्ता पक्ष से कुछ कहने पर) बाद में तो आप बहुत कुछ करेंगे, हम उसका इन्तजार करेंगे ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

(इस समय 12 बजकर 56 मिनट पर अधिष्ठाता डा० लक्ष्मीकान्त बाजपेयी पीठासीन हुए ।)

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं अपनी बात की शुरूआत अपने बड़े भाई, मित्र की बात ही से करता हूं । दिल की बात निकल ही आती है । बड़े संयमित होकर बोल रहे थे लेकिन बात बोल गये । आपने कहा कि हमने समर्थन किया । दो बार चूक जाने के बाद भी समर्थन करेंगे । मान्यवर, आपने कहा था, कार्यवाही निकलवाकर देख लीजिये । मायावती जी, जो दो बार चूक कर सकते हैं वह तीसरी बार कब चूक करेंगे इसकी तारीख इनसे पूछ लीजियेगा । मैं तो केवल इतना कह रहा हूं कि इन्होंने यह बात जो कही है दिमाग से नहीं दिल से कही है । हम सब तारीफ करेंगे कि इन्होंने अपना जो भाषण दिया उसमें एक ही तो सही बात बोली और वह यही थी । मैं आपसे कहना चाहता हूं और आदरणीय भाई राजनाथ सिंह जी से सबक लेते हुये कहना चाहता हूं कि हमको यही तो कहना है कि इसका औचित्य क्या है और इसका औचित्य क्यों नहीं है । आज हम इनको बतायेंगे कि हम क्यों विरोध कर रहे हैं और यह बतायेंगे कि यह क्यों समर्थन कर रहे हैं । मैं पहला सवाल पूछ लेता हूं कि आप हमको बतायें कि दो बार आप लोगों ने साथ जीने और मरने की कसम खाई थी । आपने कहा था कि सारी दुनिया एक तरफ हो जाय हमारा साथ नहीं छूटेगा । आपने यह सौदा किया था । हालांकि यह सौदा दिल का सौदा है । राजनीति का नहीं था क्योंकि भारतीय जनता पार्टी राजनीति के लिये कोई सौदा नहीं करती । इस बन्धन को और मजबूत बनाने के लिये लालजी टण्डन ने अपने हाथ में राखी बंधवा दी । (व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

कृपया पीठ की तरफ संबोधित करें सत्ता पक्ष की तरफ नहीं । पीठ की ओर देखकर कहें ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, आपकी तरफ बराबर नजर लगी है, बराबर देख रहा हूं । आपको संबोधित किया जाता है देखा नहीं जाता है, आप इसको दिखवा लें ।

मान्यवर, आज उत्तर प्रदेश की जनता चाहती है आप सभी से । नेता, उपनेता, पूरी भारतीय जनता पार्टी से जानना चाहती है कि आपने कहा कि हमने अपने संस्कारों का परिचय दिया है एक दलित को मुख्य मंत्री बना दिया । मैं आपसे जानना चाहता हूं कि जिस दिन उनको कुर्सी से उतारा था, वह दलित नहीं थी ? दल में तोड़-फोड़ करके बहुमत साबित किया था, तब वह दलित नहीं थी ? दलित शब्द तब याद आता है जब कुर्सी दिखाई पड़ती है जब कुर्सी नहीं होती है तो दिखाई नहीं देता है ।

(व्यवधान)

मेरे बोलने पर व्यवधान उपस्थित न करें अगर बोलना है तो खड़े होकर बोलें ।

(व्यवधान)

मान्यवर, मैंने सवाल पूछा, मैं प्रतिपक्ष की तरफ से जबाब देना चाहता हूं हम इस विश्वास मत का विरोध इसलिए कर रहे हैं कि यह प्रदेश भारत का सबसे बड़ा प्रदेश है और आपने उत्तर प्रदेश की जनता के साथ विश्वासघात किया है । चुनाव हुए तो आप कहते थे कि जनता आपको वोट दे, जब आप बोलते थे तो ऐसा लगता था कि स्टंट फिल्म के हीरो हों आप कहते थे–"कोई माई का लाल सरकार नहीं बनाएगा, राजनाथ सरकार बनाएगा" क्या हुआ ? आपकी सरकार नहीं बनी ? मैं इतना जरूर कह देना

चाहता हूं क्या यह सच नहीं है ? आदरणीय नेता सदन, आपसे जानना चाहता हूं जब हम चुनाव के मैदान में गए तो बसपा पार्टी ने हमारी पार्टी के विरोध में मत मांगा, आपने पांच वर्ष के अपने कार्यकाल पर मत मांगा और जब मत मिला तो इनके कार्य कलापों के खिलाफ दिया गया मत जो आपको भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ मत मिला था उसको आप भूल गए । क्या आपने अपने सिद्धान्तों को, अपनी गैरत को नहीं बेचा ? जब आपने इस दल का समर्थन किया और इस दल से समर्थन लिया । (व्यवधान) मैं बताना चाहूंगा आपने दो नवम्बर, 1997 को कहा था कि भारतीय जनता पार्टी की मानसिकता डा० अम्बेदकर के प्रति प्रदूषित है जो प्रदूषित विचारधारा रखते हैं क्या उनके साथ कुर्सी के लिए समझौता करना डा० अम्बेदकर का अपमान नहीं है, लालजी टण्डन जी बैठे हैं इन्होंने आपके खिलाफ सी०बी०आई० की इन्क्वायरी बैठाई, कलराज मिश्र जी से कहा गया था कि श्री टण्डन अनर्गल बयानबाजी करके अपनी नैतिक जिम्मेदारी से बचने का प्रयास कर रहे हैं । यह प्रमोद कुमार नहीं कह रहे हैं "अनर्गल बयानबाजी" की गई कि मा० मंत्री उद्यान ने आकस्मिकता निधि की धनराशि में पोस्टमैन की भूमिका थी .....

(व्यवधान)

सी०बी०आई० की जांच इन्होंने बैठाल दी यह वह लोग हैं जो जरूरत पड़ने पर भाई बन जाते हैं और वह लोग हैं जो पीठ में छुरा भोंकते हैं और दल-बदल करके कहीं से कहीं ले जाते हैं । मैं सचेत कर रहा हूं आपने कहा था कि यह संगमरमर का पत्थर उखाड़कर ले गए ...

(व्यवधान)

जो आपने कहा था वह मैंने याद दिलाया । मैं भारतीय जनता पार्टी और बसपा को चुनौती देता हूं, इनके मंत्रियों को ललकारता हूं आप जवाब दीजिए यह कहा गया था कि यह तो ऐसी मुख्य मंत्री हैं जिन्होंने पहली बार मुसलमानों के लिए आरक्षण किया था । मैं चुनौती देता हूं आप मुख्य मंत्री हैं, हम लोग भी आपको समर्थन देंगे यदि आप मुसलमानों के लिए आरक्षण का प्रस्ताव लेकर आयें । क्या यह आपके द्वारा लाये गये इस प्रस्ताव का समर्थन देंगे । पूरा विपक्ष एक हो जायेगा यदि आप मुसलमानों के लिए अलग से आरक्षण का प्रस्ताव लेकर आयेंगे । यह आपने अभी कहा है ।

(इस समय 01 बजकर 05 मिनट हुए ।)

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

अभी श्री प्रमोद कुमार जी ने जो कुछ मुसलमानों के आरक्षण को लेकर कहा है वह बिल्कुल गलत कहा है । वह शायद मेरी बात को समझ नहीं पाये । मैं इसे स्पष्ट कर दूं ताकि वह गलतफहमी दूर हो जाय । मैंने यह कहा था कि 1995 में मेरे नेतृत्व में पहली बार जब बी०एस०पी० की सरकार बनी तो मैंने अपने उस मुख्य मंत्रित्वकाल में मुसलमानों में जो पिछड़े वर्ग के लोग थे उनको अलग से प्रमाण-पत्र जारी करके आरक्षण की व्यवस्था की थी । वह मैंने कहा था और जो श्री प्रमोद कुमार जी कह रहे हैं यह आग में घी डालने वाली बात है । यह जो समझौता हुआ है इसे किसी तरीके से तोड़ना है और यह मैं उनको बता दूं कि यह टूटने वाला नहीं है । उन्होंने यह भी कहा था कि एक दलित की बेटी को सत्ता से हटाया तो उस समय दलित समर्थन कहां चले गये थे, तो इनको अपने गिरेबान में खुद झांककर देखना चाहिए, जब 1996 में बहुजन समाज पार्टी और कांग्रेस पार्टी ने मिलकर चुनाव लड़ा था और केन्द्र में

राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार थी और कांग्रेस पार्टी उसे बाहर से समर्थन दे रही थी तो हमने यह कहा था कि हम केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार को बाहर रखने के लिए बाहर से समर्थन दे रहे हैं राष्ट्रीय मोर्चा पर दबाव डाले कि उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी, बहुजन समाज पार्टी की दलित की बेटी को बाहर से समर्थन दे लेकिन कांग्रेस पार्टी नहीं चाहती थी और कांग्रेस पार्टी ने सरकार पर दबाव नहीं बनाया। यदि उस समय दबाव बनाया गया होता तो मैं मुख्य मंत्री बनती। तभी हम लोगों ने उस समय कांग्रेस पार्टी से अलग होने का फैसला लिया था। तो यह गलतबयानी हो रही है इसलिये मैंने इसको स्पष्ट करना जरूरी समझा।

श्री प्रमोद कुमार–

मैं बहुत आभारी हूं आदरणीय नेता सदन का जो उन्होंने सही तथ्य रखा। मुसलमानों में जो दलित पिछड़े वर्ग के हैं उनके आरक्षण की बात है, मैं उसको सुधार लेता हूं कि जो मुसलमानों में दलित पिछड़े हैं उनके लिए ही अगर प्रस्ताव आ जाय तो हम उसका समर्थन करेंगे।

सुश्री मायावती–

वह तो हो चुका है। आपको कुछ पता नहीं है। हम लोग प्रमाण-पत्र जारी कर चुके हैं और उसका उनको लाभ भी मिल रहा है।

(व्यवधान)

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मैं 10 फरवरी के दैनिक जागरण की बात कर रहा हूं जिसमें लिखा था कि "भाजपा नम्बर एक की धोखेबाज पार्टी है"। मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूं। (व्यवधान), मान्यवर, अगर पुरानी बात अच्छी न लग रही हो, तो मैं एक ताजा बात करता हूं। माननीय मुख्य मंत्री जी ने 20 अक्टूबर, 2001 को कहा है कि राजनाथ जैसी धमकी तो गली मुहल्ले के दादा भी नहीं देते। मैं उनकी इस बात से अपने को सहमत करता हूं। मैं कहना चाहता हूं कि विश्वासमत के खिलाफ बोलने का औचित्य क्या है। अब आप बताइये कि गली मुहल्ले से नीचे कौन होता है ?

आवास, नगर विकास, पर्यटन, श्रम, पंचायतीराज, संस्थागत वित्त, दुग्ध विकास, पशुधन एवं वैकल्पिक ऊर्जा मंत्री (श्री लाल जी टण्डन)–

आप इसे अपने ऊपर क्यों ले रहे हैं ?

श्री प्रमोद कुमार–

अब आप बताइये कि गली-मुहल्ले के ऊपर कौन होता है ? मान्यवर, माननीय मुख्य मंत्री जी ने यह भी कहा था कि भाजपा साम्प्रदायिक और पीठ में छूरा घोंपने वाली पार्टी है, यह भ्रष्ट पार्टी है। मैं यह जानना चाहता हूं कि अब यह किस वजह से भ्रष्ट नहीं रही ? मैं यह भी जानना चाहता हूं कि किस गंगा में नहाकर यह साम्प्रदायिक नहीं रह गयी है ? क्या इन्होंने अपना खंजर दिल्ली में रख दिया है, तो अब यह आपकी पीठ में छूरा नहीं घोंपेगे। मैं यह कहना चाहता हूं कि सिर्फ टण्डन जी सुख भोग रहे हैं और हमारे साथी दुखी हैं कि कब उनका नम्बर लगेगा। लेकिन यह सच्चाई है कि भारतीय जनता पार्टी

ने केन्द्र में अपनी सरकार को बचाने के लिए उत्तर प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी को नीलाम पर चढ़ा दिया है। (व्यवधान)।

भारतीय जनता पार्टी के नेता राजनाथ सिंह जी ने कहा था सहारनपुर पर जहां से आप चुनाव लड़ रही थीं, कहीं और कह देते वहां नहीं कहना चाहिये था, यह कहा सहारनपुर में शक्ति पीठ मां शाकम्बरी देवी जी के दर्शन के बाद कहा था, सपा और बसपा अपराधियों का दल है। हम आपको कहते तो कोई बात नहीं थी हम तो उनके साथ जाने वाले नहीं हैं। राजनीति के लिये कुर्सी मिल जाय चाहे [×××] को मिल जाय, बस कुर्सी बनी रहे। आपने एक पत्र लिखा है राष्ट्रपति जी को, प्रधान मंत्री जी को।

श्री राजनाथ सिंह–

श्रीमन्, मेरे नाम का उल्लेख किया गया नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दल ने। श्रीमन्, यह कहा मैंने सहारनपुर में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी को अपराधी कहा है। शायद प्रमोद कुमार जी को मालूम होगा व्यक्तिगत लांछन और इस प्रकार का, भले ही अपराधी कुछ हों, लेकिन इस प्रकार का आरोप मैं नहीं लगा सकता। यदि किसी समाचार पत्र का उल्लेख किया गया, ऐसे तो आते रहते हैं, उसको आधार बनाकर कीचड़ उछालना नहीं चाहिये यह मैं विनम्र अनुरोध करना चाहता हूं।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ विशेषाधिकार हनन की सूचना देते हुए कहना चाहता हूं कि आपके हेलीकाप्टर पर दैनिक जागरण के श्री शिव शंकर गोस्वामी संवाददाता गये थे उनकी सूचना है अगर उन्होंने गलत लिखा है तो सदन को उनके खिलाफ कार्यवाही करनी चाहिये और अगर माननीय नेता भाजपा सदन को गुमराह कर रह हैं तो इनके खिलाफ कार्यवाही करनी चाहिये।

कृषि मंत्री (श्री हुकुम सिंह)–

मान्यवर, सदन की कुछ परम्परा रही है माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दल ने एक बात कही उसके स्पष्टीकरण के रूप में माननीय राजनाथ सिंह जी ने एक बात कही कि उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा है। तो परम्परा के अनुसार उनकी कही हुई बात को स्वीकार किया जाता है, आपने विशेषाधिकार और अवमानना की सूचना देने की बात कही है। मान्यवर, सदन की परम्पराओं को दृष्टिगत रखते हुए जो माननीय राजनाथ सिंह जी ने बात कही है उसको स्वीकार किया जाये और यह जो अनर्गल आरोप लगा रहे हैं उनको कार्यवाही से निकाला जाय।

श्री प्रमोद कुमार–

सदन के बाहर क्या-क्या एक दूसरे के लिए कहा गया है मैंने तो थोड़ी सी बानगी दी है, और अगर आप मुझे प्रेरित करेंगे और जिद करेंगे तो आपने भी कभी क्या कुछ कहा है वह भी कह देंगे।

श्री लाल जी टण्डन–

कहा है तो बताइये।

[×××] यह अंश मा० अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री प्रमोद कुमार–

इन्होंने इस सदन में कहा था, सदन की कार्यवाही में है। मंत्रि-परिषद् की सामूहिक जिम्मेदारी होती है और रामवीर उपाध्याय इस सरकार में ऊर्जा मंत्री है। उन्होंने कहा था कि [×××] मालूम है न आपकी। इसी सदन में बैठकर कहा था आप बताइये [×××] की श्रेणी में आता है कि नहीं। आपने जो सदन में कहा है वही मैंने बताया है।

श्री अधिष्ठाता–

यह सीधे-सीधे आक्षेप है।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मैं अपने आक्षेप पर बल देता हूं।

(व्यवधान)

श्री घनश्याम शुक्ल–

श्री प्रमोद जी इंगित करके कहते हैं।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मैं तो विनम्रता पूर्वक कहना चाहता हूं कि लगातार आपकी कृपा से सातवीं बार आया हूं, नियम-कानून मुझे मालूम हैं। सदन की कार्यवाही अगर उद्धृत की जाये तो वह आक्षेप नहीं होता है। अध्यक्ष महोदय के कमरे में हमने और इधर के लोगों ने ही जाकर आपको सुरक्षा दिलाई थी और अगर इसके बाद भी कोई चुनौती दी गयी तो मैं फिर वह एफीडेविट दे दूंगा जो दिया गया था।

श्री अधिष्ठाता–

कार्यवाही की तिथि बताने का कष्ट करेंगे, तारीख तो बताइये आप ?

श्री प्रमोद कुमार–

उसकी तिथि निकलवाकर देख लीजिए यह आपके अधिकार में है। माननीय अधिष्ठाता महोदय, [×××] तो मैं तो सिर्फ आपको कुछ पुरानी स्मृतियां याद दिला रहा था कि इन्होंने आपके बारे में क्या कहा, आपने इनके बारे में क्या कहा ? और अगर इसके बाद भी आप बने बैठे हैं तो यहां कौन शक कर रहा है कि 5 साल तक रहेंगे या नहीं। मैं इतना ही कहना चाहता हूं अधिष्ठाता महोदय, कि यह दो [×××] पार्टियों का संगम है। मैं मुस्लिम कानून के बारे में बताना चाहता हूं। यहां पर मुस्लिम सदस्य कुछ है जिन्हें कानून मालूम है। मान्यवर, शादी जब होती है, निकाह जब होता है, तो उसके बाद तलाक होता है। हम दो बार उनका तलाक देख चुके है, तीसरी बार यह जो निकाह हुआ है वह गैर कानूनी है। मुस्लिम राय यह है कि निकाह के बाद तलाक दिया जाये तो उसी पक्ष से शादी नहीं की जा सकती

[×××] यह अंश मा० अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

जब तक पक्ष से हलाल न दिया तो उसी पक्ष से शादी नहीं की जा सकती जब तक उस पक्ष से हलाल न दिया जाये ।

(व्यवधान)

श्री लाल जी टण्डन–

यह सदन केवल विपक्ष की आवाज के ऊपर चले यह कोई बात नहीं है, हर एक सदस्य को अपनी बात कहने का अधिकार है । अब यह आज्ञा देंगे कि हम खड़े हों और कोई बात कहें या न कहें ।

(विपक्ष की ओर से बैठो–बैठो की आवाजें)

नहीं बैठूंगा ।

मान्यवर, अखबार की कटिंग को बाहर से मंगा मंगाकर सदन में पेश किया जा रहा है, इस तरह की बात कही जा रही है । कोई भी सामग्री बाहर से बहस के वक्त मंगाकर नहीं पढ़ी जा सकती है इस पर आप अपनी व्यवस्था दें । अगर ऐसा है तो अभी हम पुलिन्दा मंगा कर दे देंगे कि किसने क्या कहा है ?

(माननीय नेता राष्ट्रीय लोकदल का नाम पुकारे जाने पर)

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मैंने अभी समाप्त नहीं किया है ।

सार्वजनिक उद्यम मंत्री (श्री लाल जी वर्मा)–

मान्यवर, कितना समय प्रमोद कुमार लेंगे वह आप निर्धारित कर दें ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, 13 जुलाई, 1998 को स्वामी प्रसाद मौर्य जी ने इस सदन की कार्यवाही में कहा है कि भारतीय जनता पार्टी [×××] मान्यवर, हम तो अभी तलाक तक आये थे, लाल जी टण्डन जी नाराज हो गये अभी तो तलाक के बाद इद्दत का वक्त भी बाकी है उसको भी आपको देखना पड़ेगा, उसको भी नहीं रोक रहे हैं । यह बसपा भाजपा गठबन्धन जनादेश के खिलाफ है । पूरी तरह से 5-10 नेता है जिनको जनता ने नकार दिया है । यह भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं के खिलाफ जनता की इच्छा के खिलाफ बना हुआ है इसलिये इसका विरोध करता हूं बहुत बहुत धन्यवाद । केवल विधायकों की इच्छा के खिलाफ ही नहीं हमारे पूर्व साथी हैं आदरणीय राजनाथ सिंह जी की इच्छा के खिलाफ भी यह है ।

* ग्रामीण अभियन्त्रण सेवा मंत्री (श्री कौकब हमीद खां)–

मान्यवर, जो नेता विपक्ष का मैंने भाषण सुना बुरा नहीं लगा बल्कि दुख हुआ, किसानों की बात क्यों नहीं कही, यूथ की बात क्यों नहीं, बेरोजगारों की बात क्यों नहीं हुई यह नहीं इन्हें चिन्ता यह है कि 145 आते हुए भी हमारी सरकार क्यों नहीं बनी । 145 आने के बाद अगर कांग्रेस पार्टी इन्हें अछूत

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

समझती है तो इसमें मान्यवर, हमारा क्या कसूर है । वह न समर्थन देने को तैयार और लाख कोशिश करने के बाद आलाकमान ने मना कर दिया उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी से कोई ताल्लुक नहीं होगा । एक बार तालुकात किया तो कम हो गये, अगली बार तो टोटल खत्म हो जावेंगे तो इसमें कसूर जनता का क्या है ?

मान्यवर, एक बात विपक्ष से आई है कि जो अपने को मुसलमान कहते हैं तो मान्यवर, जो "ला इलाही ई लल्ला, मोहम्मद दु रसूल अल्ला" कहते हैं, क्या वही मुसलमान होते हैं ? आपको यह कहने का अधिकार नहीं है, आपको किसने अलम्बरदार बनाया कि आप यह तय करें कि कौन मुसलमान है और कौन मुसलमान नहीं है । 1992 में जब बाबरी मस्जिद शहीद हुई उसके बाद जिन लोगों ने उसकी शहादत करायी, जिन लोगों ने उसे तोड़ा, किस महाराज के साथ आपने समझौता किया था ? यह तो बतायें ? यह नहीं माना जायेगा कि "आपका इश्क-इश्क है और हमारा इश्क, चक्कर है" । मान्यवर, यही क्यों, यह सदन गवाह है, 13वीं विधान सभा में बहुत से लोगों ने छाती ठोंककर कहा था कि मैंने बाबरी मस्जिद तुड़वा दी, उससे समझौता कौन कर रहा है ? उससे भी तो समझौता आप ही कर रहे हैं । मुसलमान मैं हूं और मुसलमान ने वोट हमें दिया है । आपका यह कहना कि हमने मुसलमानों का विश्वास तोड़ा है । आप अपने दामन में झांक कर देखिए क्या आप ऐसे ही मुसलमानों की लाशों पर राजनीति करते रहेंगे, उनके बच्चे नंग-भूखे रहेंगे और वह ठेली चलाता रहेगा । यही आपकी राजनीति है । मेरठ का काण्ड हुआ, मलियाना काण्ड की रिपोर्ट भी आई थी । जब आप सरकार में थे उसे निकलवाकर क्यों कार्यवाही नहीं की ? मान्यवर, यह सरकार बनी है और यह पूरे पांच साल चलेगी । मान्यवर, यह भी सही है कि इस सरकार को बनाने में मुसलमानों का बहुत योगदान है । अब आपकी ठेकेदारी मुसलमानों पर चलने नहीं दी जायेगी, हरित प्रदेश के बहुत से नारे लग रहे हैं, इसी विधान सभा में उसका भी प्रस्ताव पास होगा ।

श्री अतीक अहमद–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया और ऐसे अवसर पर जब इस 14वीं विधान सभा में माननीया नेता सदन को आज विश्वास मत हासिल करना है और इस 14वीं विधान सभा में जहां करोड़ों गरीब, पिछड़े, दलित की उम्मीदें लगी हैं । वह सोचता है कि हमने अपना नेतृत्व दिया है और इस सदन के अन्दर उनके हित की कोई चर्चा होगी ।

आज इस बात का बड़ा दुख है कि आज इस 14वीं विधान सभा में स्थिति यह हो गई है कि नेता सदन ने भी अपने विश्वास मत के समय मन्दिर, मस्जिद, जात-पात, अच्छे और खराब माहौल का हवाला दे दिया तो मैं यह समझता हूं कि विपक्ष में बैठे हुए लोगों की भी मजबूरी में अपना रास्ता बदलना पड़ेगा । मैं पार्टी समेत सदन में आया हूं । हमें दुख होता है कि वैरीकेटिंग कर दी गई है । माननीय सदस्यों को वह अधिकार तो मिलना ही चाहिए जिससे वह अपनी बात बेहतर ढंग से कह सकें । जहां तक विश्वासमत हासिल करने के लिए समर्थन में बोलने, विपक्ष में बोलने की बात है, हम बड़ा सम्मान देते हुये नेता सदन से कहेंगे कि यह समझौता तो ऐसा है कि आपको बड़ी दिक्कतें सदन में रोज आयेंगी । प्रमोद कुमार जी अखबार को पढ़ कर अपनी बात कह रहे हैं तो माननीय लालजी टण्डन ने विरोध करना शुरू कर दिया । यह सही है कि सदन अखबार का संज्ञान नहीं लेता लेकिन जब उन्होंने कार्यवाही पढ़ना शुरू कर दिया था तो वह किस तरह से इंकार कर पायेंगे । इसी सदन के अन्दर मैं, उस नेता सदन से

कहना चाहूंगा कि यह सफाई देंगे कि इसी लाबी में बैठकर कौन रो रहा था और कौन आंसू बहा रहा था।

सुश्री मायावती–

जी यह बिल्कुल असत्य बोल रहे हैं, ऐसा कभी नहीं हुआ। बल्कि आप जैसे लोगों की आंखों में आंसू तो अब मैं देखूंगी।

श्री अतीक अहमद–

मान्यवर, मैं उस बात पर बल नहीं दे रहा हूं। लेकिन इतनी गड़बड़ हो चुका है कि कोई सफाई देने की जरूरत नहीं है। हम अपने बड़े भाई राजनाथ सिंह से भी कहेंगे और माननीय नेता सदन से भी कहेंगे कि उस पर न जाएं। यह मौकापरस्ती है, जरूरत नहीं है। आप मुख्य मंत्री रह चुके हैं आपने कहा दोबारा चुनाव कराने में ज्यादा खर्च होता है। मैं कहना चाहूंगा कि सारा सदन इस बात पर एक साथ हो जाय कि अगर देश की तरक्की चाहिए तो इस देश के अन्दर दोबारा-तिबारा चुनाव कराने चाहिए तब तक कराते रहना चाहिए जब तक स्पष्ट जनादेश न मिल जाय। माननीय अधिष्ठाता महोदय यहां बात कही गई और सत्ता पक्ष की तरफ से कही गई यहां पर चर्चा इस बात पर हो रही है कि इस गठबन्धन का औचित्य क्या है ? मैं यह कह रहा हूं कि इसका औचित्य नहीं है। औचित्य यही है कि मैदान में दोबारा जनादेश ले लिया जाय और जब तक एक पार्टी को जनादेश नहीं मिलेगा इस देश का भला नहीं होने वाला है। माननीय अधिष्ठाता महोदय, आजादी के 54 साल के बाद आज भी इस बात का बड़ा दुख है कि आज लोगों को फिर गुमराह किया जा रहा है। सत्ता के लालच में इस तरह की सौदेबाजी की जा रही है और 14वीं विधान सभा के अन्दर आम लोगों की जिन्दगी बदतर होती चली जा रही है। हमारे बड़े भाई आजम खां ने भी कहा था कि हमारी मस्जिद, लेकिन मैं इसमें थोड़ा सुधार करूंगा कि मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा किसी एक समुदाय के नहीं होते हैं, यह सारे समुदाय के लिए होते हैं। इसका बंटवारा नहीं होना चाहिए। इसलिए माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं आपसे कहना चाहूंगा कि यह अवसरवादी है, सत्ता के लिए किया गया गठबन्धन है। इतिहास गवाह है फासिस्ट हमेशा पावर से आता है, बिना पावर के वह बुजदिल होता है। यह उत्तर प्रदेश का दुर्भाग्य है कि इस तरह का गठबन्धन हुआ है। आज आप विश्वास मत प्राप्त कर रही हैं, मुझे खुशी है। आपने अच्छा चलाया है, आप इस चर्चा के चक्कर में मत पड़ें। मैं स्पष्ट कहना चाहता हूं कि जरूरत नहीं, लालच में बनाया हुआ गठबन्धन है और इसके नतीजे अच्छे नहीं होंगे, हम ऐसा मानते हैं। इसलिए नेता सदन जी, अच्छा होगा कि चलकर नया जनादेश लिया जाय। इसी के साथ हम इस प्रस्ताव का विरोध करते हैं।

मंत्रि-परिषद् में विश्वास के प्रस्ताव पर पक्ष एवं विपक्ष के मा० सदस्यों की अपनी बात रखे जाने के संबंध में व्यवस्था का प्रश्न

(नेता कम्युनिस्ट पार्टी आफ इण्डिया मार्क्सवादी का नाम पुकारे जाने पर)

सार्वजनिक उद्यम मंत्री (श्री लालजी वर्मा)–

माननीय अधिष्ठाता जी, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। ऐसे प्रस्ताव पर पक्ष और विपक्ष के माननीय सदस्य अपनी बात रखते हैं।

श्री अधिष्ठाता–

एक बार सारे दलीय नेता विचार रख लें उसके बाद पक्ष-विपक्ष के माननीय सदस्य विचार रखेंगे।

मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव (क्रमागत)

* श्री राम स्वरूप सिंह–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, नेता सदन ने जो विश्वास मत का प्रस्ताव पेश किया है उसका विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं यह जानना चाहता हूं कि माननीय नेता सदन ने अपने विश्वास प्रस्ताव में यह नहीं बताया कि किन-किन दलों से, किस प्रोग्राम के अनुसार समझौता हुआ है और किस प्रोग्राम पर 5 साल तक सरकार चलायेंगे न तो किसी अखबार में पढ़ने नेता सदन का कोई बयान पढ़ा, न श्री राज्यपाल के अभिभाषण में जिक्र हुआ तो यह कैसा समझौता है ? किस मजबूरी का समझौता है ? दो बार समझौता हुआ है, एक बार 4 महीने में ही नीचे से कुर्सी खींच ली, उसके बाद फिर दूसरी बार 6-6 महीने का समझौता किया, 6 महीने के बाद जब भारतीय जनता पार्टी का नम्बर आया तो एक महीने के अन्दर ही समर्थन वापस ले लिया उसके बाद तोड़-फोड़ हुई। मेरी समझ में नहीं आता कि कितनी बार इनके नीचे से कुर्सी खींची जायेगी ? तब यह समझौता करना बन्द करेंगी। मैं नेता सदन से जानना चाहता हूं कि वह इस बारे में बतायें। ये दोनों राजनीतिक पार्टियां भारतीय जनता पार्टी और बहुजन समाज पार्टी बेशर्म हैं, इनके सिद्धान्त, इनकी विचारधारा में कोई ज्यादा अन्तर नहीं मानता हूं, एक का धर्म का नारा है, एक का जाति का नारा है। एक दूसरे को चुनाव में गाली देते हैं, कोसते हैं, अपमान भी करते हैं लेकिन जब बहुमत नहीं मिलती तो बड़ी बेशर्मी के साथ एक जगह बैठ जाते हैं केवल मुख्य मंत्री बनने के लिए, मंत्री बनने के लिए। माननीय अधिष्ठाता महोदय, इस बेशर्मी और बेहयाई का लोकतंत्र में क्या हश्र होगा ? इसे प्रान्त का क्या होगा ? यह मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है। इसी के साथ मैं ज्यादा न कहते हुये इस गठबन्धन की निन्दा करता हूं और विश्वास मत का विरोध करता हूं।

*श्री हरिशंकर तिवारी–

माननीय अध्यक्ष जी, मैं नेता सदन द्वारा रखे गये प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। माननीय हमारे सभी साथियों ने अपने भावनायें व्यक्त कीं और सभी ने प्रदेश की आर्थिक स्थिति पर चिन्ता प्रकट की। एक तरफ प्रदेश के विकास की बात करेंगे और दूसरी तरफ चुनी हुयी सरकार को अस्थिर करेंगे तो दोनों कैसे होगा ? हमारे नये साथी जो चुनकर आये हैं वह अपने विधान सभा क्षेत्रों में वादा करके आये हैं कि हम जन कल्याण का काम करेंगे। लेकिन सरकार को अस्थिर करेंगे तो विकास के काम कैसे होंगे ? आइये, हम दलों से ऊपर उठकर, मिलकर आज जो माननीय नेता सदन द्वारा प्रस्ताव रखा गया है उसका समर्थन करें और बहुमत में सहयोगी बनें। आज जो प्रदेश की स्थिति है वह यह है कि हमारे प्रदेश की आय एवं राष्ट्रीय आय में सन् 2002 में 35.7 का अन्तर है, आज बिजली नहीं है, बेरोजगारी है, विकास के काम पिछड़े हुये हैं उनको गति देना है। जो हमारे नये साथी चुनकर आये हैं

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

और जो यह जनता से वादा करके आये हैं कि हम जन कल्याण का काम करेंगे तो क्या यह काम सरकार को अस्थिर करके हो सकेंगे।

हमारे पूर्वांचल में 1998-2000 में जो बाढ़ से तबाही हुयी है उसकी चिन्ता आप नहीं कर रहे हैं। जो बांध वहां पर कटे और टूटे पड़े हैं उनको बनाने की बात आप नहीं कर रहे हैं। वहां रहने वाले 18 हजार लोग इन्सेफलाइटिस से मर गये हैं। उनकी चिन्ता आप नहीं करते हैं। किसानों, मजदूरों की चिन्ता आप नहीं कर रहे हैं। कैसे बीमारियों से मुक्ति मिले इस पर आप विचार नहीं कर रहे हैं। आप केवल यह संदेश देना चाहते हैं कि उत्तर प्रदेश में हम सरकार भी नहीं चला सकते हैं तो फिर क्या मुंह लेकर आप अपने विधान सभा क्षेत्रों में जायेंगे। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि हम लोगों ने भारतीय जनता पार्टी के सहयोगी के रूप में चुनाव लड़ा। हम जनता से वादा करके आये हैं कि हम प्रदेश को स्थिर सरकार देंगे। अभी हमारे एक साथी कह रहे थे सरकार कैसे चलेगी ? मैं कहना चाहता हूं कि सरकार ट्रायल और एरर से नहीं दृढ़ इच्छा शक्ति से चलती है। दृढ़ इच्छाशक्ति से जन कल्याण हो सकता है। आप सभी नये माननीय सदस्य चुनकर आये हैं। कुछ लोग मुझसे कान में आकर कहते हैं कि हम भी चाहते हैं, सरकार चले, इसलिये जो भावनायें आपके मन में स्थिर सरकार की हैं उनको मूर्तरूप दें और दलों से ऊपर उठकर जनकल्याण के लिये इस प्रस्ताव का समर्थन करें। भारतीय जनता पार्टी और माननीय नेता सदन द्वारा जो प्रस्ताव रखा गया है उसका मैं समर्थन करता हूं। धन्यवाद।

श्री शंखलाल मांझी–

मान्यवर, आज सदन में नेता सदन द्वारा जो विश्वास मत का प्रस्ताव रखा गया है मैं उसके पक्ष में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं। 14वीं विधान सभा में जनता ने जो जनादेश दिया था एक ऐसा जनादेश था जिससे पूरे प्रदेश में असमंजस और ऊहापोह की स्थिति पैदा हो गई थी ऐसी स्थिति में हम नहीं तो कोई नहीं का विचार रखने वाले राजनीतिज्ञों ने सरकार बनाने का दावा पेश किया था किन्तु समर्थित सदस्यों की सूची जो महामहिम श्री राज्यपाल जी ने मांगी थी वह सूची नहीं दी गई। ऐसी स्थिति में दो महीने बीत गये लेकिन एक लोकप्रिय सरकार का गठन नहीं हो सका। ऐसी स्थिति में दो स्थितियां बनी, एक तो आर्थिक रूप से जर्जर इस प्रदेश को पुनः चुनाव में झोंक दिया जाए या वर्तमान में जो स्वरूप है जनादेश का उसमें समान विचारधारा के लोगों को गठबन्धन करके एक लोकप्रिय सरकार का गठन किया जाए। इसकी परिणित के रूप में जनहित व प्रदेश हित को देखते हुये भारतीय जनता पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, लोकदल, जनता दल और सहयोगी दलों के नेताओं ने मिलकर समान नीति समान अवसर के आधार पर गठबन्धन कर सरकार बनाने का निर्णय लिया। हम जनता दल के सिपाही श्रद्धेय गांधी जी, लोहिया जी, जय प्रकाश नारायण जी एवं अम्बेडकर जी के आदेशों को मानने वाले लोग हैं। श्री जयप्रकाश नारायण व लोहिया जी की यह सोच भी कि समाज के दलित पिछड़ों व समाज के सबसे निचले तबके के व्यक्ति को सत्ता की बागडोर सौंपी जाय। दलित समाज के लोगों द्वारा सत्ता की संरचना की जाए इसलिए वर्तमान में जो लोकप्रिय सरकार बनी है बहिन मायावती जी जो दलित महिला हैं उनके हाथों में जो सत्ता की बागड़ोर सौंपी गई है उसको चलाने के लिए हम जनता दल यूनाइटेड के विधान मण्डल के लोग इस सरकार को पूरा-पूरा समर्थन देते हैं। हमारा यह दृढ़ मानना है, दृढ़ निश्चय है कि समान अवसर के आधार पर सरकार बनाई गई है यह लोकप्रिय सरकार है यह अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा करेगी। मैं मायावती जी से इस अपेक्षा के साथ अनुरोध करता हूं कि समान नीति और

समान अवसर के आधार पर समाज के दलितों पिछड़ों के उत्थान की ओर कार्य करें व श्री जयप्रकाश नारायण, लोहिया जी व अम्बेडकर जी के सपनों को साकार करें। जनता दल 'यू' की तरफ से नेता सदन द्वारा जो प्रस्ताव रखा गया है उसका मेरा दल पूरा-पूरा समर्थन करता हूं। अन्त में, सदन की नेता को इस सुझाव इस सलाहियत के साथ कि,

"अपने किरदार को तुम खुद से बचाकर रखना।
घर की दीवार को उसूलों से सजाकर रखना॥
जीत सकते हो हर जंग शर्त है लेकिन।
अपने कुछ वार तुम अपनों से बचाकर रखना॥

इसी के साथ मैं सरकार को अपना समर्थन देते हुये अपनी बात समाप्त करता हूं।

* श्री कल्याण सिंह–

श्रीमन, मैं आभारी हूं कि आपने मुझे कुछ अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया। मैं बहुत लंबा भाषण कहने के लिये नहीं खड़ा हुआ हूं। मैं तीन-चार बिन्दुओं पर अपनी बात कह कर समाप्त कर दूंगा। उत्तर प्रदेश में ऐसा लग रहा है। श्रीमन् कि जो स्वस्थ लोकतांत्रिक परम्पराएं हैं, उनका क्षरण हो रहा है। पिछले विधान सभा के चुनाव में सब जानते हैं कि किसी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। ऐसी स्थिति में स्वस्थ परम्परा तो यह होती कि जिस समाजवादी पार्टी को जिसमें सबसे ज्यादा सदस्य 145 जीत कर आये थे, को सरकार बनाने का निमंत्रण मिलना चाहिए था। सदन में अपना बहुमत सिद्ध करने का मौका मिलना चाहिए था।

(विपक्ष की तरफ से मेंजें थपथपाई गई)

वैसे तो सिद्धान्ततः सरकार बनाने के लिये राजभवन उचित फोरम नहीं है। इसके लिये फोरम है सम्मानित सदन। जैसा कि माननीय मुलायम सिंह जी ने दावा किया था उन्हें बहुमत सिद्ध करने का मौका चाहिए था यदि वे बहुमत सिद्ध न कर सके तो उसके बाद के दूसरे बड़े दल को और यदि वे भी न कर पाते तो फिर तीसरे दल को बहुमत सिद्ध करने का मौका मिलना चाहिए था। जब कोई बहुमत सिद्ध नहीं कर पाता तो एक परम्परा यह हो सकती थी कि विधान सभा अपना लीडर चुनकर दे। यह एक नई स्वस्थ परम्परा होती। इस तरह से मान्यवर, लोकतंत्र और संसदीय परम्पराओं का क्षरण हो रहा है, ऐसा जनता का भी विश्वास है। श्रीमन्, बहुत कुछ कहा जा चुका है। मैं यह मानता हूं कि जो गठबन्धन हुआ है वह बेमेल है, सिद्धान्तहीन है, अवसरवादी है। कोई भी न्यूनतम साझा कार्यक्रम जनता के हित का नहीं है। केवल एक ही न्यूनतम साझा कार्यक्रम है–सत्ता कब्जियांओ, लूटो खाओ मौज उड़ाओ, जनता भाड़ में जाए तो जाए। किस-किस ने क्या-क्या कहा था इसके बारे में प्रमोद जी ने विस्तार से कह दिया है। मैं इसको फिर से दोहराना नहीं चाहता। केवल एक बात कहना चाहता हूं अब यह संयोग है कि पूर्व मुख्य मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी इस समय यहां पर नहीं हैं, होते तो याद दिलाता। यहां पर वर्तमान मुख्य मंत्री सुश्री मायावती जी बैठी हैं। दोनों को दोनों के शब्द याद दिलाना चाहता हूं। एक

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

बार नहीं अनेकों बार प्रिन्ट मीडिया में, इलेक्ट्रोमीडिया में बातें कहीं गई । प्रिन्ट मीडिया के लिये तो कह सकते हैं कि इन्होंने गलत छाप दिया । इलेक्ट्रोमीडिया तो वही बताता है, वही दिखाता है जो कहा जाता है । मायावती जी को याद दिलाना चाहता हूं । बड़े अदब के साथ कि आपने भारतीय जनता पार्टी के बारे में कटु आलोचना करते हुये कहा था कि यह एक मनुवादी पार्टी है । आपने यह कहा था कि इस प्रकार की मनुवादी पार्टी के साथ हमारा तालमेल नहीं हो सकता है । यह आपने चुनाव के पहले भी कहा था और चुनाव के बाद भी कहा था कि हम इनसे तालमेल नहीं करेंगे । विपक्ष में बैठना होगा तो बैठेंगे । कोशिश करेंगे कि बहुमत मिल जाय, नहीं मिलेगा तो विपक्ष में बैठने के लिये तैयार हैं । संक्षेप में कह रहा हूं विस्तार में नहीं । इसके जवाब में राजनाथ सिंह जी ने जो मुख्य मंत्री के रूप में दौरा कर रहे थे, एक बात कही थी कि बहुजन समाज पार्टी एक घनघोर जातिवादी पार्टी है ।

भारतीय जनता पार्टी के साथ समझौता न चुनाव के पहले न चुनाव के बाद । लेकिन आज दोनों इकट्ठे बैठे हैं तो क्या हम यह मान लें जो गठबन्धन हुआ है यह जातिवाद और मनुवाद का गठबन्धन है ? सिद्धान्तवाद का गठबन्धन नहीं है । श्रीमन्, मुझे याद है भाजपा के केन्द्रीय संसदीय बोर्ड ने प्रस्ताव पास कर दिया था हम विपक्ष में बैठेंगे, बाद में केन्द्र में प्रस्ताव पास किया गया कि मिलकर सरकार बनायेंगे, क्या मजबूरी थी लोग कहते हैं उनके कहने में दम है, सच्चाई है केन्द्र, सरकार को बचाने के लिए उत्तर प्रदेश की भाजपा की बलि चढ़ा दी गई है । हमें खुशी होगी भाजपा जितनी जल्दी बलिदान हो जाए हम सब लोग हैं, आंसू बहाने के लिए, लेकिन उत्तर प्रदेश किसी की अपनी निजी सम्पत्ति नहीं है । केन्द्र सरकार की कुर्सी बचाने के लिए उत्तर प्रदेश की जनता को बरबाद कर दिया गया है। श्रीमन्, यह सरकार कितने दिन चलेगी ?

(व्यवधान)

(पांच साल चलेगी की आवाजें)

अगर पांच साल चल सकती है तो जरूर चलाएं लेकिन पिछले कुछ अनुभव मुझे भी हैं मैं कटु अनुभव के आधार पर कह सकता हूं पांच साल का सपना पूरा नहीं होगा । आप चला सकते हैं तो जरूर चलाएं ।

श्रीमन् एक साल के अन्दर इस प्रदेश के अन्दर हाहाकार मचने जा रहा है । गांव-गांव में जातीय संघर्ष होना शुरू होगा । जमीनों पर कब्जा होना शुरू होगा । न कलेक्टर कुछ कहेगा और न ही एस०एस०पी० कुछ कहेगा । मुझे आज ही एक समाचार मिला कि हमारे क्षेत्र में एक-एक बेचारे निरीह आदमी की चार बीघे जमीन पर बसपा ने जिनको टिकट दिया था, लट्ठबन्धुओं के बल पर, कब्जा कर लिया । कलेक्टर और एस०एस०पी० कहते हैं कि कुछ नहीं कर सकते हैं । यह तो बानिगी है । तीन तारीख को सरकार बनाने का न्योता दिया गया था । मैं इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि इस प्रदेश के विकास और समृद्धि के कुछ संकेत मिलेंगे इस सरकार का इस प्रदेश को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य होगा लेकिन अब इस बात का संकेत मिल गया कि समाज में समरसता को कायम रखने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है ? समाज में विघटन किसी के हित में नहीं होगा । समाज में एकता समरसता चाहिए हां, जो उजड़े हैं दलित हैं, पिछड़े हैं शोषित हैं, पीड़ित हैं सैकड़ों वर्ष से पिछड़े हैं उनका सत्ता में राजनीति में संवैधानिक हिस्सेदारी की पहल करेंगे तो मैं स्वागत करूंगा । इसी से सामाजिक एकता और सामाजिक सद्भाव पैदा होगा, अगर आप यह नहीं कर सकते हैं तो आप समाज के विघटन का कारण

बन सकते हैं। अधिकारियों में मनोबल टूट रहा है। यह ठीक है, मैं मानता हूं और मैंने भी ट्रांसफर पोस्टिंग की है और हर मुख्य मंत्री करता है आपने भी की, मैं इसकी आलोचना नहीं करना चाहता हूं लेकिन इसकी कोई तो नीति होनी चाहिए। अच्छे अधिकारियों को अच्छी पोस्टिंग और अच्छी पोस्टिंग के लिए अच्छे अधिकारी यह होना चाहिए। जब अच्छे व्यक्ति को खराब पोस्टिंग और आरोपित व्यक्ति को अच्छी पोस्टिंग दी जायेगी तो क्या वह संतुष्ट रह पायेगा ? क्या इससे प्रशासनिक तंत्र का मनोबल नहीं टूटेगा ? क्या इसका दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा ? यह कुछ ऐसे बिन्दु हैं जो गंभीरता से विचारणीय है और जैसे कि मैंने कहा कि इसमें किसी बात का कोई मेल मिलाप नहीं है केवल एक बिन्दु ऐसा है वह है सत्ता के साथ सीमेन्ट की तरह चिपको और जब सीमेन्ट झड़ जायेगी तो नतीजा क्या निकलेगा यह आप जानते ही हो। आपने कहा कि यह सरकार पांच साल चलेगी तो आप लोग इस मुगालते में न रहें। मैं भारतीय जनता पार्टी के मित्रों से एक बात कहना चाहता हूं, खास तौर से मेरे बड़े भाई, जिनका मैं सम्मान करता हूं, टण्डन जी आप आरकीटेक्ट बने इस सरकार के बनाने में। अच्छा है इस काम में आपको सफलता मिली इसके लिए बधाई। आपका अधिकार था आप आरकीटेक्ट बने। लोक सभा का चुनाव भी आने वाला है 2004 में।

मैं रिकार्ड कराना चाहता हूं कि यह भ्रम निकाल दें अपने मन से कि सुश्री मायावती आपके साथ मिलकर लोक सभा का चुनाव लड़कर आत्महत्या करने की गलती करेंगी। अगर फिर भी करती हैं आत्महत्या करने की, हालांकि कानून इजाजत नहीं देता, तो यह करें। अब तो इनको भी अनुभव हो गया है यह मिलकर चुनाव लड़ने की गलती नहीं करेंगी। मैं विपक्ष के अपने साथियों से एक बात कहना चाहता हूं कि धैर्य मत खोओ केवल कुछ समय के लिए इन्तजार करो। वह अवसर भी आयेगा जब इधर बैठने वाले उधर होंगे और उधर बैठने वाले इधर होंगे।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, माननीय नेता सदन द्वारा रखे गये प्रस्ताव का विरोध करने के लिए खड़ा हूं। मैं माननीय नेता विपक्ष के समर्थन में खड़ा हुआ हूं। श्रीमन् क्यों विश्वास इस सदन से मांगा जा रहा है इसका औचित्य समझ में नहीं आया ? भारतीय जनता पार्टी के नेता पूर्व मुख्य मंत्री, बोल रहे थे। चुनाव के बाद दस बार उनका यह बयान आया कि भारतीय जनता पार्टी को जनादेश नहीं मिला है सरकार बनाने के लिए। हमको विपक्ष में बैठने का जनादेश मिला है इसलिए हम विपक्ष में बैठने का काम करेंगे। अभी हमारे एक साथी माननीय भरत सिंह जी जो राजनाथ सिंह जी के करीबी हैं।

मान्यवर, उनका बयान आया कि भारतीय जनता पार्टी के कम से कम 36 विधायक हमारे साथ हैं और हम अपने विपरीत विचारधारा के लोगों के साथ, हम सरकार नहीं बनायेंगे। केन्द्रीय पार्लियामेन्ट्री बोर्ड ने भी यही कहा है कि उत्तर प्रदेश में जो जनादेश मिला है वह विपक्ष में बैठने का है इसलिए भारतीय जनता पार्टी विपक्ष में बैठेगी। माननीय नेता सदन का भी चुनाव के पहले यह बयान था कि किसी भी एक पार्टी को बहुमत नहीं मिला है हम विपरीत विचारधारा की सरकार न बनाकर विपक्ष में बैठेंगे। इस सरकार के बनने के तीन दिन पहले भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री कलराज मिश्र का यह बयान आया कि किसी भी कीमत पर हमारे विधायक विपक्ष में बैठेंगे कोई सरकार नहीं बनने जा रही है। आज माननीय नेता सदन और नेता भारतीय जनता पार्टी दोनों ने कहा कि एक लोकप्रिय सरकार को अब लोग अस्थिर क्यों करना चाहते हैं ? मैं कहना चाहता हूं कि कौन सी लोकप्रिय

सरकार ? मंत्री बनने वालों के लिए यह लोकप्रिय है, मंत्री बनने की लाइन में खड़े होने वालों के लिए यह लोकप्रिय है, प्रदेश की जनता के लिए लोकप्रिय सरकार कौन सी हो इसका निर्णय कौन करेगा ? इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि यह गठबन्धन बेमेल है, अनैतिक है, अवसरवादी है और इस प्रदेश की जनता को पिछली सरकार की तर्ज पर लूटने का प्रयास है । यह गठबन्धन इस प्रदेश की जनता की कमर तोड़ने के लिए है । नेता सदन ने इस बारे में कुछ नहीं कहा कि इनकी सरकार में विश्वास क्यों दिया जाय ? न इन्होंने इस बात पर बल दिया कि हमारी सरकार बेरोजगारी दूर करेगी, न यह कहा कि इस प्रदेश के किसानों को उनके द्वारा पैदा किए गये अनाज का उचित मूल्य देगी ।

इसके विषय में एक शब्द भी उन्होंने नहीं कहा । उन्होंने यह भी नहीं कहा कि सदन में जब हमारी सरकार स्थित हो जायेगी तो हम समाज में जो असन्तुलन है, समाज में जो बेचैनी है उसको दूर करने के लिये हम कौन-कौन से काम करेंगे । इसकी भी कोई झलक उन्होंने नहीं दी । बहुत हल्ला है मान्यवर, न्यूनतम साझा कार्यक्रम बनाने का । चुनाव से पहले यह दो धुरा थे सरकार बनने पर दोनों मिल गये । कलराज मिश्र जी का बयान आया था कि विश्वास मत हासिल करने के बाद न्यूनतम साझा कार्यक्रम बनाया जायेगा । राजग सरकार बनी केन्द्र में, बेमेल थी लेकिन इन्होंने पहले न्यूनतम साझा कार्यक्रम बनाया उसकी घोषणा हुई थी इस कार्यक्रम के आधार पर हम सब दल मिलकर इस सरकार का गठन कर रहे हैं । इसका कोई भी कार्यक्रम नहीं आया । भारतीय जनता पार्टी बराबर इस बात पर बल देती रही है कि बहुजन समाज पार्टी के साथ मिलकर सरकार नहीं बनायी जायेगी । अभी भारतीय जनता पार्टी के बारे में माननीय कल्याण सिंह जी ने इशारा किया था । लेकिन पार्टी में दो धुरी हो के बाद भी आपने बहुजन समाज पार्टी के साथ सरकार बनायी । एक पार्टी में दो धुरी थी, बीएसपी में एक ही धुरी थी, फिर भी सरकार बनायी गयी । आप यकीन कर सकते हैं कि इस सरकार से जनता का कोई भी कल्याणकारी कार्य संभव है ? कोई कार्य संभव नहीं है । नेता सदन ने कहा समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के बारे में कहा कि उन्होंने 1989 में भारतीय जनता पार्टी के सहयोग से इस प्रदेश में सरकार बनायी थी । मैं आपसे कहना चाहता हूं कि मैंने दीनदयाल उपाध्याय की 'मानववाद' पुस्तक का अध्ययन किया है, जनसंघ का वह चरित्र जो था, वह साम्प्रदायिक नहीं था तब 1970 में संविद सरकार बनी तब उसमें चौधरी चरण सिंह जी ने सरकार में उन्हें शामिल किया था । जनसंघ का 1977 में जनता पार्टी में विलय हो गया था । 1989 में भारतीय जनता पार्टी का चरित्र, जो केन्द्र से लेकर प्रदेशों में सरकारों का समर्थन किया था, बाहर से रहकर के, साम्प्रदायिक चरित्र उसका खुलकर सामने नहीं आया था । भारतीय जनता पार्टी का साम्प्रदायिक चरित्र बाबरी मस्जिद के गिरने के बाद सामने आया है ।

आज जो नेता सदन बनी हुई हैं उन्होंने बार-बार इस बात का एहसास दिलाया था कि भारतीय जनता पार्टी साम्प्रदायिक पार्टी है । हम इससे कभी हाथ नहीं मिलायेंगे और इन्होंने आज कुर्सी की लालच में इनसे हाथ मिला लिया है, दोनों बेमेल हैं ।

कह रहीम कैसे निभे
बेर-केर का संग,
वे डोलत रस आपने
उनके फाटत अंग ।

यह बेमेल जोड़ी है, इसके रहते प्रदेश विनाश के कगार पर है । यह अनुरोध करना चाहता हूं कि प्रदेश की जनता को इस जालिम सरकार से उबारना चाहते हैं और प्रदेश की जनता को मजबूत सशक्त सरकार देना चाहते हैं तो अपनी अंतरआत्मा की आवाज पर वोट देकर इस सरकार को धराशायी कर दें । मैं इसी के साथ प्रस्तुत विश्वास प्रस्ताव का विरोध करता हूं ।

(इस समय दिन के 02 बजकर 20 मिनट हुए ।)

* श्री संजय गर्ग–

मान्यवर, माननीय नेता सदन ने अपनी सरकार के पक्ष में जो विश्वास मत रखा है मैं उसके विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं । माननीय अधिष्ठाता जी, फरवरी में विधान सभा के आम चुनाव में विभिन्न विचारधाराओं को साथ लेकर, जनता को अपने विचारधारा से प्रभावित कर, गोलबन्द कर उसकी भलाई के लिए तरह-तरह के आश्वासन देने के बाद जनता ने जो जनादेश दिया उस जनादेश से एक बात साफतौर पर सामने आई कि इससे पहले 1997 से 2002 जनवरी तक जो सरकार थी जनता ने उसकी फिरकापरस्त नीतियों के खिलाफ जमकर वोट देने का काम किया था और इतना ही नहीं पिछले सत्तापक्ष के नेता जब खुलकर जनता के बीच में जाकर, बांहें चढ़ाकर कहने का काम करते थे कि चुनाव ने बसपा साफ और सपा हाफ हो जायेगी लेकिन जनता ने जनादेश देकर उनकी पार्टी को हाफ कर यह बात बता दी कि जनता ने उसके द्वारा लिये गये फैसले के विरोध में अपना फैसला दिया है । श्रीमन्, जनता ने अपना फैसला दिया इस समतामूलक समाज के निर्माण के लिए, किसानों के दस्तकारों के हित के लिए, बेरोजगार के हित में कानून बनाने के लिए, अमन चैन का वातावरण बनाकर, साम्प्रदायिक सद्भावना को बनाकर किस तरह से हम इस प्रदेश की सरकार के दलितों के लिए उनकी बुनियादी जरूरतों को पूर्ण करेंगे इसके लिए जनता ने जनादेश दिया था । हमारा जो दल सबसे बड़ी ताकत के रूप में फिरकापरस्त ताकतों के खिलाफ जनता को आश्वासन देकर सदन में आया था उनकी एक जिम्मेदारी बनती थी । समाजवादी पार्टी को जनता ने डेढ़ सौ सीटे देकर और बहुजन समाज पार्टी को 98 सीटें देकर. इस बात का खुले तौर पर फैसला देने का काम किया कि वह फिरकापरस्त नीतियों के खिलाफ है, अपनी बुनियादी चीजों के समाधान की चाह जनता की थी । वह चाहती थी कि किसी भी तरह समाजवादी, समतावादी, धर्मनिरपेक्ष सरकार का गठन हो जो उस खोखली आर्थिक हालात को पहचानने का काम कर सके जो जनता की गाढ़ी कमाई को कुएं में डुबाने से बचाने का काम कर सके । यह लोकतंत्र का खुला उपहास है हमारे भारतीय जनता पार्टी के नेता शायद यह बात कहते हैं कि समझौता चुन्नाव के पूर्व होता है जो समझौता चुनाव के बाद होता है वह अर्थहीन होता है । यह बेमेल समझौता कैसे कारगर हो सकता है । यह तो सत्ता को हथियाने का काम आप लोगों ने कर लिया है । निश्चित रूप से दो विचारधाराओं का बेमेल गठबन्धन में जनता के हित का कोई सवाल नहीं उठता है । आज विश्वासमत को रखते हुये नेता सदन ने किसी भी रूप में जनता के भलाई का ध्यान उस एजेन्डे में नहीं दिया । केवल कुर्सी की हबस में इस गठबन्धन के साथ बैठकर आज नेता सदन की एक घबराहट और बौखलाहट देखने को मिली । अगर यह गठबन्धन दुबारा जनता के बीच में जायेगा । तो ये अल्पसंख्यक सदस्यों के बीच में जो आश्वासन देकर आई हैं उनको कैसे मुंह दिखा पायेगी । मगर जनता के अन्दर वह टीस बरकरार है ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

बहुत से विरोधाभास बयान पिछले चुनाव में दिये गये और उसके बाद इस प्रदेश की जनता को गुमराह करने का काम किया गया है। अपने दल को तोड़ने वालों के साथ बहुजन समाज पार्टी ने गठबन्धन कर लिया लेकिन सर्वोच्च न्यायालय में एन्टी डिफेक्शन का जो मुकदमा पड़ा है उसको इस गठबन्धन ने वापिस कर लिया होता तो ज्यादा बेहतर होता।

मान्यवर, मैं एक बात बताना चाहता हूं कि निश्चित रूप से मनुवादी व्यवस्था की मदद से मानववादी व्यवस्था का निर्माण नहीं किया जा सकता है। चाहे कबीर हों, छत्रपति शाहूजी हों, रामास्वामी हों या अन्य दूसरे मनीषी रहे हैं, सभी ने समतामूलक समाज के निर्माण की परिकल्पना की है। लेकिन आपने कुर्सी के लालच में, कुर्सी के साथ घालमेल करने वाले फिरकापरस्त लोगों की गोद में बैठकर क्या आप इस समतामूलक समाज के निर्माण की परिकल्पना कर पायेंगी ? संविधान समीक्षा की बात चल रही थी, केन्द्र ने समीक्षा आयोग बैठाने की बात की थी उस समय मायावती जी ने ये बयान दिया था कि इस तरह संविधान समीक्षा के लिए गठित आयोग को असंवैधानिक करार दिया जाए और उन्होंने यह भी कहा था कि संविधान में संशोधन की तो व्यवस्था है लेकिन समीक्षा की व्यवस्था नहीं है। ऐसे में संविधान समीक्षा का फैसला ही असंवैधानिक है। आपने कहा था कि दरअसल भारतीय जनता पार्टी की नीयत में खोट है। वह संविधान समीक्षा की आड़ में अपने एजेण्डे को लागू करना चाहती है, जिसे बसपा किसी भी कीमत पर पूरा नहीं होने देगी। उसका एजेण्डा क्या था यह जनता आपसे जानना चाहती है।

भारतीय जनता पार्टी संविधान की समीक्षा करके फासीवादी तरीके से कुर्सी पर काबिज रहना चाहती है, आपके 13 सांसदों का समर्थन लेने के लिए अगर वह सत्ता की कुर्सी पर आपको बैठाना चाहती है। तो उससे उसका एजेण्डा बदल नहीं जायेगा। वह अपना फासीवादी एजेण्डा आपके माध्यम से लागू करना चाहती है। इसके लिए आप कितनी सचेत हैं ? यह भी कहा है कि मजबूत सरकार के मुकाबले मजबूर सरकार का रहना उनके हित में है। उत्तर प्रदेश में सत्ता में आने पर धर्म विधेयक बिल को वापस लेने का वायदा भी आपने बार-बार किया है। यह भी बार-बार कहा जा रहा है कि सरकार 5 साल चलेगी लेकिन यह कहने की उनकी मजबूरी है क्योंकि राष्ट्रपति का चुनाव होने जा रहा है और एन०डी०ए० की सरकार उनको चलानी है इसलिए उन्होंने ऐसा किया है और आप उनके हाथ की शिकार हो गयीं और उनकी गोद में आकर बैठ गयीं। किस तरह जनता आपको माफ करेगी ? आपने 8 मई, 2001 को बयान दिया था कि भाजपा की साम, दाम, दण्ड, भेद की नीति से पार्टीजन सावधान रहें, जनता तो सावधान रही और आपके 98 साथियों को इस विधान सभा में भेजने का काम किया लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने साम, दाम, दण्ड, भेद की नीयत के तहत आपको अपने आक्रोश में बैठा लिया और अपने एजेन्डे को लागू करने का काम बड़ी खूबसूरती के साथ कर लिया। अयोध्या प्रकरण में भी आपने कहा था कि फौजदारी मामले में 13 अभियुक्तों के खिलाफ विशेष सत्र न्यायाधीश द्वारा कार्यवाही स्थगित करने के प्रकरण में आपने कहा था कि पुनः मुकदमा चलाने के लिए यदि राजनाथ सिंह ने नई अधिसूचना जारी नहीं की तो उनकी पार्टी देश भर में जनान्दोलन चलायेगी। माननीय अधिष्ठाता जी, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं, आप इस समय सरकार में हैं, जिम्मेदार कुर्सी पर हैं तो क्या उन 13 अभियुक्तों के खिलाफ, उन कानूनी अड़चनों को हटाते हुये उस विवादित ढांचे को ढहाने वाले लोगों के खिलाफ उस फौजदारी मुकदमें को चलाने का प्रयास यह सरकार करेगी ? जब यह आपसे पूछा गया था कि विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा गर्भगृह में प्रवेश के मामले में किसे दोषी मानती हैं, आपने कहा था कि

सुप्रीम कोर्ट की अवमानना करके जो गर्भगृह में गये और जिन्होंने उन्हें जाने दिया, उन पर दण्डात्मक कार्यवाही की जानी चाहिए ।

दोनों के खिलाफ ही दण्डात्मक कार्यवाही की जानी चाहिए । आपके द्वारा उस समय [illegible]त्मक कार्यवाही की नहीं गई । क्या आप अपने आश्वासन को सामने रखते हुए आने वाले दिनों में अपनी ताकत के इस्तेमाल से अपने कहे हुए कथन के अनुसार उनके खिलाफ दण्डात्मक कार्यवाही करने की कोशिश का काम करेंगे । हमें उम्मीद है कि निश्चित रूप से आपके द्वारा यह कार्यवाही की जायेगी । मायावती जी, आपने कहा था कि धर्म विधेयक बिल वापस लिया जायेगा मैं चाहूंगा कि मौजूदा ताकत में रहते हुए निश्चित रूप से जो आश्वासन आपने जनता के बीच में दिया था धर्म विधेयक बिल को वापस लेने के लिए अपनी कोशिश करने का काम करेंगे । आपने कहा तो सामाजिक न्याय समिति बनाई गई और हिन्दू जातियों को आरक्षित करने का काम किया गया, तब मामला कोर्ट तक गया, और जब कोर्ट ने इस मामले पर पर्दा डालने का काम किया तब आपने कहा था कि भाजपा और सपा दोनों ही सही मायने में लाभ देना नहीं चाहते और जब इस अध्यादेश के खिलाफ एक याचिका दायर हुई तब मामला राम जेठमलानी की पैरवी में लग रहा है ताकि मामला अदालत में रुके और वह सामाजिक न्याय समिति के सारे के सारे मामले भी फिस्स हो गए ।

श्री अधिष्ठाता–

अब आपका समय खत्म हो गया है आप बैठ जाएं ।

श्री संजय गर्ग–

मान्यवर, बस दो मिनट में मैं अपनी बात समाप्त करता हूं । मान्यवर, मैं आपके माध्यम से सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि इन पिछड़ी जातियों को 27 प्रतिशत का न्याय मिल सके और वह भी नौकरी में भाग ले सकें । उसे आप हटाने के लिए कुछ काम करने का प्रयास करेंगे और इतना ही नहीं 1995 में आपने मुस्लिम पिछड़ी जातियों को आरक्षित श्रेणी में तो ला दिया लेकिन जितनी भी मुस्लिम आरक्षित जातियों को सूची में शामिल किया गया उनमें कितनों को सरकारी नौकरियों में, कितनों को मेडिकल कालेज और इन्जीनियरिंग कालेजों में प्रवेश में फायदा मिला ? अगर आप उस 27 प्रतिशत आरक्षण में मुस्लिम आरक्षित जातियों को 8.3 फीसदी मौका देकर लाने की व्यवस्था करेंगे तो निश्चित रूप से मैं इस मामले में आपका सहयोग करूंगा ।

श्री अधिष्ठाता–

कृपया आप बैठ जाए, समय खत्म हो गया है ।

श्री संजय गर्ग–

मान्यवर, माननीय राजनाथ सिंह जी ने यहां भी कहा था कि वह जो कुछ कहेंगे उसे पूरा दिखायेंगे, वरना चुल्लू भर पानी में डूब कर मर जायेंगे । आपने यह भी कहा कि जनता ने हमें विपक्ष में बैठने का जनादेश दिया है परन्तु विपक्ष में न बैठकर इस पूरे के पूरे आडम्बर में फंस कर रह गए । मैं आपके शब्द की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । यदि वास्तव में समता मूलक समाज के निर्माण के साथ दलितों, अल्पसंख्यकों, दस्तकारों को न्याय दिलाने की नीयत से उन बेरोजगारों की तड़प का

अहसास करते हुए प्रदेश की चरमराती हुई आर्थिक ढांचे के संरक्षण के लिए निश्चित रूप से अपनी नीतियों पर रहते हुए समग्रता के साथ कुछ प्रयास कर कोशिश करने का काम करती । नीला रंग कितना केशरिया रंग पर चढ़ेगा और केशरिया कितना नीले रंग पर चढ़ेगा, यह भविष्य के गर्त में छिपा है ।

श्री अधिष्ठाता–

अब समाप्त करें ।

(कई सदस्यों द्वारा एक साथ बोलने पर शोर/व्यवधान)

श्री संजय गर्ग–

मैं यह कहना चाहता हूं कि जनता की भावनाओं का कद्र किया जाय और आम आदमी के आंसू पोंछने का काम किया जाये । [xxx]

श्री अधिष्ठाता–

यह लिखा नहीं जायेगा ।

श्री संजय गर्ग–

मान्यवर, अन्त में, मैं यही कहना चाहता हूं कि यह गठबन्धन जनादेश के विरुद्ध है, अलोकतान्त्रिक है और अनैतिक है, इस नापाक गठबन्धन के विरोध में मैं मत देता हूं ।

श्री राजाराम–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, माननीया नेता सदन के प्रस्ताव के पक्ष में मुझे बोलने का मौका दिया इसके लिए मैं आपका आभारी हूं । मान्यवर, जब से देश आजाद हुआ अगर सबसे ज्यादा समय तक किसी की सरकार रही है तो वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की रही है । जिस तरह से सरकार को चलाया यह पूरा सदन जानता है । 1989 के बाद 1996 तक जितनी भी सरकारें आयी हैं, सब अस्थिर रही हैं और प्रदेश के विकास कार्य को रोकने का काम किया है । 1996 में जब 13वीं विधान सभा का गठन हुआ और सहयोगी दल के रूप में सरकार बनी, जिस सरकार ने साबित किया है कि सहयोगी दल के रूप में सरकार 5 साल तक चलती है और चलती ही नहीं है, करोड़ों किसानों के हितों का ध्यान रखती है, दलितों, अल्पसंख्यकों के हितों का ध्यान रखती है । उसका नतीजा यह हुआ है कि जहां आज तक नहरों से सिंचाई टेल तक नहीं हो पाती थी, 13वीं विधान सभा की सरकार ने किसानों के खेतों तक, टेल तक पानी पहुंचाकर खेतों को उपजाऊ बनाने का काम किया और गेहूं और धान की अप्रत्याशित पैदावार हुई । उस पैदावार का उचित मूल्य भी हमारी सरकार ने किसानों को देने का कार्य किया । कई वर्षों का बकाया गन्ना मूल्य के दाम को अदा करने का काम किया है । जो सरकार सहयोगी दल के रूप में भारतीय जनता पार्टी ने 5 साल चलायी उसमें किसानों के हितों का कार्य हुआ और 14वीं विधान सभा का जनादेश जो जनता ने दिया उसमें भारतीय जनता पार्टी के साथ सहयोगी दल के रूप में मिलकर चुनाव लड़े और जनता से यह वायदा किया कि हम सरकार बनायेंगे और किसानों, गरीबों के हितों की

नोट :– [xxx] यह अंश मा० अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

रक्षा करेंगे । एक बड़े दल के रूप में सामाजवादी पार्टी उभरकर आयी, जिनको न्यौता मिला कि सरकार बनाये । महामहिम के यहां दावा पेश किया कि हम सरकार बनायेंगे लेकिन जब महामहिम ने कहा कि आप अपने सभी समर्थकों को सामने ले आइये तो उनकी संख्या नहीं दे सके और नतीजा हुआ कि सरकार नहीं बनाया । भारतीय जनता पार्टी ने स्थिर सरकार के लिए, दलित परिवार की महिला को, 3-3 बार मुख्य मंत्री बनाने का श्रेय भारतीय जनता पार्टी को जाता है । आज पुनः दलितों, पिछड़ों के हित के लिए माननीय मायावती को मुख्य मंत्री बनाया । आज प्रदेश में लोकप्रिय सरकार है और यह सरकार 5 साल तक चलेगी । माननीया नेता सदन ने जो प्रस्ताव रखा है उसके प्रति मैं और मेरी लोक जनशक्ति पार्टी समर्थन के पक्ष में अपना मत व्यक्त करती है । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

* श्री महबूब अली–

माननीय अधिष्ठाता जी, आज नेता सदन ने जो सदन में बहुमत का प्रस्ताव रखा है उसके विपक्ष में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं । आज जिस तरह से प्रदेश में साम्प्रदायिकता के खिलाफ, फासिस्ट-वादियों के खिलाफ देश को तोड़ने वालों के खिलाफ, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई को बांटने वालों के खिलाफत करके यहां लोग आये हैं । मैं भी ऐसे लोगों के खिलाफ लड़ाई लड़कर आपके बीच में आया हूं । मैंने उन लोगों के खिलाफ भी लड़ाई लड़ी जिन्होंने इस क्षेत्र में बिजली कहां से आयेगी, किसान की फसल का उचित मूल्य कहां से मिलेगा, नहरों में पानी कहां से आयेगा की बात तो कही लेकिन वादे पूरे नहीं किये । ऐसे ही लोग पहले 187 के रूप में यहां सदन में बैठे थे लेकिन आज वह मात्र 87 रह गये हैं । मैं तो मात्र अकेला हूं । आज जनता ने इनको धिक्कार दिया है कि यह इस सदन में कुर्सी पर न बैठें । लेकिन इन्होंने यह तय कर लिया है कि किसी न किसी रास्ते से हम कुर्सी हासिल करेंगे । आज प्रदेश की जो जर्जर स्थिति है, प्रदेश में बिजली नहीं है, किसानों के लिए उर्वरक नहीं है, पानी नहीं है लेकिन उसकी तरफ ध्यान न देकर इन्होंने यह मन बनाया है कि चाहे जिस तरह से मिले कुर्सी मिले । लेकिन आज ऐसे लोगों के खिलाफ बोलने के लिए मैं सदन में खड़ा हुआ हूं । माननीय अधिष्ठाता जी, जिस तरह से आज प्रदेश की स्थिति है, मेरा क्षेत्र अमन परस्तों की बस्ती कहलाता है । सन् 47 के पहले और सन् 47 के बाद वहां पर कभी साम्प्रदायिक माहौल नहीं भड़का । जो अल्पसंख्यकों के वोटों पर जीत कर आये चाहे वह इस पक्ष के हों या उस पक्ष के हों अगर उनमें नैतिकता है तो हिन्दू मुसलमानों के खून से होली खेलने वालों के खिलाफ खड़ा होना चाहिए और उनका सहयोग नहीं करना चाहिए । देश को तोड़ने वाले, समाज को तोड़ने वाले, मन्दिर, मस्जिद तोड़ने वाले जो इस सदन में बैठे हैं उनके खिलाफ अपना मत देना चाहिए । मैं अधिष्ठाता जी आपसे अनुरोध करता हूं कौकब हमीद साहब और दूसरे लोग बोल रहे थे उनके अलफाज कलमा पढ़ने वालों "या इलाह इल्लल्लाह, मोहम्द-रसूलअल्लाह" कहने वालों के अलफाज नहीं कहे जा सकते । इतिहास गवाह है मीर जाफर मीर कासिम हजरत अली के कातिलों में मुसलमानों जैसा था । हजरत अली और हजरत हुसैन के कातिल मुसलमानों जैसा ही था । इनके साथ बैठकर जो वकालत करते हैं, मन्दिरों-मस्जिदों को जो लोग तोड़ते हैं, उन्माद फैलाते हैं । समाज को बिरादरियों में बांटते हैं वह इनके साथ बैठकर सहयोग की बात करते हैं । हम भी उम्मीद करते हैं कि हम सत्ता में रहें लेकिन हमने जिनसे चुनावी लड़ाई की है इनके खिलाफ जिन्होंने हमें वोट दिया है उनसे क्या

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

कहें। मैं पूरे सदन से कहना चाहता हूं कि ऐसी स्थिति में जब कि आज प्रदेश की स्थिति जर्जर हो चुकी है तो पैसा कहां से आयेगा। विकास कैसे होगा, आज थाने से लेकर जिला बिकता है वहां पर लोग कह देते हैं कि यह पैसा ऊंची कुर्सियों तक जायेगा। ऐसी स्थिति में जबकि खजाना खाली हो गया है तो विकास कैसे होगा। ऐसी स्थिति में जब हमने मान लिया कि सदन में सत्ता पक्ष में बैठने के बाद भी क्षेत्र का विकास नहीं हो सकता है, पैसा ही नहीं है तो क्यों न विपक्ष में बैठा जाये। इस सदन में बैठने वाले जो लोग हैं वह अपने-अपने क्षेत्रों में कुछ वायदे करके आये होंगे। हम सड़क बनावायेंगे, स्कूल बनवायेंगे बिजली देंगे लेकिन जब सरकार के पास पैसा नहीं है तो विकास कैसे होगा ? इसलिए मैं नेता सदन ने जो प्रस्ताव रखा है उसका पुनः विरोध करता हूं व इसके विरोध में अपना मत दूंगा। इन्हीं अल्फाजों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

डा० राधा मोहन दास अग्रवाल--

श्रीमन्, मैं नेता सदन द्वारा रखे गये प्रस्ताव के समर्थन में अपने विचार व्यक्त करने के लिए यहां खड़ा हुआ हूं। इसके पहले लम्बा दौर चला है सबने एक-दूसरे के ऊपर आरोप-प्रत्यारोप लगाये। लेकिन सभी कभी न कभी एक दूसरे के साथ सरकार बनाने का प्रयास कर चुके हैं या बना चुके हैं। प्रमोद कुमार जी अखबारों की कतरनें पढ़ रहे हैं, मैं एक ही बात कहूंगा, "दुश्मनी जमकर करो लेकिन यह गुंजाइश रहे, फिर जब कभी हम दोस्त बन जायें तो शर्मिन्दा न हों।" बहुत सारी बातें हैं कहने का समय नहीं है नहीं तो मैं भी चर्चा करना जानता हूं। पूरे प्रदेश की निगाहें आज सदन के ऊपर टिकी हुई हैं सब परेशान हैं पौने तीन महीने हो गये, राष्ट्रपति शासन भी लग चुका, कहीं ऐसा न हो कि राजनीतिक अस्थिरता का दौर एक बार फिर से चालू हो जाए। इस लोकतन्त्र को बचाने का भागीरथ प्रयास एक बार फिर किया जा रहा है कहीं वह असफल न हो जाए। महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण को मैं कल पढ़ रहा था। उन्होंने ठीक ही कहा है कि "राष्ट्रपति शासन लोकतान्त्रिक व्यवस्था का विकल्प नहीं हो सकता है। लोकतन्त्र का यह मूल मन्त्र है कि जनता के वर्तमान और भविष्य का निर्धारण उनके द्वारा चुने हुए जनप्रतिनिधि करें।" लोकतान्त्रिक व्यवस्था में चुनाव इसका आधार है। जनप्रतिनिधियों के द्वारा मिलकर सरकार बनाना इसकी जरूरत है। तेरहवीं विधान सभा को हमने देखा है। 6 महीने तक सरकार नहीं बन पायी थी। इस बार भी पौने तीन महीने बीत गये थे। बिना किसी दायित्व का निर्वहन करते हुए जब हम अपनी सुविधाओं का उपयोग करते हैं तो जनता के मन में हमारे प्रति, हम महसूस करें या न करें, हमारे प्रति श्रद्धा का भाव कम हो जाता है। इस बात को हम महसूस करते हैं और इसीलिए हमारा यह दायित्व होता है कि जब हम चुनकर आये हैं तो सरकार बनायें। यही प्रयास समाजवादी पार्टी ने भी किया था। यदि उनकी सरकार बनी होती तो आज जो सत्ता पक्ष में बैठे हैं, उनका दायित्व होता कि इस सरकार को चलाने देने में अपनी राजनैतिक भूमिका वे अदा करते। मैं प्रशंसा करना चाहता हूं कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की और बड़े भाई प्रमोद कुमार जी की, उनके नेतृत्व में जो निर्णय लिया गया। प्रमोद जी ने साफ-साफ कहा था कि जब समाजवादी पार्टी बहुमत सिद्ध करने में सफल होगी, अपने सदस्य संख्या बता पायेगी, तब हम तय करेंगे कि हम उनका समर्थन करेंगे कि नहीं। आज खण्डित जनादेश की बात करते हैं, जब समर्थन नहीं करेंगे तो सरकार कैसे चलेगी ? शादी अगर की है तो गौना और बच्चा दोनों होना चाहिए। अध्यक्ष जी, मैं कहना चाहता हूं कि विवाह के बाद जब औरत बांझ होकर वापस जाती है तो परिवार की निगाहें बदल जाती हैं।

अनुबन्धं क्षयम् हिंसाम् अनवेक्ष्य च पौरुषम् ।

मोहाद् आरभ्यते कर्म यतत् तामस उच्यते ॥"

किसी भी काम के परिणाम का, उससे होने वाली हानि का, उससे होने वाली हिंसा का और अपनी क्षमता का, इन चारों चीजों का मूल्यांकन किये बिना मोह में ग्रसित होकर, भावों में बहकर कोई निर्णय लिया जाता है तो ऐसे काम को तामसिक काम कहते हैं । हम जानते हैं कि यह सरकार चलेगी और यदि नहीं चलेगी तो पुनः चुनाव होंगे । राजनैतिक अस्थिरता आयेगी, आर्थिक खर्च बढ़ेंगे और कोई गारन्टी नहीं कि इससे बेहतर सरकार आये । मैं आपका समय नहीं लेना चाहता हूं एक दृष्टान्त देना चाहता हूं, महाभारत में का–यक्ष का प्रश्न–को पथ कौन सा रास्ता है ? धर्मराज युधिष्ठर ने जवाब दिया–तर्कोऽप्रतिष्ठा श्रुतियोविभिन्नाः, नेको मुनिः यस्य मतम् न भिन्नम् । धर्मस्य तत्वम् निहितम् गुहायाम्, महाजनों येन गताः स पन्था । अर्थात् तर्क बहुत से हैं, श्रुतयां अनेकों हैं, कोई एक मुनि नहीं है जिसकी बात अन्तिम है, धर्म के मूलतत्व गुहस्थ हैं इसलिए महाजन जहां जायें वही सही है ।

किसकी कितनी संख्या है मैं इसकी बात नहीं करता । मैं स्वयं भारतीय जनता पार्टी को हराकर आया हूं यह सत्य है । मैंने कहा था कि मैं एक अकेला हूं और इस भारतीय जनता पार्टी से बड़ा बी०जे०पी० हूं । भारतीय जनता पार्टी के पास इस पट्टे में इस रंग के अलावा इसमें एक हरा रंग और है जिस पार्टी को आप फासिस्ट कहते हैं । मेरे लिए भी आप एक शब्द चुन लें और अगले सत्र में उसी नाम से विभूषित करें । माननीय मुख्य मंत्री जी यहां पर उपस्थित नहीं हैं । मेरी कोई व्यक्तिगत आकांक्षा नहीं है, मैं अपने क्षेत्र की आकांक्षाओं के बारे में माननीय अधिष्ठाता महोदय के माध्यम से कहना चाहता हूं कि हमारे क्षेत्र में विकास योजनायें अधूरी पड़ी हैं । पूर्वी उत्तर प्रदेश में बाढ़ में बह गया । धर्मशाला का पुल अधूरा पड़ा है । मेडिकल कालेज बन्द होने की कगार पर हैं । हरिशंकर जी कह रहे थे इसलिए मैं कह रहा हूं । हमारे क्षेत्र की आकांक्षायें हैं आज हम विश्वास कर रहे हैं लेकिन हमारे क्षेत्र की आकांक्षा पूरी नहीं हुई तो विश्वास करने का प्रोनोट हमने लिखकर नहीं दिया है । हमारे क्षेत्र की आकांक्षायें पूरी होनी चाहिए । इन्हीं शब्दों के साथ मैं विश्वास मत का समर्थन करता हूं ।

* श्री दीनानाथ कुशवाहा–

अधिष्ठाता महोदय, मैं सबसे पहले नेता सदन के द्वारा प्रस्तुत विश्वास मत का विरोध करता हूं । हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है । हर पांचवे वर्ष यहां चुनाव होते हैं प्रदेश की जनता के साथ अपनी भागीदारी करने का मौका मिलता है । प्रदेश की 14वीं विधान सभा के जब चुनाव हो रहे थे, चुनाव के बाद परिणाम आये तो सबसे बड़ी पार्टी के रूप में समाजवादी पार्टी आयी । नैतिकता और मानवता के आधार पर सबसे बड़ी पार्टी को सरकार बनाने के लिए बुलाना चाहिए था ।

(मेजें थपथपाई गयीं)

लेकिन राज्यपाल महोदय ने संवैधानिक जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं किया इसका मैं विरोध करता हूं । अभी डा० अम्बेडकर के बारे में बात कही गयी डा० अम्बेडकर ने पुस्तकें लिखी हैं चाहे वह हिन्दी में हों चाहे वह अंग्रेजी में हों मैंने उनकी पुस्तकों का अध्ययन किया है । डा० अम्बेडकर का सपना था कि

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

सबको समान शिक्षा, सबको रोजगार मिले, सबको न्याय मिले, सबको कपड़ा मिले, सबके चेहरे लाल दिखायी दें, किसी के चेहरे पर झुर्री न दिखायी दे । डा० अम्बेडकर की बात को किसी सीमा में बांधकर नहीं रखा जा सकता है इसमें सारा दोष भारतीय जनता पार्टी को नहीं दे सकते हैं, जब चुनाव का समय आता है तो यह कहते हैं कि भारतीय जनता पार्टी देश तोड़क है, देश को गड्ढे में गिराने का काम भारतीय जनता पार्टी कर रही है और जब चुनाव हो जाते हैं तो भारतीय जनता पार्टी अच्छी हो जाती है इस तरह का बेमेल गठबन्धन जहां विचारों का समन्वय नहीं है, आपको दो बार मौका मिला आपको दो बार भारतीय जनता पार्टी ने सरकार बनाने का मौका दिया ।

आपने सरकार चलायी फिर गठबन्धन टूट गया मैं कहना चाहूंगा जब मुगल साम्राज्य था तो हुमायूं के मरने के बाद दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठने का सवाल आया उस समय अकबर की उम्र 14 वर्ष की थी अकबर के संरक्षक के रूप में बैरम खां को सत्तारूढ़ करने का काम किया गया जैसे ही अकबर को गद्दी मिली पंजाब में विवाद शुरू हो गया, अकबर ने बैरम खां को पंजाब भेजा पंजाब का विद्रोह दब गया । आज जो भारतीय जनता पार्टी बहुजन समाज पार्टी को समर्थन देकर सरकार चला रही है, मैं यह कहना चाहता हूं कि आज जो प्रदेश और देश की हालत पर आदरणीय नेताओं ने बड़े विस्तार से चर्चा की, मैं आपका ध्यान आकृष्ट नहीं कराना चाहता हूं, लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि हिन्दी साहित्य के एक महान कवि अब्दुल रहीम खानखाना जी, बैरम खां के पुत्र थे उन्होंने कहा था कि :–

"कह रहीम कैसे निभे बेर केर के संग,

वह डोलत रस आपनो, फाटत उनके अंग ।"

यह बेमेल गठबन्धन है और जिसने प्रदेश की जनता को, यह वही साढ़े पांच साल वाली सरकार रही जिसमें 100, 125 मंत्री थे, खजाने को लूटने का काम किया आज इसकी पुनरावृत्ति होने जा रही है । आने वाले दिनों में इसका दुष्परिणाम प्रदेश की 16 करोड़ जनता को झेलना पड़ेगा । ऐसा लगता है कि सरकार को बचाने के लिए एक लम्बे-चौड़े मंत्रिमण्डल का गठन किया जायेगा । मैं यहीं अपनी वाणी को विराम देते हुए माननीय नेता सदन द्वारा लाये गये प्रस्ताव का विरोध करता हूँ ।

(इस समय दिन के 3 बजकर 02 मिनट हुए ।)

* आवास, नगर विकास, पर्यटन, श्रम, पंचायती राज, संस्थागत वित्त, दुग्ध विकास, पशुधन एवं वैकल्पिक ऊर्जा मंत्री (श्री लालजी टण्डन)–

मैं इतनी देर की चर्चा में भ्रम में पड़ गया था । सारा इतिहास-भूगोल सदन में आ गया, तो मैं समझता हूं कि अब जो महामहिम श्री राज्यपाल का अभिभाषण होगा उसमें चर्चा करते समय कुछ नहीं रहेगा और आपको यह निर्णय लेना पड़ेगा कि सब तो चर्चा में आ गया है अब बाकी क्या है । मान्यवर, कुछ चीजें मैं सामने बैठे हुए मित्रों से करूंगा कि मैंने कभी किसी को उनके भाषण में व्यवधान डालने की कोशिश नहीं की ।

(व्यवधान)

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मान्यवर, मैं नीतिगत बातें ही कहना चाहता हूं और कृपा करके मुझे आपका संरक्षण चाहिए कि मैं अपनी बात कह सकूं। किसने क्या कहा आज वही कहानी है कि पहले पत्थर मारे कौन यह बताये। जनसंघ से लेकर आज तक, मैं कांग्रेस की बात नहीं करता हूं, लेकिन जो हमारे साथी बैठे हैं मैं उनसे कहना चाहता हूं कि सामने बैठे हुए कौन से ऐसे दल हैं जिनके साथ भागीदारी न हुई हो। सबसे ज्यादा वैचारिक मतभेद हुआ करते थे कम्युनिस्ट पार्टी से। 67 में कम्युनिस्ट पार्टी और जनसंघ एक साथ बैठे थे और सरकार बनायी थी। एक ही उद्देश्य था। देश में धीरे-धीरे कांग्रेस का जो उस समय विश्वास था जो शासन था उसके प्रति लोगों में एक विश्वास बनता जा रहा था कि इसको हटाया नहीं जा सकता। तो सब दल के मनीषी उसमें थे। राम मनोहर लोहिया जी और पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी ने यह कहा था कि लोकतन्त्र में यह विश्वास कि एक ही दल की सरकार सत्ता में बने रहने की अधिकारी है इस भावना को तोड़ने के लिए अपने मतभेद मिटाकर एक संयुक्त दल की सरकार बनाने के लिए एक गैर कांग्रेस दल की सरकार बने। आपने कहा कि एक अजीब बात हो गयी है मान्यवर, मैं कह सकता हूं कि अगर आज मुलायम सिंह जी यहां पर होते तो समाजवादी पार्टी का कोई सदस्य इस तरह की हरकत नहीं करता। मैं धन्यवाद देना चाहता हूं श्री कल्याण सिंह जी को जिन्होंने मानवीय रिश्ते को बनाये रखते हुए अपनी बात कही। मान्यवर, यहां पर कितने लोग हैं जो सेक्युलर का अर्थ जानते हैं! वे सेक्युलर का अर्थ समझते हैं कि सम्प्रदाय के बारे में जितनी गलतफहमी पैदा कर सकते हो करते जाओ यही इनके लिए सेक्युलरिज्म का अर्थ है। मित्रों, जैसे देश में सब दल हैं वैसे ही भारतीय जनता पार्टी भी है। मुझे यहां पर कहना है कि रास्ते जुदा-जुदा हैं पर मंजिल तो एक है। सही मानसिकता, पवित्रता अगर आप में आ जाये तो शायद इसे आप समझ सकें। कोई मन्दिर में जाकर नमाज पढ़े, कोई मजार में जाकर नमाज पढ़े। (व्यवधान) मैं चाहता हूं कि खुदा आपको सद्बुद्धि दे। मेरे चुनाव क्षेत्र में इतने विरोधी प्रचार के बावजूद जितना सम्मान मुझे यहां के मुसलमानों से मिला, मुस्लिम भाइयों का समर्थन मिला है यह एक उदाहरण है। राजनाथ जी ने कहा कि दो विचारों का आजादी से पहले भी इसका जन्म हुआ था और देश को बचाने के लिए अन्तिम अस्त्र भी यही होगा और उनकी अपनी सरकार थी केरल में और किसी विषय के ऊपर समाजवादी पार्टी नेता के खिलाफ बोले थे तो वहीं से कहा कि सरकार को भंग कर दो। मल्लन भानु पिल्ले। जबकि अपना स्पष्ट बहुमत था। (व्यवधान) यह राजनीति में है "मुण्डै-मुण्डै मतैः भिन्ना।" हर व्यक्ति का अपने सोचने का ढंग अलग होता है। दुनिया में लोकतन्त्र की परिभाषा यहीं से पैदा हुई। आप एक तरफ बोलते हैं कि पिछड़े, कुचले लोगों के हित की बात करो। इससे बड़ी बात भी कुछ हो सकती है कि समाज का जो कमजोर तबका है उसकी बेटी मुख्य मंत्री बनी इतने बड़े राज्य की। इससे आत्म सन्तोष समाज को होता है। (सत्ता पक्ष की ओर से मेजों की थपथपाहट) (व्यवधान)

यह अन्तिम अवसर नहीं है सदन के अन्दर, आप भी बहुमत को इकट्ठा कर लेंगे, अगर शक्ति होगी तो सरकार को गिरा दीजिये। मैं कह रहा हूं कि यह अन्तिम अवसर नहीं है। विपक्ष का हमेशा यह अधिकार रहा है कि सत्ता पक्ष को अल्पमत में कर दे, उसी दिन उसकी सरकार बन जायेगी। हां यह जरूर है कि बी०जे०पी० कुछ लोगों के लिए अप्रिय हो सकती है। मैं यहां पर रहीम की बात कहूं। यहां बहुत से सूफी सन्त जायसी जैसे हुए हैं, देश की मिट्टी से प्रेरणा लेकर उन्होंने यह भेद मिटा दिया था। "रहिमन इन तुरकान पर कोटिन हिन्दू बारिये।"

वे बहुत से मुस्लिम, जो इस धरती से प्यार किया था और यहीं के होकर रह गये। उनका मानना था कि चाहे उनके ऊपर करोड़ों हिन्दुओं का बलिदान हो जाये। मैं तो उस परम्परा की बात कहता हूं। जहां मैं उन लोगों को, यहां कुछ लोग हैं जो जानबूझकर जानते हैं कि विष है, लेकिन उसका इस्तेमाल करते हैं।

(व्यवधान)

हम यहां पर देश के चन्द मुस्लिमों के लिए, मैं कोई फर्क नहीं समझता, लेकिन मैं उनकी इज्जत कभी नहीं कर सकता, इस सदन में खड़े होकर कहें कि आज धरती का इस देश का बटवारा जरूरी है। आज हमें जिस धरती ने पैदा किया है हम जो कुछ हैं भारत माता की देन है अगर कोई इसे डायन कहेगा तो कभी उसे स्वीकार नहीं कर सकता हूं, अगर यह साम्प्रदायिकता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। किसी ने कब कहा था, यह आज का विषय नहीं है। जब एक बार सिलसिला चला, मिलजुलकर यहां पर सरकारें बन चुकी हैं जो एक दूसरे के कट्टर विरोधी थे, तो हम यह तीसरी बार बना रहे हैं। बोलिये आपको क्या आपत्ति है ? अगर इस देश में कमजोरों को ऊपर उठाना है और सामाजिक समरसता लाना है तो इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है। कोई कोशिश करता है, हमारा संकल्प है, हमारा निश्चय है, हमारा विश्वास है कि हमारा इस रास्ते से, एक बड़ा भारी सामाजिक उद्देश्य है उसकी बात करूंगा, हम अकेले नहीं कर रहे हैं। जिनकी शाखायें आज अनेकों दलों के रूप में सम्बद्ध हैं उन्होंने भी यही कोशिश की है कि इस देश में सामाजिक समरसता हो। राजनीति में भी मैं उन लोगों में से हूं कि विभिन्न विचारधाराओं के अलग-अलग होते हुए भी पारिवारिक सम्बन्ध रहते हैं। अभी कल्याण सिंह जी ने जो कहा कि जो उनकी भावना है, वह मेरी भावना है, लेकिन कभी-कभी आप सन्देह कर रहे हैं। मुझे तो सन्देह इस बात पर हो रहा है कि आप जिनके साथ बैठ रहे हैं उन्होंने कभी किसी उभरते हुए नेता को पार्टी में बने रहने दिया। जो उनके दल में बड़ा भारी स्थान रखते थे आज वो कहां हैं। इसलिए मैं अभी भी यह चाहता हूं कि अगर राजनाथ सिंह के भाषण को समझने की आपके पास शक्ति होती तो आप जानते जितना सारगर्भित भाषण श्री राजनाथ सिंह ने दिया है उसको आप माने या न माने, मैं तो समझता था कि यह छोटा सा दो लाइन का प्रस्ताव है। आपने ऐसा कई मौकों पर दिखाया है कि एक सर्वानुमति बन गयी। आपको वह अवसर हमेशा मिलेंगे लेकिन कम से कम यह स्थिति तो बननी चाहिए कि कहीं न कहीं किसी बिन्दु के ऊपर, विषय के ऊपर अपने विचार रखें। पता नहीं राज्यपाल जी के अभिभाषण किसी भी नई सरकार के या जो पुरानी सरकार चलती आयी है, वह भी अगले वर्ष क्या होगा ? जब यह सदन बैठता है, महामहिम राज्यपाल महोदय, सम्बोधित करते हैं। अभी उसके ऊपर चर्चा बाकी है आप जितना चाहें उसमें बोल सकते है आपको किसी विषय पर अपने विचार रखने का कोई प्रतिबन्ध नहीं है। मैं आपसे फिर कहना चाहता हूं कि आपको इसमें कौन सा कार्यक्रम है, क्या मामला है इस सबका कोई अर्थ नहीं है।

श्री अधिष्ठाता–

नगर विकास मंत्री जी कृपया।

*श्री लालजी टण्डन–

मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं, आपको प्रशिक्षित करने के लिए मैं कह रहा हूं। मैंने लाल बत्ती नहीं देखी, क्षमा के साथ अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

*कुंवर रेवती रमण सिंह–

माननीय अधिष्ठाता जी, मैं नेता सदन द्वारा प्रस्तुत विश्वासमत के विरुद्ध बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ और नेता प्रतिपक्ष ने जो विरोध किया है उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूँ।

मान्यवर, यह इतनी बड़ी विडम्बना है चौदहवीं विधान सभा में। जनता ने जिनके खिलाफ मत दिया आज वह सत्ता में बैठे हैं। यह इतनी बड़ी विडम्बना है, मैंने तेरहवीं विधान सभा में कहा था कि महात्मा गांधी ने कहा था कि कोई मंजिल को पाने के लिए रास्ता पवित्र होना चाहिए लेकिन पिछली बार भारतीय जनता पार्टी ने वह पवित्र रास्ता छोड़कर एक ऐसा गठबन्धन बनाया जिसमें ये पूर्व नेता बहुजन समाज पार्टी स्वामी प्रसाद जी बैठे हैं यह इस बात के गवाह है कि किस तरह से बहुजन समाज पार्टी और कांग्रेस पार्टी को तोड़कर और अन्य दलों को तोड़कर भारतीय जनता पार्टी ने एक नापाक गठबन्धन ह्यहमबनाकर सरकार बनाने का काम किया था उसका नतीजा भी सामने आया। मैंने कहा था कि इसका नतीजा भी आपको भुगतना पड़ेगा। 100 आदमियों का जम्बोजेट कैबिनेट बनाया और जिस तरह से प्रदेश की जनता को लूटने का काम उस गठबन्धन ने किया उसी का नतीजा है कि 177 से घटकर 88 पर आ गये और यह भी एक विडम्बना है कि आपके पार्लियामेन्ट्री बोर्ड ने यह प्रस्ताव पास किया कि आप विपक्ष में बैठेंगे और जब खतरा दिखाई पड़ा तो डेढ़ माह तक आपने बहुजन समाज पार्टी से समझौता नहीं किया और जब दिल्ली की सरकार को खतरा दिखाई पड़ा और जब यह लगा कि तेलगूदेशम पार्टी विरोध कर सकती है तब आपने बहुजन समाज से गठबन्धन करके मायावती जी को मुख्य मंत्री मान लिया। यह गठबन्धन अवसरवादी है।

राजनीति में अगर अवसरवादिता को प्रश्रय दिया गया, 100 आदमी का गठबन्धन बना दिया अब आपको भी 80 आदमी का कैबिनेट बनाना पड़ेगा। नतीजा क्या है आज खजाना खाली है। राजनाथ सिंह ने कहा था कि 40 हजार लोगों को नौकरी देगें क्या एक आदमी को भी नौकरी मिल पाई ? उन्होंने यह भी कहा कि माननीय राज्यपाल महोदय ने डेढ़ माह का समय दिया, मान्यवर, क्या कहा उन्होंने कि सूची दीजिए। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि आप ही के सर्वोच्च नेता जो आज प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे हैं, विद्यमान हैं उन्होंने 1996 में इसी लखनऊ में भूख हड़ताल किया था, क्यों किया था कि तत्कालीन राज्यपाल भण्डारी जी ने उनको बुलाया नहीं था।

सार्वजनिक उद्यम मंत्री (श्री लालजी वर्मा)–

जब जगदम्बिका पाल जी को मुख्य मंत्री बना दिया था तब यह हुआ था। आप भूल रहे हैं।

*कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, उन्होंने कहा था कि बहुमत सिंगिल लारजेस्ट पार्टी को सरकार बनाने के लिए बुलाना चाहिए और आज जब जनादेश समाजवादी पार्टी को मिला तो भूल गये।

मैंने स्वयं राज्यपाल महोदय से कहा कि बोम्मई केस में मा० सर्वोच्च न्यायालय ने यह कह दिया है कि जो सिंगल लार्जेस्ट पार्टी होगी, उसे बुलाया जायेगा और सदन में बहुमत सिद्ध करने की बात कही।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

(सत्तापक्ष के कुछ सदस्यों के बोलने पर)

श्री अधिष्ठाता–

कृपया माननीय सदस्य को बोलने दें ।

*कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, सरकारिया कमीशन में भी यह तय हुआ था कि बहुमत सदन में सिद्ध किया जायेगा, राजभवन में नहीं सिद्ध किया जायेगा । मान्यवर, इंदिरा जी की भी अल्पमत सरकार को शपथ दिलायी गयी थी, नरसिंह राव की अल्पमत सरकार को शपथ दिलायी गयी थी, अभी नितीश कुमार की भी अल्पमत सरकार को शपथ दिलायी गयी है । मान्यवर, कोई तो परम्परा मानेंगे ? मान्यवर, न संविधान मानेंगे, न परम्परा मानेंगे, केवल अवसरवादिता, केवल कुर्सी और लाल बत्ती के लिए आप सबको तिलांजलि देने के लिए तैयार हैं । कोई सिद्धान्त और कोई उसूल है ? जो मैंने कहा है, यदि वह गलत है तो तथ्यों के द्वारा प्रमाणित कर दीजिए । मैं मुख्य मंत्री जी को एक बात बताना चाहता हूं उन्होंने यह कहा कि माननीय मुलायम सिंह यादव ने कहा था कि वहां परिंदा पर नहीं मारेगा, मैं बधाई दूंगा जब तक वह मुख्य मंत्री रहे, बाबरी मस्जिद शहीद नहीं हुई, चाहे उसके लिए कोई भी कुर्बानी देनी पड़ी हो, उनकी सरकार चली गयी लेकिन बाबरी मस्जिद शहीद नहीं हुई । उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थवश कुछ नहीं किया, उन्होंने संविधान की रक्षा की, उन्होंने कानून की रक्षा की ।

मान्यवर, यह जो बेमेल समझौता हुआ है, यह कितने दिन चलेगा ? दो बार टण्डन जी राखी बंधवा चुके हैं, फिर बांधा की नहीं, मैं नहीं जानता । यह वही टण्डन जी हैं जिन्होंने सरकार गिराने की पूरी भूमिका अदा की थी और आज आपको दलित की बेटी याद आ गयी । जब दो बार सरकार गिराई तब दलित की बेटी नहीं याद आ रही थी । तब आपको कुर्सी याद आ रही थी । मान्यवर, उत्तर प्रदेश की जनता बड़ी बुद्धिमान है और मैं एक बात बता दे रहा हूं, याद कर लीजिएगा । जब अगली बार चुनाव होगा तो यह 88 से 30 पर आ जायेंगे । यहां की जनता आपको माफ करने वाली नहीं है । जनता ने जनादेश दिया था विपक्ष में बैठने को लेकिन आपकी किसी भी तरह दिल्ली की सरकार चलती रहे. उसके लिए यह गठबन्धन बना लिया । आपकी कोई नीति है, कोई सिद्धान्त हैं ? आप 5 साल सरकार चलाने की बात करते है । आज 36 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे हैं । आज उत्तर प्रदेश में बिजली नहीं है । अभी आपने गेहूं का रेट क्या बढ़ाया 10 रुपये और उसकी भी ख़रीद नहीं हो रही है और जब मड़ाई का सीजन है तो गांवों में बिजली दे नहीं रहे ।

मुख्य मंत्री जी ने कहा कि बाबरी मस्जिद को ध्वस्त कर दिया गया लेकिन अब कोई मस्जिद को छू नहीं पाएगा । मैं आपसे कहूंगा कि क्या कोई मस्जिद ये ध्वस्त नहीं करेंगे ? इनके सिद्धान्त और उसूल उस पर बने हुए हैं । मान्यवर, आज आपकी सरकार जो बेमेल, अनैतिक, बिना सिद्धान्त की बनी है । आप क्यों बार-बार कहते हैं कि सरकार पांच साल चलेगी, हम तो नहीं कहते हैं कि पांच साल नहीं चलेगी । आप ही लोग कहते हैं । इसका मतलब है कि आज भी आपके मन में एकरूपता नहीं है और

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मौका पाते ही आपने स्वयं कहा कि जब आप बहुमत कर लो, इस सरकार को गिरा दो । आपने ही कहा टण्डन जी ।

*श्री लालजी टण्डन–

मान्यवर, मैंने कहा था कि इस देश में ऐसी परम्पराएं हैं कि डा० लोहिया ने अपनी ही सरकार को गिरा दिया था । हम पूरे संकल्प के साथ चल रहे हैं लेकिन लोकतंत्र में कोई स्थाई चीज नहीं है । उसका अर्थ आपने दूसरा लिया तो हम क्या करें ? अगर यह होता तो क्यों नहीं प्रमोद कुमार आपको समर्थन दे रहे हैं ।

*कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, जो हमने कहा उसको आपने सत्यापित कर दिया । आज आप स्वयं देखेंगे कि जब पत विभाजन होगा तो प्रमोद कुमार हमारे साथ होंगे ।

श्री लालजी टण्डन–

इससे ज्यादा अवसरवादिता क्या होगी कि सरकार बनाने के लिए आपको समर्थन नहीं दिया और यहां पर आपका सहयोग करेंगे ?

*कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, इस प्रदेश को इन्होंने दिया क्या ? मान्यवर, अभी ए०पी०सी० की रिपोर्ट आ गई । अभी गेहूं का उत्पादन हर साल के मुकाबले में कम पैदा हुआ । आखिर आपने प्रदेश को साढ़े पांच साल में क्या दिया ? मैं यह दावा करता हूं कि यह सरकार बेमेल गठबन्धन है । यह प्रदेश की जनता का हित नहीं कर पाएगी । इससे जनता की भलाई नहीं होगी । अगर गरीबी दूर करनी है तो आठ प्रतिशत की कार्य योजना लानी होगी । मान्यवर, मैं इस सरकार का विरोध करता हूं और यह जरूर कहता हूं कि भले ही बहुजन समाज पार्टी ने इनके साथ सरकार बना लिया है लेकिन यह सरकार चलने वाली नहीं है और यह सरकार जनता की कोई भलाई नहीं कर पाएगी ।

*संसदीय कार्य, वस्त्रोद्योग एवं रेशम उद्योग मंत्री (श्री सुखदेव राजभर)–

मान्यवर, आपने नेता सदन माननीया मुख्य मंत्री जी के विश्वास मत के समर्थन में मुझको बोलने का मौका दिया इसके लिए मैं आभार प्रकट करता हूं । हमारे सम्मानित नेता प्रतिपक्ष एवं अन्य पार्टी के नेतागण ने इस पर अपना विरोध प्रकट किया है । हमको जो आभास हो रहा है कि विपक्ष मे बैठे माननीय सदस्यों को एक ही शब्द कोष की किताब बांटी गयी है और रात में ही यह ट्रेनिंग दी गयी कि एक ही शब्द का प्रयोग करो । आज लगभग सभी लोग एक ही शब्द "बेमेल" का प्रयोग कर रहे हैं कि यह बेमेल गठबन्धन है । यहां यह बात आयी कि मैंने पहले ही कहा था कि हम प्रतिपक्ष में बैठेंगे । जब सत्ता पक्ष ही नहीं रहेगा तो प्रतिपक्ष कहां से आयेगा ? जब हम इस सभा मण्डप में बैठेंगे तो एक सत्तापक्ष रहेगा दूसरा विपक्ष रहेगा । प्रतिपक्ष में बैठने के लिए सत्तापक्ष का होना जरूरी है ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नही किया ।

मान्यवर, यह सब तो ऐसे लड़ रहे हैं कि जैसे एक गांव में पति-पत्नी लड़ा करते थे। पति कहता था कि मैं लड़के को इन्जीनियर बनाऊंगा जबकि पत्नी कहती थी कि मैं डाक्टर बनाऊंगी। इसी बात को लेकर लड़ते रहते थे। तो गांव के एक आदमी ने पूछा कि क्यों रात भर लड़ते रहते हो तो उन्होंने अपनी बात बतायी, तो उस आदमी ने कहा कि लड़के को बुलाओ अभी फैसला हो जायेगा तो कहा कि लड़का तो है ही नहीं। जब सत्ता पक्ष नहीं रहेगा तो प्रतिपक्ष कहां से आयेगा ? आज मान्यवर, मैं इसलिए समर्थन कर रहा हूं कि चुनाव के बाद प्रदेश की जनता, आप अपने निर्वाचन क्षेत्रों में गये होंगे सभी समाज के लोग, अल्पसंख्यक, दलित व अन्य समाज के लोगों ने कहा कि हमने आप लोगों को चुनकर भेज दिया है, प्रदेश समस्याओं से जूझ रहा है, ऐसी स्थिति में एक लोकप्रिय सरकार बननी चाहिए। अभी हमारे तमाम माननीय सदस्य नये चुनकर आये हैं, एक-दो सदस्य कह सकते हैं कि कल-परसों चुनाव करा दें या जो अनुचित तरीकों से कमाये हुये धन का इस्तेमाल करके आये हैं वही यह कहेंगे। परन्तु जो धूल-माटी फांक-फांक कर दिन भर दौड़ा होगा वह चुनाव में कतई नहीं जाना चाहता है। अभी तमाम भाईयों ने कहा कि बेमेल गठबन्धन की सरकार बना चुके हैं। यह सरकार जनभावना के अनुरूप बनी है और अभी हमारे नेता सदन ने स्पष्ट किया कि जनभावनाओं को कभी ताक पर नहीं रखा जायेगा। जिन जरूरतों की तरफ नेता प्रतिपक्ष ने इंगित किया कि बेरोजगारों, किसानों के बारे में कोई स्पष्ट बात नहीं कही गयी। आप मौका तो दीजिए और खुले दिल से मौका दीजिए जैसे विधान सभाध्यक्ष के चुनाव में किया। मात्र परिकल्पनाओं और आशंकाओं के आधार पर विरोध किया गया। यहां जो भी बातें कही गयी वह केवल आशंका है। आप केवल परिकल्पना के आधार पर विरोध कर रहे हैं।

आदमी और इंसान को हर आदमी मौका देता है। अगर आपको जन भावना का आदर है तो दलित गरीब, अल्पसंख्यकों और सर्वसमाज के हितों का ध्यान रखना होगा। आपने अभी अनेक समस्याओं से अवगत कराया है, अगर आप समस्याओं को बताते हैं तो आपको हम लोगों को एक मौका देना चाहिये ताकि आपने जिन समस्याओं को इंगित किया है यह लोकप्रिय सरकार उन समस्याओं को दूर कर सके। मैं कहना चाहता हूं कि सभी महापुरुषों ने नारी को सम्मान दिया है। डाक्टर राम मनोहर लोहिया हमेशा नारी सम्मान की बात करते थे। आज प्रदेश के दलित समाज की एक बेटी मुख्य मंत्री बनी हैं तो उनको सम्मान देना चाहिये। डाक्टर राम मनोहर लोहिया को मानने वाले लोग अगर नारी को सम्मान इस प्रदेश में देंगे तो एक अच्छी खबर जायेगी, एक अच्छा मैसेज जायेगा। आज हम सब लोगों को इस प्रस्ताव का समर्थन करना चाहिये।

अभी नेता प्रतिपक्ष ने प्रदेश की समस्याओं को बताया जिसका नेता सदन ने संज्ञान लिया। अगर इन समस्याओं को दूर करना है तो इस लोकप्रिय सरकार को मौका मिलना चाहिये। इस लोकप्रिय सरकार का गठन जन भावनाओं के अनुरूप किया गया है हमारा सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि वैचारिक मतभेद तो होते रहते हैं लेकिन फैसले कभी-कभी जनता के हित को देखकर लिये जाते हैं। जब नदियों की धारायें संगम कर सकती हैं तो विचारों और जरूरतों का भी संगम करना पड़ेगा। मानवता और इंसानियत का संगम होना चाहिये। इस देश और प्रदेश की भलाई के लिये हम लोगों की सरकार बनी है। आपको याद होगा पिछली बार 6 महीनों की सरकार में आपने देखा होगा कि किसी भी समाज को कष्ट नहीं हुआ। आज जो हमारे गरीब भाई गांवों में, पीड़ित लोग गांवों में हैं, नंगे पैर हैं अगर उनको गोबर फेंकने का काम मिला होगा तो वह गोबर फेंकने का काम कर रहे होंगे और यदि उनको पाखाना फेंकने का काम मिला होगा तो वह पाखाना फेंक रहे होंगे और उन गरीबों पीड़ितों के मन में यह

आशा कि लोकप्रिय सरकार बने तो उनकी समस्यायें दूर हों और उनकी आकांक्षाओं और उम्मीदों की पूर्ति हो। माननीय नेता प्रतिपक्ष आपको याद होगा कि गरीबों को कायदे, कानून और योजनाओं से लाभ नहीं मिल पाता है। पिछले समय एक छोटा सा कानून बना है तो आपने बहिन मायावती के शासन काल में उस कानून को खत्म करने की मांग की और कहा कि यह कानून खत्म कर दिया जाय। गरीब के पास पैसा नहीं है, हथियार नहीं हैं जो खुली मड़ैया के नीचे रहते हैं उनके लिये ऐसे कानून की जरूरत थी ऐसे कानून को चलना चाहिये। अभी यहां पर बलिया का उदाहरण दिया गया। मेरा कहना है कि आज जो यह प्रस्ताव पेश किया गया है उस पर सत्ता और विपक्ष को सुदृढ़ सरकार के लिये, सरकार को चलाने के लिये समर्थन देना चाहिये ताकि इस प्रदेश के पीड़ितों, गरीबों का उत्थान हो सके। हम लोगों को, हमारे बाबा साहब अम्बेडकर ने हमेशा नारी को सम्मान देने की बात कही है और हमेशा उसके लिये संघर्ष किया है, आज उसी नारी सम्मान और गरीब जनता की तरक्की के लिये यह बहुजन समाज पार्टी और भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है। यहां पर हमेशा बाबरी मस्जिद, राम मंदिर की बात कही जाती है। इस सरकार के गठन को बेमेल कहा जाता है। हमारे भारत की जो संस्कृति रही है उसमें विदेशी देश के बाहर के लोगों को भी देश में जगह देने की बात कही गयी है परन्तु आप लोगों ने कांग्रेस की अध्यक्षा को विदेशी कहा है यह इस देश का कल्चर नहीं रहा है। पता नहीं कैसे, प्रमोद कुमार जी ताल में ताल मिला रहे हैं। इनकी पार्टी के महासचिव ने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी से ज्यादा अगर कोई साम्प्रदायिक पार्टी है तो वह कांग्रेस पार्टी है। पाल साहब, पता नहीं कैसे ताल में ताल मिला रहे हैं ? आपने एक नारी को हिन्दुस्तान की नारी नहीं स्वीकार किया, उसे विदेशी कहा। जो मंदिर मस्जिद तोड़ने के मुल्जिम हैं उनको जोड़ते जा रहे हैं। अगर शब्दावली का इस्तेमाल करें तो आप कम अवसरवादी नहीं हैं। आप एक सीट जीतने के लिए समझौते कर सकते हैं, तो यहां तो जनता के व्यापक हितों को देखते हुए ही समझौता किया गया है। इसलिए मैं अनुरोध करता हूं कि नेता सदन ने जो प्रस्ताव किया है मैं उसका समर्थन करते हुए प्रतिपक्ष से उम्मीद करता हूं कि गरीब मां-बेटियों के हितों को ध्यान में रखकर उसका समर्थन करें।

*श्री जगदम्बिका पाल–

अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने इस चर्चा में भाग लेने का मुझे अवसर प्रदान किया। नेता सदन ने जो प्रस्ताव रखा है उस प्रस्ताव के विरोध में नेता प्रतिपक्ष ने व विरोध पक्ष में जिन सम्मानित नेताओं ने अपने विचार रखे मैं उससे अपने को सम्बद्ध करते हुए कोई अतीत की बात नहीं करना चाहता। न कोई पूर्व के दृष्टांत का उल्लेख करना चाहता हूं। क्योंकि इस पर विस्तार से पक्ष और विपक्ष से काफी बातें आ गई। मैं तो इस गठबन्धन के बारे में जो विश्वासमत लेकर आए हैं उसके बारे में कहना चाहूंगा। इस गठबन्धन की सरकार चलाने की क्या मंशा है जनता के प्रति कितनी उपयोगिता है, तुलसीदास जी ने लिखा है वह स्थिति इस गठबन्धन पर लागू होती है। "भई गति सांप छछूंदर केरी, उगलत खात न प्रीति घनेरी।" आपने दो बार मायावती जी की सरकार को समर्थन दिया लेकिन उनको उतारने का काम भी किया। आज फिर से समर्थन दिया है। चूंकि यह चुनाव पूर्व गठबन्धन नहीं था

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

इसलिए भारतीय जनता पार्टी या बहुजन समाज पार्टी के नेताओं ने एक दूसरे के लिए क्या कहा । लेकिन आज के वक्तव्यों से इस सरकार के कार्यकाल पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है ।

उत्तर प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष श्री सत्यदेव सिंह ने कहा स्थानान्तरण सदन में विश्वास मत हासिल करने के पहले बड़े पैमाने पर नहीं होना चाहिए । उन्होंने कहा कि आज जो तबादले हो रहे हैं उनमें भ्रष्ट लोगों को मलाईदार पदों पर तैनात किया जा रहा है । उन्होंने एक बार ही यह बात नहीं कही । दुबारा खीरी, लखीमपुर दौरे पर गए होंगे और पत्रकारों ने उनसे उल्लेख किया होगा कि आपकी सरकार है और आपके सम्मानित नेता इस तरह की बात कर रहे हैं तो उन्होंने इसका खंडन नहीं किया । मान्यवर, भारतीय जनता पार्टी के सम्मानित नेता ने भी इसका खण्डन नहीं किया है । इनके उपाध्यक्ष ने यह आरोप लगाया है कि भ्रष्ट अधिकारियों को फिर से वहीं विभागों में मलाईदार पदों पर तैनात किया गया है । मान्यवर, हम कह रहे हैं कि यह सरकार कितने दिन चलेगी । अभी यह लोग कहते हैं कि सरकार पूरे पांच वर्ष चलेगी और अभी लालजी टण्डन जी ने कहा कि हमने कोई गारन्टी नहीं ले रखी है कि सरकार कितने दिन चलेगी ? मान्यवर, एक तरफ कह रहे हैं पांच साल चलेगी और दूसरी तरफ उसका विरोध कर रहे हैं । मान्यवर, कम से कम यह प्रदेश की जनता की भलाई के लिये कोई न्यूनतम साझा कार्यक्रम लेकर आते । इसमें यह होता कि बहुजन समाज पार्टी की कौन-कौन सी प्राथमिकताएं हैं और भारतीय जनता पार्टी की कौन-कौन सी प्राथमिकताएं हैं जो यह प्रदेश की जनता के कल्याण के लिये करना चाहते हैं । इनके विचारों में भिन्नता है, हम समझते हैं । प्रदेश में चुनाव को टालने के लिये जनता के हित के लिये इन्होंने गठबन्धन किया है तो प्रदेश की जनता के प्रति, सदन के प्रति इनकी जवाबदेही है । सरकार बनाने से पहले कहते हैं कि दलितों, पिछड़ों की भलाई के लिये काम करेंगे लेकिन ऐसा कोई कार्यक्रम इन्होंने विश्वास मत प्राप्त करने से पहले पेश नहीं किया है । 5 साल तक भारतीय जनता पार्टी की सरकार रही है इन्होंने अति पिछड़ों और दलितों के लिये क्या किया ? बात चली थी, सरकार बनने से पहले कि हम समन्वय समिति बनायेंगे, न्यूनतम साझा कार्यक्रम बनायेंगे लेकिन कोई न्यूनतम साझा कार्यक्रम नहीं बना । यह पहली बार विश्वास मत ले रहे हैं बिना साझा कार्यक्रम को घोषित किये । इस सरकार के सामने प्रदेश की जनता के लिये कौन सी प्राथमिकताएं हैं ? आज प्रदेश की 80 प्रतिशत जनता गांवों में रहती है जो किसान है और जिसका कैश क्रोप गन्ना है । इस कैश क्राप गन्ने की आय से कितने किसानों की बेटियों के हाथ पीले होते हैं, किसी किसान के बूढ़े बाप की तीमारदारी होती है, उसके बच्चे के स्कूल की फीस जाती है आज जब उसकी सरकार बन रही है तो उन लोगों के हाथ में गन्ना विभाग दे दिया जाता है जिन्होंने 11 चीनी मिलें बन्द कर दीं निजी चीनी मिलों को लाभ देने के लिये । जब यह साझा सरकार बनी है तो कुछ शर्तें भी रहीं होंगी और उन्हीं के तहत ऐसे लोगों को यह विभाग दे दिया गया । पिछली सरकार में यह विभाग ऐसे लोगों के हाथों से लेकर नरेन्द्र सिंह जी को दे दिया गया था । यह सरकार व्यापारी की बैलेंस शीट नहीं है किस चीज में लाभ नहीं है तो हम नहीं चलायेंगे । अस्पताल चलते हैं लाभ नहीं मिलता तो बन्द नहीं कर दिये जाते, सड़कें बनती हैं उससे मुनाफा नहीं तो बनेगी नहीं । जन सुविधाओं के लिये काम करते हैं । चीनी मिल में घाटा होता है बन्द कर दी जाती है । कांग्रेस की सरकार ने चीनी मिलों को चलाया था कहा था कर्मचारियों को वेतन हम देंगे । 35 चीनी मिल खरीदीं थी, आज वे बन्द हो गयी हैं । 11 चीनी मिलें निगम की बन्द हो गई, प्राइवेट भी बन्द हो रही हैं । आज सड़कों की क्या हालत है ? 88 करोड़ों रुपये हमने दिया है इस सदन में सड़कों को गड्ढामुक्त बनाने के लिये । आज सड़कों में गड्ढे नहीं हैं बल्कि गड्ढे में सड़क है ।

गोरखपुर चले जायं, देवरिया चले जायं, किस जगह का नाम लें ? भ्रष्ट अधिकारियों को फिर से वही विभाग दे दिये गये हैं । आपने कहा कि फिर से चुनाव कराने में 400 करोड़ रुपये खर्च होगा इस खर्च से बचने के लिये गठबन्धन की सरकार बना ली है । एक जगह हम कई लोग बैठे थे, लालजी वर्मा बैठे थे, राय साहब बैठे थे हम जानते हैं आपने 400 करोड़ रुपये बचाने के लिये यह गठबन्धन की सरकार बनाई लेकिन विभाग में बैठे अधिकारियों ने 400 करोड़ रुपये कमायें हैं ।

कम से कम प्रदेश की जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा कुछ लोगों को लूटने के लिए नहीं दे सकते हैं, सरकार बन जाए और उसके नाते प्रदेश की जनता की चाहे जो स्थिति हो यह नहीं होना चाहिए । यह कहा गया कि चुनाव टालने के लिए ऐसी स्थितियां बनी हैं, राजनाथ जी नहीं हैं, प्रमोद कुमार जी ने भी कहा सहारनपुर, मेरठ, उत्तर प्रदेश के बारे में कहा, बहुजन समाज पार्टी में अपराधी और भ्रष्टाचारी हैं, उन्होंने कहा, भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी तो इन भ्रष्टाचारियों की जगह उत्तर प्रदेश की जेल में होगी, तो आज कौन सी मजबूरी कौन सी लाचारी हो गई जिनकी जगह जेल में होनी चाहिए वह आज मंत्री बन रहे हैं । आज उत्तर प्रदेश में उनकी सरकार बनाने की आवश्यकता पड़ गई ।

(व्यवधान)

आप भी जानते है, कितने भ्रष्टाचारी रहे हैं शुक्ला जी आप भी मुझसे अपनी पीड़ा की अभिव्यक्ति कर चुके हैं आप तो न बोलिए । यह कहा गया कि कभी भी गठबन्धन बसपा से नहीं होगा । मायावती जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश में स्पष्ट बहुजन समाज पार्टी की सरकार बनेगी, दूसरी किसी पार्टी का समर्थन बहुजन समाजवादी पार्टी नहीं करेगी, इन्होंने जो दृढ़ निश्चय किया, इन्होंने जो फैसला लिया उस पर अमल किया । भाजपा पार्लियामेंट बोर्ड ने जो फैसला लिया कि हम विपक्ष में बैठेंगे, गोआ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में कहते रहे कि विपक्ष में बैठेंगे, लेकिन ऐसी क्या आवश्यकता पड़ गई जो आप अपनी बात से बदल गए आपने सरकार बनाई और उसके साथ बनाई जिस पर आरोप-प्रत्यारोप लगाए मैं उन बातों को दोहराना नहीं चाहता हूं उन आरोपों-प्रत्यारोपों की मीमांसा नहीं करना चाहता हूं उत्तर प्रदेश की जनता आज इस बात को जानना चाहती है कि उत्तर प्रदेश के अन्दर पिछली दो बार के अनुभव के आधार पर भारतीय जनता पार्टी कितने दिन समर्थन देगी । श्रीमन्, पहले दिन जिस तरह से बैठक बुलाई और उसमें भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को आमंत्रित किया, राजनाथ जी नहीं गए और विधान मंडल दल की बैठक बुला ली ।

(व्यवधान)

सरकार कुछ सिद्धान्त कुछ उसूल पर चलती है, राजनाथ जी कहते हैं सब मुझे घोषणा लाल कहते हैं मैंने 600 घोषणा की और उसमें से 560 पूरी हो गई । मुख्य मंत्री जी ने पहली प्रेस कान्फ्रेन्स में कहा उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था की स्थिति खराब है, कानून व्यवस्था की स्थिति खराब है मैं इसको मानता हूं लेकिन इसके लिए वह लोग जिम्मेदार हैं जो पिछले पांच वर्ष से प्रदेश में राज्य कर रहे थे दूसरी बात कही कि उत्तर प्रदेश की आर्थिक स्थिति जर्जर है तो यह दोनों बातों से मैं सहमत हूं और उन्होंने कहा कि 2001-2002 की जो नौ सौ घोषणाएं सरकार द्वारा हुई उसका वित्तीय प्रबन्धन नहीं हुआ है । यह मान्यवर, वास्तविकता है । मान्यवर, पूर्व मुख्य मंत्री यह कह रहे हैं कि 600 घोषणायें पूरी कर दी गयी हैं । वह कहते हैं कि हमारी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं है ।

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

कृपया शांत रहें ।

श्री जगदम्बिका पाल–

मान्यवर, मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूं, मुख्य मंत्री जी से विनती करता हूं, माननीय राजनाथ सिंह जी ने कहा कि हमारी सरकार के ऊपर कोई भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लगा सकता है , मैं केवल निवेदन करना चाहता हूं कि लोक आयुक्त का गठन हुआ और उसकी नियुक्ति उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा होती है उनकी एक रिपोर्ट में कहा कि एक दर्जन मंत्रियों के खिलाफ, सार्वजनिक रूप से यह कहा गया था, भष्टाचार के मामले प्रागदर्शन में होते हैं । आप उसकी रिपोर्ट सदन में रख दीजिये एक दर्जन मंत्री चले जायेंगे । हम सब सार्वजनिक क्षेत्र में है । आरोप लगता है तो उसकी जांच होनी चाहिए । उत्तर प्रदेश के लोकायुक्त ने आरोप लगाया कि एक दर्जन मंत्रियों के खिलाफ प्रागदर्शन में भ्रष्टाचार का मामला है तो आखिर राजनाथ सिंह जी ने क्यों नहीं इसकी रिपोर्ट प्रकाशित की । सदन के पटल पर रखते यह उनकी जिम्मेदारी बनती है । मायावती जी ने कहा कि कौन मंत्री होंगे यह पता नहीं है । पता नहीं कौन सी ऐसी उनकी मजबूरी थी । ऐसे भ्रष्ट मंत्रियों से अपेक्षा करते हैं कि उत्तर प्रदेश के जनता के हितों, प्राथमिकताओं की, उनकी प्रतिबद्धताओं के लिए कोई कल्पना साकार करें । हमें वास्तविकता के धरातल पर जाना है । जिस तरीके से पांच वर्ष में प्रदेश की जनता खुश नहीं हुई तो वह 177 से 88 तक खिसक गये तो यह इस बात का सबूत है कि उनके कार्यों से वह कितना खुश हैं । अगर फिर यह सरकार चल गयी तो यह 88 से खिसककर 18 ही रह जायेंगे ।

(व्यवधान)

मान्यवर, इसकी स्थिति तो यह है कि –दिल से दिल अपनी सियासी का मिला सकते हैं, मात खा सकते हैं मगर बाज नहीं आ सकते हैं । तो यह मात खा सकते हैं लेकिन बाज नहीं आयेंगे ।

(समय दिन के 04 बजकर 05 मिनट)

* सिचाई, गन्ना विकास. उच्च शिक्षा, प्राविधिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, भाषा, राष्ट्रीय एकीकरण एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्री (श्री ओम प्रकाश सिंह)–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं माननीय मुख्य मंत्री सुश्री मायावती द्वारा प्रस्तुत विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं । विश्वास का मत सदन के अन्दर बहुमत है इस औपचारिकता को पूरा करने के लिए इसको सिद्ध करने के लिए राज्यपाल जी के निर्देश का अनुपालन है । मैं विपक्ष का आभारी हूं कि जिन्होंने हम लोगों के भविष्य के बारे में अपनी चिन्ता जताई है । किसी ने कहा कि यह सरकार नहीं चलेगी, किसी ने कहा कि भाजपा 80 से 30 पर चली जाएगी । मैं कहना चाहता हूं कि हमने इस सदन को 1974 में भी देखा है । एक तरफ माननीय बहुगुणा जी उनके बगल में श्री तिवारी जी और आदरणीय श्री चौधरी साहब, त्रिपाठी जी बैठे थे । इस सदन की परम्परा रही है कि यह एक

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

शास्त्रार्थ का स्थान है । विचार का जवाब विचार से दिया जाए । हमने वह समय भी देखा है जब चौधरी साहब और बहुगुणा जी के बीच में एक से एक कटाक्ष होते थे लेकिन शब्दों की मर्यादा होती थी । (व्यवधान), आज हम लोग अगर सत्ता में बैठे हैं तो इसका श्रेय माननीय प्रमोद कुमार जी को जाता है । अगर इन्होंने समर्थन दे दिया होता तो राज्यपाल जी के ऊपर दबाव पड़ता और वह हम लोगों को अवसर न देते । आज भी वह विश्वास मत के विरोध में खड़े हैं न कि समर्थन में । अगर विपक्ष स्वयं मिलकर गठबंधन बना लेता तो यह दो महीने का समय न मिलता । एक राज्य की आवश्यकता, एक राज्य को फिर से चुनाव से बचाने के लिए यह गठबन्धन मजबूरी का नहीं बल्कि यह गठबन्धन चुनाव से जनता को बचाने का परिणाम है । लेकिन आज भी किसी ने यह नहीं कहा और कहे भी कैसे ? जब सोनिया जी को प्रधान मंत्री बनना था तब हम समर्थन नहीं देंगे । तब कभी आपको सरकार में बैठना होगा तो कांग्रेस कैसे समर्थन देगी वह तो अखिल भारतीय स्तर की पार्टी है । आज राज्यपाल महोदय के सामने यह बड़ा प्रश्न था कि 147 से संख्या बढ़ नहीं पा रही थी । बार-बार यह कहा गया कि चुनाव के समय इन्होंने यह कहा उन्होंने वह कहा । चुनाव में 1967 में हम लोग एक साथ बैठे थे कांग्रेस के विरुद्ध । उससे पहले हमारे बड़े गम्भीर वैचारिक मतभेद थे । लेकिन परिस्थितियां थीं, बाध्यता थी सभी दलों ने मिलकर गैर कांग्रेसी सरकार बनाने के लिए, बात हुई । जिनके नेतृत्व में जिनके आदर्शों पर चलने वाले लोग हैं, जिन पर गर्व करते हैं उस महान पुरूष के आदर्श पर चलते हैं, उस समय के अपने सारे वैचारिक मतभेदों को भुलाकर उस समय की आवश्यकता थी गैर कांग्रेसी सरकार बनी वह सबकी मिलकर के सरकार बनी । 1977 में इमरजेंसी लगायी गयी । जिसको आप साम्प्रदायिक और फासिस्टवादी कह रहे हैं उसके साथ मिलकर के 1977 में चुनाव लड़ा था और सरकार बनी । 1989 में समर्थन लिया तो मान्यवर, यह समय और परिस्थितियों की बाध्यता भी होती है राजनीति में एक-दो महीने लोग हम लोग कहते रहे कि विपक्ष में बैठेंगे यह निर्णय भी हुआ था । लेकिन यह उम्मीद की गयी थी कि 147 संख्या वाली पार्टी को शेष विपक्ष समर्थन दे देगा फिर हमारी मजबूरी थी कि हम विपक्ष में बैठेंगे । सवा दो महीने के ऊपर हमने इंतजार किया था लेकिन देख लिया कि चुनाव में जाने का रास्ता प्रशस्त अब हो रहा है अब चुनाव के सिवाय दूसरा कोई रास्ता बचता नहीं है । जैसी 1967 में परिस्थितियां थीं 1977 में परिस्थितियां पैदा हुई उसी के अनुसार, उसी की परिस्थितियों की बाध्यता का परिणाम है यह गठबन्धन । अगर विपक्ष में बैठे सारे लोग आपस में सत्ता बना लेते तो यह हम लोगों के लिये अवसर नहीं आ पाता । आज कहा जा रहा है कि आपकी संख्या क्या है आप 177 से घटकर 88 हो गये ? यह तो लोकतंत्र है । लेकिन जनता को देखिये, हमने पांच साल शासन चलाया हमें जनता का पुनः विश्वास नहीं प्राप्त हो सका हम यह स्वीकार करते हैं लेकिन जनता ने किसी के भी पक्ष में विश्वास प्रकट नहीं किया । आपको इसमें कोई शेखी नहीं बघारनी चाहिये । (सत्ता पक्ष की ओर से मेजों की थपथपाहट) सबसे बड़ा दल अवश्य आपको बना लिया लेकिन ऐसे में छोड़ दिया कि कोई भी सरकार नहीं बना सकता है और संख्या की बात कही जाती है लोकतंत्र में वही परिभाषा है जो जनता स्वीकार करे । जिस पर जनता मोहर लगाये वही सही परिभाषा है ।

मान्यवर, हम दीपक लेकर चले थे, उस पर लोग हंसने लगे कि दीपक वाले क्या करेंगे ? दीपक को लेकर जनसंघ का देश की प्रत्येक पार्टी विरोध करती थी । लेकिन इतनी लम्बी यात्रा के बाद दीपक जलता हुआ, देश की आज सबसे बड़ी पार्टी बन गयी है और आज उस पर सबका बड़ा विश्वास है देश में । (सत्ता पक्ष की ओर से मेजों की थपथपाहट) (व्यवधान) मैं यह कहना चाहूंगा कि जिस जनसंघ के

काल से चलती हुई पार्टी अब यहां तक पहुंच गयी है । जब हम बोले थे तब लोग हँसते थे और सारे लोग विरोध करते थे आज वही विरोध करने वाले हमारे साथ, भारतीय जनता पार्टी के साथ केन्द्र में सत्ता में बैठे हैं, तो उनका कथन सही या भारतीय जनता पार्टी का कौन रास्ता सही है ? भारतीय जनता पार्टी सेक्यूलर पार्टी है । हम तो इस बार हार गये, इस बात को हम स्वीकार करते हैं लेकिन जो लोग हमें साम्प्रदायिक कहते रहे वो सब पीछे चले गये, तो क्या उस समय हम साम्प्रदायिक थे कि नहीं थे और अगर साम्प्रदायिक थे तो इनकी जुबान में थे जनता की जुबान में हम साम्प्रदायिक नहीं थे । हम हार गये मान्यवर, अपनी देखिये थे 33, 25 पर आ गये । अपना मुखड़ा नहीं देख रहे हैं हमारी पराजय देख रहे हैं । मान्यवर, यह गठबंधन प्रदेश को चुनाव से बचाने के लिए किया गया नम्बर–एक/नम्बर–दो जनता को सत्ता में भागीदारी मिले, ये कह सकते हैं कि इससे पहले आपने क्यों नहीं दिया, हो सकता है हमने पहले नहीं दिया लेकिन आवश्यकता इसे सिखाती है । आज दलित को भागीदारी देना आवश्यक है । इसमें जो विरोध कर रहे हैं वह सब दलित की सत्ता में भागीदारी के विरोधी हैं । मान्यवर, इनकी चिन्ता यह नहीं है कि हम सत्ता में बैठे हैं मायावती जी ने जो स्वीकार कर लिया, मायावती जी ने जो सहमति प्राप्त कर लिया । राष्ट्रपति का चुनाव भी मिल कर लड़ेंगे, उप राष्ट्रपति का भी चुनाव मिल कर लड़ेंगे सब के सब यह समझ रहे हैं कि उनका भविष्य अंधकार में है, इसलिए यह विरोध कर रहे हैं । इनकी यह आज की चिन्ता नहीं है चिन्ता भविष्य की है और स्वयं मिलकर सरकार बना नहीं सकते, सरकार चला नहीं सकते, वही बच्चों के लिए कहा जाता है कि न हम खेलेंगे और न तुम खेलोगे, तो खेल बिगाड़ देंगे लेकिन आज खेल बिगाड़ने वाले खेल बिगाड़ नहीं सकते ।

डा० अशोक बाजपेयी–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, माननीय नेता सदन ने मंत्रि-परिषद् में विश्वास व्यक्त करने का प्रस्ताव सदन के समक्ष प्रस्तुत किया । मान्यवर, विश्वास किस पर व्यक्त किया जाये, मान्यवर, लोकतंत्र में विश्वास नीतियों, आवश्यकताओं पर व्यक्त किया जाता है, जो सरकार अनैतिकता पर खड़ी हो जिसका गठबंधन केवल सत्ता के लिए हो, मान्यवर, जिस सरकार ने प्रदेश की 16 करोड़ जनता को धोखा देकर एक बेमेल गठबंधन का प्रस्ताव किया हो उस सरकार के समर्थन में कुछ थोड़े लोगों के बल पर सदन में बहुमत भले प्राप्त कर लिया जाये लेकिन उस सरकार पर प्रदेश की 16 करोड़ जनता का विश्वास कभी नहीं आ सकता । आज यहां पर एक साथ मिल कर सरकार बनाने का काम कर रहे हैं । भाजपा और बसपा का चुनाव के पहले भी गठबन्धन है लेकिन वह गठबन्धन एक निहित स्वार्थ के लिए था कि समाजवादी पार्टी की सरकार न बने इसलिए भाजपा, बसपा पर्दे के पीछे गठबन्धन करके चुनाव लड़ रहे थे ताकि अक्लियतों का रास्ता काटकर भाजपा का रास्ता आसान कर दें । लेकिन जनता यह नहीं जानती थी कि चुनाव में एक दूसरे से लम्बी दूरी रखने वाले चुनाव के बाद सरकार बनाने का काम करेंगे । आज़ टंडन जी ने राम मनोहर लोहिया जी का नाम लिया । नानू पिल्लई की सरकार को जो केरल में थी इस्तीफा देने के लिए लोहिया जी ने इसलिये कहा था कि वहां पर निर्दोष लोगों पर गोली चलाई गयी । उन्होंने अखबार में पढ़ा तो उन्होंने वहीं से निर्देश दिया कि जनतंत्र में निर्दोष लोगों पर गोलियां चलाने वाले को सत्ता में रहने का अधिकार नहीं और सत्ता से च्युत कर दिया ।

टंडन जी, लोहिया जी का नाम लिये आज नरेन्द्र मोदी का मामला है उनको आज तक हटाया नहीं जा सका । आपने लोहिया जी का नाम स्मरण किया अगर आप उनका आचरण कर लिये होते तो मैं

आपको साधुवाद देता, बधाई देता लेकिन मैं जानता हूं कि आपको टीस है, छटपटाहट है, पार्टी के अनुशासन से बंधे हैं, लेकिन जिस तरह दुर्योधन, भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, द्रौपदी का चीरहरण देखते रहे और कुछ न कर सके उसी तरह से आप हस्तिनापुर के अनुशासन से बंधे हैं । इससे मैं आपकी मजबूरी को जानता हूँ । जिस पार्टी के नेता खुद कहते हैं कि हमें उत्तर प्रदेश में मजबूत नहीं मजबूर सरकार चाहिए तो किसकी मजबूरी का लाभ उठाना चाहते हैं प्रदेश की लाचार, बेबस 16 करोड़ जनता का लाभ उठाना चाहते हैं या सदन में चुने हुए उन सदस्यों की मजबूरी का आप लाभ उठाना चाहते हैं आज इस प्रदेश में किसान परेशान है, बेरोजगारी बढ़ रही है । किसान मजदूर की स्थिति दयनीय हो गयी है , कितना मजबूर इस प्रदेश को आप करेंगी । आप जानती हैं कि इस मजबूर सरकार से प्रदेश की जनता को क्या देने वाली हैं । 3–3 बार यह गठबन्धन बना आज अगर आपको जनता का विश्वास मिला होता और जब आप मुख्य मंत्री की कुर्सी पर बैठतीं तो हम आपका स्वागत करते लेकिन यह बेमेल गठबन्धन बनाकर दुहाई दी जा रही है कि दलित की बेटी को मुख्य मंत्री बनाया इसलिए विपक्षियों के पेट में दर्द हो रहा है । यह दर्द न होता अगर 6 महीने में दलित की बेटी को बेइज्जत करके सत्ता से न हटाया होता, उनके लोगों को तोड़कर सत्ता पर न काबिज हुए होते । 5 साल तक मलाई खाने का काम भारतीय जनता पार्टी ने किया । आखिर कितने दिनों तक दलित की बेटी को अपमानित करेंगे अपने उत्तर भाषण में यह भी बता दें । क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह राजनीतिक साजिश के तहत मायावती जी को अलंकृत किया गया है । इसलिये आपको कुर्सी दी कि कहीं दिल्ली की सरकार न चली जाय । इसलिये हड़बड़ी में पहले कई बार यह बयान आता रहा कि हमें जनता ने विपक्ष में बैठने का जनादेश दिया है हमें विश्वास तो नहीं हो रहा था लेकिन जब बार–बार इसकी दुहाई दी गयी तो भरोसा होने लगा था कि भाजपा सजग हुई है और उसको गलती का एहसास हुआ है कि जनादेश कोई चीज होती है और इस बार वह सरकार नहीं बनायेंगे लेकिन आपने चालबाजी करने का काम किया है । इस प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी और कांग्रेस पार्टी के दलों में तोड़फोड़ दलबदल कर 100 मंत्रियों को बनाकर उत्तर प्रदेश की जनता का दोहन करने का काम किया है । एक-एक मंत्री के महीने का जेब का खर्च एक लाख से ऊपर का खर्च रहा है । एक करोड़ रुपया प्रतिमाह मंत्रियों के जेब खर्च पर व्यय किया गया, 100 मंत्रियों की फौज बनाकर आपने उत्तर प्रदेश को दोहन करने का काम किया है, तब आपका दलित प्रेम नहीं उपजा था । मैं चाहूँगा कि आज नई सरकार प्रदेश की जनता की जो अपेक्षाएं हैं, मुख्य मंत्री जी इस सम्बन्ध में अपने भाषण में जरूर कहें । मुख्य मंत्री जी अपने भाषण में जब बोल रही थीं उन्होंने प्रदेश की ज्वलन्त समस्याओं के विषय में कुछ भी नहीं कहा । आज ग्रामीण क्षेत्रों में 5 घण्टे, 4 घण्टे और 3 घण्टे भी बिजली नहीं आ रही है, शहरों में भी कहने को 8 घण्टे बिजली दी जा रही है लेकिन वहा भी स्थिति बड़ी दयनीय है । आपकी पिछली सरकार ने एक मेगावाट बिजली उत्पादन के लिए भी कोई नया संयंत्र लगाने का काम नहीं किया है । प्लांट लोड फैक्टर निरन्तर घटता जा रहा है और स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि कोई भी उद्यमी प्रदेश में उद्यम लगाने को तैयार नहीं है, बिजली बकाया इतना अधिक बढ़ गया है कि एनटीपीसी भी अब प्रदेश को बिजली देने को तैयार नहीं है । गेहूँ की खरीद मे बिचौलिए किसानों को लूटने का काम कर रहे हैं । जैसे नेता प्रतिपक्ष ने कहा है कि 50 रुपये, 100 रुपये तक ये बिचौलिये लेकर गेहूँ खरीद करवा रहे हैं लेकिन माननीय नेता सदन ने गेहूँ खरीद के संबध में कुछ नहीं कहा और सरकार में बैठे उन्हें 15–20 दिन हो गये हैं, लेकिन कोई ध्यान इस ओर नहीं दिया गया ।

मान्यवर, 3 मई से जब से सरकार बनी है केवल एक काम जरूर हुआ है । रोज सुबह सूची देखने को मिलती है, यहां से वहां और वहां से यहां ट्रांसफर निश्चित रूप से यह मुख्य मंत्री का अधिकार है, मैं उनके इस अधिकार को चुनौती नहीं दे रहा हूँ । लेकिन यह किसी मुख्य मंत्री की जागीर नहीं है, जिसे चाहे ताश के पत्तों की तरह फेंकता रहे । 500–500 अधिकारियों का तबादला कर दिया गया है, पिछले 15 दिनों में । इसके अलावा और कुछ नहीं हुआ है । अगर मीडिया ने इस तरह हो रहे स्थानान्तरण पर टिप्पणी लिखनी शुरू कर दी तो एक तानाशाह की तरह उसे न छापने के आदेश दे दिए गये । ऐसी स्थिति में अब तो प्रदेश की जनता भी नहीं जान पा रही है । पिछला कार्यकाल भी मैंने आपका देखा है । आपकी सरकार का विकास एक उद्यान तक ही सीमित रह गया था । आपसे अनुरोध है कि उद्यान के अलावा भी प्रदेश बहुत बड़ा है । 100 करोड़ रुपया एक उद्यान के विकास पर खर्च किया गया । टण्डन जी, आप तो हमेशा विधायी प्रक्रिया की दुहाई देते हैं, बिना किसी तकनीकी स्वीकृति के, विधान सभा में बिना कोई प्रस्ताव लाये 100 करोड़ रुपया एक उद्यान पर खर्च किया गया । केवल प्रशासनिक आदेशों, से उद्यान का निर्माण किया गया और सारे लोग मूकदर्शक बने बैठे रहे ।

विधान सभा नियमों से चलती है, इसमें किसी को स्वेच्छाचारी बनने की अनुमति नहीं दी जा सकती । सार्वजनिक धन के अपव्यय का अधिकार किसी को नहीं है । लेकिन जो कुछ हुआ वह किसी से छिपा नहीं है । इसलिये सुश्री मायावती जी के सरकार से हटने के बाद तुरन्त आपने जांच समिति गठित की और उसके लिये स्पेशल आडिट टीम से उसका आडिट कराया गया । ऐसी मिसाल जनतंत्र में शायद दूसरी नहीं होगी । इसलिये मैं अनुरोध करना चाहता हूं कि अगर जोड़-तोड़, तिकड़म से विश्वास प्रस्ताव पास हो जाता है तो कम से कम प्रदेश की गरीब जनता जिसकी अपनी तमाम परेशानियां हैं, उसकी कुछ अपेक्षाएं हैं और सरकार से उम्मीद है इसलिये केवल उद्यान तक ही प्रदेश सरकार का लक्ष्य नहीं होना चाहिये । प्रदेश की खुशहाली-सड़क, औद्योगिक विकास, प्रदेश का विद्युत उत्पादन और जर्जर कानून व्यवस्था के सुधार से है । मान्यवर, इंटेलीजेंस विभाग के ऊपर से नीचे तक के सारे अधिकारी बदल दिये गये । ऐसा कभी नहीं हुआ कि डी० जी० से लेकर नीचे तक के सभी अधिकारी बदल दिये जायें । वहां सूचनाओं का संकलन होता है और आज जहां आतंकवादी गतिविधियों से चुनौतियां मिल रही हैं, ऐसे समय में पूरे अभिसूचना तंत्र को पंगु बना दिया गया ।

(इस समय 4 बजकर 30 मिनट पर अधिष्ठाता श्री श्याम सूरत उपाध्याय पीठासीन हुए ।)

मान्यवर, यह केवल एक विभाग की स्थिति नहीं सारे विभागों की है और अगर केवल तबादलों से ही प्रदेश का विकास हो जाता तो मान्यवर, एक बार नहीं कई बार यह ताश के पत्ते फेंटे गये हैं लेकिन इससे प्रदेश का विकास नहीं हुआ । प्रदेश का विकास तो सामाजिक, आर्थिक विकास पर निर्भर करता है । प्रदेश विकास के लिये औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने का काम करना होगा लेकिन आपकी वे प्राथमिकता में नहीं हैं । आपकी प्राथमिकता है निर्दोष लोगों पर झूठे मुकदमें कायम करना । मान्यवर, कम से कम प्रदेश की जनता यह अपेक्षा करती है कि जो गुनहगार हैं, उसे सजा जरूर मिले, लेकिन जातिवाद के आधार पर किसी के ऊपर झूठा मुकदमा न चलाया जाय । निर्दोषों पर एस० सी०, एस० टी० के झूठे मुकदमें कायम न किये जाएं । प्रदेश की जनता का विश्वास इस सरकार पर नहीं है । अगर सरकार को सही मायने में सरकार चलानी है तो प्रदेश की जनता का भी विश्वास पाने का प्रयास करना । इन्हीं शब्दों के साथ मैं सरकार के प्रस्ताव का पुरजोर विरोध करता हूं ।

श्री [illegible]जी टण्डन–

मान्यवर, नेता विरोधी दल अगर चाहें तो यह बता दें कि कब तक यह बहस चलेगी ?

डा० अशोक वाजपेयी–

मान्यवर, रात आठ बजे तक । लोकसभा की कार्यवाही तो रात के 12 बजे तक चलती है ।

श्री लाल जी वर्मा–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं विश्वासमत के समर्थन में कुछ बातें कहना चाहता हूं । मान्यवर, हमारे प्रतिपक्ष के साथियों ने सबसे ज्यादा जोर आज इस विश्वासमत के प्रस्ताव पर दिया उसमें बेमेल गठबन्धन था । मान्यवर, जब यह बेमेल गठबन्धन करते हैं तब यह सरकार बनाने के लिये अपने विरोधियों से भी समझौता करते हैं तब वह अवसरवादिता नहीं हुआ करता, तब यह बेमेल गठबन्धन नहीं हुआ करता । तब वह जनता के हित के लिये हुआ करता है । मान्यवर, आज बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में भारतीय जनता और उसके सहयोगी दलों द्वारा जो सरकार बनाई गई है, यह अवसरवादिता नहीं है । इस प्रदेश की करोड़ों-करोड़ जनता के हितों की रक्षा के लिये, उनके स्वाभिमान की रक्षा के लिये, यह सरकार बनाई गई है । मान्यवर, मैं नेता प्रतिपक्ष से पूछना चाहता हूं कि जब 1967 में समाजवादी पार्टी और अन्य तमाम विपक्ष की पार्टियों ने मिलकर सरकार का गठन किया था तब यह बेमेल गठबन्धन नहीं था । मान्यवर, 1977 में तमाम विरोधी पार्टियां इकट्ठा होकर जन संघ के साथ मिलकर एक सरकार बनाने का काम किया था तब यह बेमेल गठबन्धन नहीं था । मान्यवर, 1989 में भारतीय जनता पार्टी और कम्युनिस्ट के लोगों ने मिलकर दिल्ली में एक सरकार बनायी थी तब वह बेमेल गठबन्धन नहीं था । विश्वनाथ प्रताप सिंह की जनता दल को तोड़कर उस समय जो तत्कालीन प्रधानमंत्री बने थे और कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बनाया था तो यह बेमेल गठबन्धन नहीं था ।

श्री अम्बिका चौधरी–

जनता दल को तोड़कर नहीं, जनता दल की सरकार बनी थी ।

(व्यवधान/शोर)

श्री राम गोविन्द चौधरी–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, माननीय मंत्री जी ने जो बात कही है हालांकि नाम नहीं लिया । आदरणीय चन्द्रशेखर जी ने कांग्रेस पार्टी का समर्थन लिया । कांग्रेस पार्टी साम्प्रदायिक पार्टी नहीं थी, कांग्रेस पार्टी सेकुलर पार्टी है और चन्द्रशेखर जी सेकुलर विचाराधारा के हैं । आपका गठबन्धन सेकुलर और नान सेकुलर के बीच में हुआ है । जनता दल और कांग्रेस पार्टी सेकुलर थे दोनों एक ही विचारधारा के लोग थे ।

श्री लाल जी वर्मा–

1977 में दोहरी सदस्यता के नाम पर जनता पार्टी को तोड़कर कांग्रेस पार्टी समर्थन से सरकार बनाने वाले ...

(सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के सदस्यों द्वारा टोका-टाकी करने पर शोर/व्यवधान)

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । माननीय अधिष्ठाता महोदय, यह सदन की मान्य परम्परा है कि कुछ महापुरुष होते हैं, उन पर उंगलियां नहीं उठायी जाती हैं । चौधरी चरण सिंह इस देश के परम श्रद्धेय नेता रहे हैं । आपने उन पर आरोप लगाया कि जनता पार्टी को तोड़कर सरकार बनाया । यह उनके लिये अपमानजनक शब्द मंत्री जी प्रयोग कर रहे हैं, इसको वह वापस लें । चौधरी चरण सिंह जी इस देश के सम्मानित नेता रहे हैं ।

श्री लाल जी वर्मा–

मान्यवर, चौधरी चरण सिंह इस देश के किसानों के नेता थे, एक सम्मानित नेता थे, देश को सुधारने का काम किया था । हम चौधरी चरण सिंह जी का पूरा सम्मान करते हैं, उनकी प्रशंसा करते हैं । समाजवादी पार्टी के लोगों ने दोहरी सदस्यता के नाम पर अलग होने का काम किया था । मान्यवर, इसके बाद 1989 में उसी भारतीय जनता पार्टी के साथ समझौता किये । मान्यवर, इतना ही नहीं मुझे याद है 1980 की विधान सभा चुनाव के बाद उस समय नेता प्रतिपक्ष भी लोकदल से मेम्बर थे, समाजवादी पार्टी के लोग भी उसमें शामिल थे और इसी सदन में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक मोर्चा बनाया था भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर तब वह बेमेल गठबन्धन नहीं था । आज जब करोड़ों जनता के हितों की रक्षा के लिये एक समझौता करके एक दलित बहिन को मुख्य मंत्री बनाया जाता है तो इनके सीने पर सांप लोटता है । ऐसा मुझे महसूस होता है । मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि 1990 में भारतीय जनता पार्टी के साथ राष्ट्रीय लोकतांत्रिक मोर्चा जो बना था उसमें नेता प्रतिपक्ष शामिल थे । 1989 में रामपुर का चुनाव होता है, बेगम नूरबानों को हराने के लिये भारतीय जनता पार्टी का यह समर्थन करते हैं तब बेमेल गठबन्धन नहीं होता है । इसी तरह से 1996 में कांग्रेस के खिलाफ चुनाव लड़कर कांग्रेस को सहयोग देकर सरकार बनवायी तो बेमेल गठबन्धन नहीं था । बिहार में माननीय लालू प्रसाद यादव के खिलाफ लड़े लेकिन जब सरकार बनाने की बात आती है तो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पूरी तरह से सरकार में शामिल होती है तब बेमेल गठबन्धन नहीं होता । इस तरह की अवसरवादिता और बेमेल गठबन्धन की परिभाषा की जाती है तो मेरे जैसे व्यक्ति को समझ में नहीं आता । फासिज्म की बातें करने वाले लोग जब मुजफ्फरनगर तिराहे पर महिलाओं के साथ ज्यादती करते हैं उनके ऊपर जुल्म होता है तब इन लोगों को फासिस्टवाद नजर नहीं आता है । इसी तरह से जब हाईकोर्ट पर हमला करते हैं, अखबारों पर हल्ला बोल करते हैं तो इनको फासिस्टवाद नजर नहीं आता है । इतना नहीं माननीय कुंवर साहब नहीं हैं, 1990 में इनके साथियों के ऊपर नेता प्रतिपक्ष की पार्टी के लोग लोकतंत्र की हत्या करके आक्रमण करते है तब फासिस्टवाद नहीं हुआ करता है ।

मैं कहना चाहता हूं कि लोकतंत्र में जनता का जो जनमत है, जो संख्या बल है वह लोकतंत्र का निर्धारण करता है । 1995 में बहुजन समाज पार्टी के नेता द्वारा समाजवादी पार्टी से समर्थन वापस लेने के बाद 2 जून, 1995 को गेस्ट हाउस में बहिन कुमारी मायावती को समाप्त करने की योजना बनी थी वह इनका फासिस्टवाद नहीं था । इस तरह के लोग, फासिस्टवादी लोग आज लोकतंत्र की हत्या कर रहे हैं । इन्हीं लोगों में 1994 के पंचायत चुनावों में लोगों को मार-मार कर जिला पंचायत अध्यक्ष बनाने का काम किया आज वही लोग लोकतंत्र की दुहाई देने का काम करते हैं और दूसरे लोगों को फासिस्टवादी कहने का काम करते हैं तो मेरे जैसे व्यक्ति की समझ में नहीं आता है । माननीय नेता प्रतिपक्ष ने जिक्र

किया कि इस भाषण में किसानों मजदूरों का जिक्र नहीं किया गया है। अभी महामहिम राज्यपाल महोदय का अभिभाषण हुआ था जो किसी सरकार का दस्तावेज होता है लेकिन माननीय नेता प्रतिपक्ष ने उसको सुनने का काम नहीं किया। उन्होंने इस अभिभाषण को पढ़ने का काम भी नहीं किया, नहीं तो ऐसी बात वह यहां पर न कहते। इस अभिभाषण में किसानों और कृषि के लिये कहा गया। इसमें कहा गया है कि "मेरी सरकार कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिये हर सम्भव प्रयास करेगी एवं कृषि निवेशों यथा–बीज, उर्वरक, कीटनाशक, रसायन, कृषि ऋण आदि की ससमय आपूर्ति सुनिश्चित की जायेगी। इसी क्रम में मेरी सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना का सख्ती से पालन सुनिश्चित करेगी। गेहूं खरीद के कार्यक्रम को पूरी इमानदारी से क्रियान्वित किया जायेगा और इस ओर ध्यान दिया जायगा कि किसी भी स्थान पर किसान को विवश होकर अपना गेहूं निर्धारित मूल्य से नीचे पर न बेचना पड़े। मेरी सरकार यह भी सुनिश्चित करेगी कि इस योजना में बिचौलियों की कोई भूमिका न रहे और गेहूं कि खरीद सीधे किसानों से की जाये। यह भी सुनिश्चित किया जायेगा कि गेहूं क्रय केन्द्र तत्काल क्रियाशील हो जायें तथा किसानों को उनका पैसा तत्परता से मिल जाये। तो मान्यवर, इस दस्तावेज में कृषि का जिक्र किया गया, बिजली की जिक्र किया गया है। मुझे लगता है कि नेता प्रतिपक्ष ने इस दस्तावेज को पढ़ने का काम नहीं किया है। आज यहां पर बहस केवल प्रस्ताव के औचित्य पर होनी थी। यह गठबन्धन प्रदेश के विकास के लिये बना है। उस समय पिछले 6 महीनों में, जो सरकार पहले थी उसमें पूरे प्रदेश में 11 हजार गांवों को लेपन सड़कों से जोड़ने का काम किया गया था और 11 हजार गांवों में बिजली पहुंचाने का काम किया गया था। 50–54 वर्षों की आजादी में इतना बड़ा काम नहीं किया गया। इतने गांवों को सड़कों से जोड़ने का दृष्टांत नहीं है। समाजवादी पार्टी की तरफ से बाबरी मस्जिद तोड़ने वालों की बात की जाती है लेकिन जो तोड़ने के दोषी लोग हैं उनसे आप गलबहियां डाले घूम रहे हैं। जिन पर सबसे ज्यादा आरोप थे बाबरी मस्जिद गिराने का उनको आप बाई-इलेक्शन में एक दूसरे को समर्थन कर रहे हैं। यह बात समझ में नहीं आती। जिस तरह से अपराधीकरण करने वालों के साथ मिलकर आप लोग काम कर रहे है यह बात समझ में नहीं आती है। ऐसी परिस्थितियों में यह जो सरकार बनी है इस सरकार ने अपना एजेंडा प्रस्तुत कर दिया है। इस एजेंडे में इस प्रदेश की भावी योजनाएं शामिल हैं। प्रदेश को आगे बढ़ाने की दिशा में जो कदम उठाए गए हैं वह शामिल हैं। इस सरकार द्वारा अन्याय मिटाकर, भ्रष्टाचार मिटाकर, अत्याचार मिटाकर पूरे प्रदेश का विकास किया जाएगा! ऐसा मेरा मानना है। इस सरकार का समर्थन करें। इन्हीं शब्दों के साथ मैं नेता सदन ने जो प्रस्ताव रखा है उस विश्वास मत का समर्थन करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं, धन्यवाद।

* श्री अखिलेश कुमार सिंह–

अधिष्ठाता महोदय, आज विश्वासमत की चर्चा के दौरान आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। बहुत सी बातें नेता प्रतिपक्ष और हमारे कांग्रेस विधान मण्डल दल के नेता श्री प्रमोद कुमार जी ने कही हैं।

जब से चर्चा शुरू हुई तो अचानक पूरे सदन के अन्दर ऐसा मालूम हुआ कि हर सदस्य के अन्दर चाहे सत्ता पक्ष में हों या विपक्ष में अचानक मुस्लिम प्रेम जाग्रत हो गया। ऐसा लगता है कि सत्ता पक्ष महसूस करता है कि आगे आने वाले समय में फिर से चुनाव होंगे। हमारे प्रदेश की आबादी 16 करोड़ की है।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

आज हम एक गम्भीर विषय पर चर्चा कर रहे हैं। 16 करोड़ लोगों के भविष्य का फैसला इस विश्वास मत के द्वारा होना है। यह विश्वास मत ऐसे प्रदेश में हो रहा है जहां की 42 प्रतिशत जनता गरीबी रेखा के नीचे रहती है। जहां पर कई लाख नौजवान एम०ए०, बी०ए० की डिग्री लेकर पिछले पांच सालों से गांव की सड़कों पर घूम रहें हैं। उनको रोजगार देने के लिए पिछले पांच सालों में जो सरकार थी उसने कोई योजना नहीं बनाई। जब नेता सदन ने विश्वास मत पर अपनी बात रखी तो उन्होंने माना कि भाजपा और बसपा की नीतियों में मूलभूत अन्तर नहीं है। वरना आज भारतीय जनता पार्टी और बहुजन समाज पार्टी मिलकर सरकार न बनाते। भारतीय जनता पार्टी के नेता सदन श्री राजनाथ सिंह जी ने बार-बार दोहराया कि यह सरकार पांच साल चलेगी। मैं बहन मायावती जी से कहना चाहता हूं कि मेरा मानना है कि अगर कोई दलित इस देश का प्रधान मंत्री बने तो हमसे ज्यादा खुशी किसी को नहीं होगी। क्योंकि मैं खुद भी जाति व्यवस्था का विरोधी रहा हूं। दलितों, पिछड़ों और महिलाओं की भलाई की बात करते हैं, पांच साल की बात छोड़िये बहिन मायावती जी आप पांच महीने में ही देखियेगा कि कैसे करम भाई राजनाथ सिंह जी करेंगे। (व्यवधान)

आज मुसलमानों की बात हो रही है। किस तरीके से मुसलमानों की बात करते हैं। हमारे प्रधानमंत्री अटल जी ने कुछ महीने पहले कहा कि मुसलमानों के बगैर भी हिन्दुस्तान की सत्ता को पाया जा सकता है। आप मुसलमानों की बात करते हैं जब उसी पार्टी के प्रधान मंत्री इस तरह की बात करते हैं तो आप इस पार्टी से कैसे उम्मीद करते हैं कि यह मुसलमानों का कोई हित कर सकते हैं ? मैं बहुजन समाज पार्टी से केवल इतना कहना चाहता हूं कि जो बात कही गई थी कि दो बार चूक हुई है, इस बार चूक नहीं होगी। आज विश्वास मत के दौरान भाषण देते-देते भारतीय जनता पार्टी के सदन के नेता ने बता दिया कि दो बार गलती हुई है, तीसरी बार वे यह दुर्दशा करेंगे कि बहुजन समाज पार्टी चुनाव लड़ने के लायक नहीं रहेगी। टण्डन जी हमारे बड़े भाई हैं, मैं उनका सम्मान करता हूं और उनके पैर भी छूता हूं उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में कोई चीज स्थाई नहीं रहती लोहिया जी ने स्वयं अपनी सरकार गिराई थी। यह अपनी सरकार गिरायेंगे। आज जब नेता सदन ने अपना वक्तव्य दिया मुझे बहुत उम्मीद थी क्योंकि मैं मानता हूं कि इस देश में दलितों के साथ, पीड़ितों के साथ जुल्म हुआ है।

इस देश की गुलामी का कारण जाति व्यवस्था थी। नेता सदन ने अपने वक्तव्य में नहीं बताया कि दलितों के लिये उनकी सरकार के पास ठोस कार्यक्रम क्या है ? ठोस योजनाएं क्या हैं ? आज दलितों को रोजगार बन्द है। भारतीय जनता पार्टी के राज्य में जितना जुल्म दलितों, पीड़ितों, महिलाओं, मुसलमानों पर हुआ है उतना आज तक किसी के राज्य में नहीं हुआ है। गोधरा काण्ड हमारे प्रदेश में नहीं है, हमारे देश में है। देश है तो प्रदेश है। गुजरात में दंगे किसने कराये ? कल जब चर्चा आई थी गुजरात में मरे लोगों को श्रृद्धांजलि देने की तो सत्ता पक्ष श्रृद्धांजलि अर्पित नहीं करने देना चाहता था। हमारे नेता विधान मण्डल दल ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम लोग विश्वास मत के प्रस्ताव का विरोध करते हैं। हम जानते हैं कि थोड़ी देर के बाद वोटिंग होगी तो आप विश्वास करिये यह भारतीय जनता पार्टी के सदस्य क्रास वोटिंग करके सरकार गिरा देंगे आप देख लीजियेगा। अभी राजनाथ सिंह जी बोलकर गये हैं। बोल रहे थे और मुस्कुरा रहे थे लेकिन उनका दिल रो रहा था। मैं अपनी पार्टी की तरफ से इस विश्वास मत का विरोध करता हूं।

* सहकारिता मंत्री (श्री राम प्रकाश त्रिपाठी)–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, जिस गम्भीर विषय पर आपने मुझे बोलने का समय दिया उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मान्यवर, जिस गठबन्धन की ओर हमारे मित्रों ने संकेत किया है यह तीसरा गठबन्धन है। इन तीनों गठबन्धनों में बड़ा अन्तर है। पहला गठबन्धन जब हमने किया था तो मायावती जी के साथ नकारात्मक गठबन्धन किया था। दूसरी बार जब किया था तो प्रयोगात्मक गठबन्धन किया था अबकी बार जो किया गया है वह पाजिटिव किया है। पहली बार गठबन्धन क्यों किया था ? जब रामपुर तिराहे से महिलाओं की चीत्कार सुनाई दे रही थी, हाई कोर्ट का क्या मामला था, हल्ला बोल के कारण उत्तर प्रदेश में कोहराम मचने लगा तो हमको मजबूर होकर गठबन्धन करना पड़ा। दूसरी बार तब करना पड़ा जब लोकतंत्र की गाड़ी पटरी पर रुक गई आगे नहीं बढ़ रही थी। हमने प्रयोग के तौर पर 6-6 महीने के लिये किया था।

अबकी बार चूंकि सरकार बनाने की भूमिका में गिलहरी की तरह से मैं भी बीच में रहा हूं यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि यह गठबन्धन निश्चित कार्यक्रम के आधार पर हुआ है, एक निश्चित एकता के आधार पर हुआ है। अबकी गठबन्धन में और पिछले गठबन्धन में एकता निर्भर करती है। एकता निर्भर करती है मन की एकता पर और मन की एकता निर्भर करती है लक्ष्य की एकता पर। लक्ष्य की एकता काफी नहीं होती है। लक्ष्य डकैतों का भी एक होता है लेकिन बाद में बंटवारे पर लड़ते हैं। पवित्र लक्ष्य लेकर उत्तर प्रदेश को अच्छा प्रदेश बनाने के लिये जिसे लोग उत्तर प्रदेश कहते हैं, कृषि वैज्ञानिक आए उन्होंने बिहार, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा को बीमार राज्य बताया तो उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने के लिये अच्छे मन का सागर चाहिये। समाजवादी पार्टी और पार्टियों से समर्थन मांगा लेकिन उसको समर्थन नहीं मिला, मैं आपको एक कहानी सुनाना चाहता हूं एक कुत्ता और एक कुतिया थे उनके बच्चे पैदा नहीं हो रहे थे वह एक साधु के पास गये और बच्चे पैदा करने के लिये उपाय पूछा, साधू ने कहा, कुकुर महोदय सुबह सबरे उठकर पांच मंदिरों के दर्शन करो, लेकिन उसके बाद भी उनके बच्चे नहीं हुए तो वह फिर साधू के पास गए, और कहा हमने पांच मंदिरों के दर्शन किये लेकिन बच्चे नहीं हुए, इस पर किसी ने कहा कि तुमने कोई मंदिर ऐसा छोड़ा था जिस पर ...

(व्यवधान)

हम विपक्ष में बैठने की बात शुरू से करते आ रहे हैं, यह सदन विश्वास और अविश्वास के बीच झूल रहा है अगर ऐसा ही रहेगा तो उत्तर प्रदेश का विकास नहीं होगा। श्रीमन्, 10 अक्टूबर, 2001 को महामहिम अब्दुल कलाम आए, गन्ना संस्थान में कुछ वरीयता तय हुई, आप उस पर उत्तर प्रदेश में, इस सदन में चर्चा कराते, यह कहा गया कि 2007 में पानी का भयंकर संकट पैदा होने वाला है, आप उत्तर के पर्यावरण पर उत्तर प्रदेश की बढ़ती आबादी पर चर्चा कराते, यह सदन विश्वास और अविश्वास में ही झूलता रहेगा, मैंने शुरू में ही कहा था कि यहां ऐसे विषय उठाये गये हैं, जिनको महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण के धन्यवाद के प्रस्ताव में आना चाहिये था, लेकिन उसको विश्वास मत पर कहा गया है, आप सभी सहयोगियों से मैं अनुरोध करना चाहता हूं आप कह रहे हैं कितने दिन चलेगी, कितने दिन

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

चलेगी, अरे आज तो चलने दीजिए.. (व्यवधान) यह सरकार पूरे पांच साल चलेगी एक दिन के लिये भी सरकार नहीं हटेगी । धन्यवाद इसी के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं ।

(समय दिन के 05 बजकर 01 मिनट)

उत्तर प्रदेश विधान सभा की (वर्ष 2002-2003) की समितियों तथा मंत्रियों को परामर्श देने वाली स्थायी समितियों में सदस्यता हेतु विधान सभा के सदस्यों के नाम निर्देशित करने हेतु मा० अध्यक्ष को प्राधिकृत किये जाने का प्रस्ताव

संसदीय कार्य, वस्त्रोद्योग एवं रेशम उद्योग मंत्री (श्री सुखदेव राजभर)–

मान्यवर, मैं आपकी आज्ञा से प्रस्ताव करता हूं कि "यह सदन उत्तर प्रदेश विधान सभा की वर्ष 2002-2003 की लोक लेखा समिति, प्राक्कलन समिति, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा विमुक्त जातियों संबंधी संयुक्त समिति, सार्वजनिक उपक्रम एवं नियम संयुक्त समिति और मंत्रियों को परामर्श देने वाली 30 स्थायी समितियों में सदस्यता के लिये संबंधित नियमों एवं संकल्पों के उपबन्धों को उस सीमा तक निलम्बित करते हुए, जहां तक वे उक्त समितियों की निर्वाचन प्रक्रिया से संबंधित हैं, यह सदन श्री अध्यक्ष को उक्त सभी समितियों में वर्ष 2002-2003 के लिये अपेक्षित संख्या में विधान सभा के सदस्यों को नाम-निर्देशित करने हेतु इस अनुरोध के साथ प्राधिकृत करता है कि वे कृपया उक्त समितियों में नाम निर्देशन कर दें तथा उसके बाद उक्त वर्ष में उक्त समितियों में आकस्मिक रिक्तियों की, यदि कोई हों, पूर्ति के लिये यथा समय सदस्यों को नाम-निर्देशित करने के लिये भी प्राधिकृत करता है और यह निश्चय करता है कि इस प्रकार नाम-निर्देशित सदस्य उक्त समितियों से संबंधित नियमों एवं संकल्पों की अपेक्षानुसार विधिवत् निर्वाचित समझे जायेंगे ?

श्री अधिष्ठाता–

माननीय नेता प्रतिपक्ष आप इससे सहमत हैं ?

श्री मोहम्मद आजम खां–

जी हां ।

श्री अधिष्ठाता–

ठीक है, सर्वसम्मति से पारित हुआ ।

मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव (क्रमागत)

* श्री नरेश चन्द्र अग्रवाल–

माननीय अधिष्ठाता जी, वर्ष 90 में जब विश्वास मत प्रस्ताव पर बहस हो रही थी तो उस समय आदरणीय कल्याण सिंह जी ने एक श्लोक कोट किया था मैं उसी को सुनाना चाहता हूं :–

"उष्ट्रानाम विवाहेषुगीतम् गायन्ति गीत गर्दभा :
परस्परं प्रशंसयन्ति अहो रूपं अहो ध्वनि : ।।"

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

ऊंटों की शादी में सुन्दर गायन के लिये गधे बुलाये गये । दोनों एक दूसरे के रूप गुणों की चर्चा कर रहे थे कि तुम्हारा गला अच्छा है,तुम्हारा रूप अच्छा है, तुम्हारी गर्दन अच्छी है । ऐसे ही कुछ शब्द यहां पर भी सुनायी दे...

(व्यवधान)

तो मान्यवर, मैं यह कह रहा था कि ऐसे ही कुछ स्वर आज भी सुनायी दे रहे हैं और ऐसे सुर से मिले हुए विश्वास मत के प्रस्ताव का विरोध करने के लिये खड़ा हुआ है । मैं इसलिये भी विरोध कर रहा हूं कि अलोकतांत्रिक गठबन्धन, सत्ता की भागीदारी के लिये गठबन्धन, बिना ऊसूलों का गठबन्धन है । (व्यवधान) मैं नेता सदन से कहूंगा कि विश्वास अर्जित करना है तो पहले अपने साथियों का विश्वास अर्जित करें, विश्वास मत पहले आपस में ले लें क्योंकि जिनको साथ में लिये हुए हैं वह दिखावे का विश्वास दे रहे हैं और वह विश्वासघात करने में चूकेंगे नहीं । विश्वास लेना है तो आप जनता में लें ।

(व्यवधान)

श्री अम्बिका चौधरी–

मान्यवर, यह सदन व्यविस्थत करायें । कृपया इनको शांत करायें ।

श्री नरेश चन्द्र अग्रवाल–

आप पहले जनता से विश्वास मत प्राप्त कर लें । हो सकता है कि संख्या बल के आधार पर आप विश्वास मत प्राप्त कर लें ।

मान्यवर, जब तक जनता में विश्वास नहीं मिलेगा ।

(घोर व्यवधान)

मैं सोच रहा था कि जब माननीय नेता सदन अपने विश्वास मत पर वक्तव्य देंगी तो क्यों यह गठबन्धन किया इसके उद्देश्यों को बतायेंगी । क्या समस्याएं हैं, उनको दूर करने के लिए, क्या नीतियां हैं, गठबन्धन का उद्देश्य क्या है ?

(व्यवधान)

क्या न्यूनतम साझा कार्यक्रम होंगे इस पर बोलेंगी लेकिन लगता है कि माननीय नेता सदन अभी भी दो जून और समाजवादी पार्टी से ग्रसित हैं और यह गठबन्धन शायद समाजवादी पार्टी को सत्ता से दूर रखने के लिये किया गया है । अगर यह सही है तो इसको स्वीकार करने में क्या हर्ज है ? आज उत्तर प्रदेश में किसी भी आम आदमी से पूछ लीजिये, किसी आम व्यक्ति से पूछ लीजिए किसी व्यक्ति को इसके स्थायित्व पर विश्वास नहीं है । आप चौराहे पर चर्चा कर लें कोई भी इस सरकार को चलने वाला नहीं बताता । माननीय प्रमोद कुमार ने बहुत सी बातों को लेकर उनका उल्लेख किया, पहले के स्टेटमेंट का उल्लेख किया लेकिन मैं तो चुनाव के पहले की बात करना चाहता हूं ।

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

जब कोई माननीय सदस्य बोल रहे हों तो टोका-टाकी नहीं करें ।

श्री नरेश चन्द्र अग्रवाल–

मान्यवर, अगर नेता सदन में उनका विश्वास है तो फिर कोआर्डिनेशन कमेटी बनाने की बात क्यों की गयी ? अगर उन्होंने एक दलित महिला को मुख्य मंत्री बनाया है तो फिर बंधन लगाने की बात क्यों कर रहे हैं ? रोजाना अखबारों में निकलता है कि तीन तारीख को समन्वय समिति की बैठक होगी उसमें मुद्दे तय कर लेंगे । अगर आपका इनमें विश्वास है तो समन्वय समिति की बात छोड़नी पड़ेगी । दलित महिला को मुख्य मंत्री बनाया है तो स्वतंत्र रूप से कार्य करने का उनको अवसर मिलना चाहिये । तीन तारीख को आपने शपथ ली 5 तारीख को मा० मुख्य मंत्री जी का बयान आया कि आर० एस० एस० का हस्तक्षेप यह सरकार बर्दाश्त नहीं करेगी । आखिर वह पता लगे कि आर० एस० एस० का हस्तक्षेप क्या है ? कौन सा हस्तक्षेप आर० एस० एस० कर रहा है । अगर उनको इन पर विश्वास है तो दिल्ली में एन० डी० ए० में शामिल क्यों नहीं हो रहे हैं बाहर से आप उनको समर्थन दे रहे हैं । दिल्ली में आप पार्टनर बन जाते । माननीय कांशी राम जी का बयान आया था कि हमारा समझौता उत्तर प्रदेश से बाहर नहीं होगा । लेकिन आज भाजपा नेता ठाकरे जी का बयान आया कि हमारा समझौता अन्य राज्यों में होगा । आखिरकार यह दो बातें क्यों आ रही हैं ? आपके मंत्री ने सुल्तानपुर में बयान दिया कि गलत आबकारी नीति के कारण 700 करोड़ रु० का सरकार को नुकसान हुआ है । फिर आया है कि बी०एस०पी० के एक मिनिस्टर ने उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री के खिलाफ एक बयान दिया, जिससे वह काफी हुखी हुये । मा० राजनाथ सिंह जी अभी कह रहे थे । ठीक है अगर गलत छपा है तो उसका खण्डन होना चाहिये ।

(व्यवधान)

हमारी बात कहेंगे तो बहुत सी बातें छपेंगी, टिकटों का वितरण, अधिकारियों का स्थानान्तरण इसको भी छापना पड़ेगा । लेकिन कहीं न कहीं पर तो विरोध शुरु हुआ । भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष सत्यदेव जी का बयान आया है भ्रष्ट अधिकारियों को मलाईदार विभाग बांटे जा रहे हैं । यह बयान अपोजिशन का नहीं है । आखिर जब यह बयान आ रहे हैं तो प्रश्न चिन्ह खड़ा हो रहा है । मैं तो कह रहा हूं कि मा० मुख्य मंत्री जी सदन में खड़ी होकर घोषणा कर दें कि किन शर्तों पर समझौता हुआ है, क्या-क्या सरकार की प्राथमिकतायें होंगी । तीन तारीख को ओथ लेने के बाद प्रेस कांफ्रेस को सुना था जिन मुद्दों को उठाया था, एक मुद्दे पर भी चर्चा नहीं की गयी है । टण्डन जी, महामहिम राज्यपाल के पास गये थे, आदरणीय राजनाथ जी भी साथ में थे । वहां तमाम समस्यायें प्रदेश की उठीं । लेकिन आज उन समस्याओं पर आप नहीं बोले हैं । या तो उनका समाधान हो गया अगर नहीं हुआ तो कब समस्याओं का समाधान होगा ।

उत्तर प्रदेश की वित्तीय स्थिति क्या है इस पर कभी प्रकाश नहीं डाला है । प्रदेश में 18 हजार करोड़ रु० की आय है और व्यय 25 हजार करोड़, आप तनख्वाह दे रहे हैं, 7 हजार करोड़ रु० ब्याज पर दे रहे हैं, 96 हजार करोड़ रु० का हमारे ऊपर कर्जा है । इन कर्जों के चलते उ० प्र० कैसे आगे बढ़ेगा ? जरूरतमंद विकास कैसे आगे बढ़ेगा ? मुख्य मंत्री जी इस पर कुछ प्रकाश डालती, सी० डी० रेशियो हमारा आज क्या है ? आपने निर्णय ले लिया कि हम एन० टी० पी० सी० से बिजली नहीं लेंगे । आज आप 1500 मेगावाट बिजली का आयात कर रहे हैं । प्रदेश के सारे जिले काट दिये गये । आपका बयान आया कि निजी क्षेत्र की ऊर्जा क्षेत्र में बढ़ावा नहीं देंगे, फिर विश्व बैंक की शर्त आप मानेंगे या नहीं

मानेंगे । परिसंपत्तियों के बंटवारे में उत्तरांचल ने उत्तर प्रदेश के साथ ज्यादती की लेकिन सरकार ने चूं भी नहीं किया । उत्तरांचल के ऊर्जा मंत्री खुद यहां पर कहने आये थे कि 57 मिलियन यूनिट हम उत्तर प्रदेश को देंगे । खुद वह आये थे लेकिन आज वह ऊर्जा देने के बजाय उन्होंने पी०पी०ए० दिल्ली से साइन कर लिया जबकि अधिकार उत्तर प्रदेश का है । क्या हमने उस पर विचार किया, सरकार ने अपना रुख स्पष्ट किया । कानून व्यवस्था ठीक कर देंगे । उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा अपराधियों को टिकट किसी ने दिया तो बहुजन समाज पार्टी ने दिया है, सबसे ज्यादा अपराधी बसपा में हैं । आज मंत्री अपराधी हैं, विधायक अपराधी हैं, आप अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई शुरु करेंगे तो किधर से करेंगे । माफियाओं का राज कैसे खत्म होगा, कैसे समाप्त होगा ? अपहरण पार्टी जब चलेगी उत्तर प्रदेश में तो औद्योगिक विकास कैसे होगा ? बैंक्स हमको क्या दे रहे हैं, अंधकार में डूबा हुआ उत्तर प्रदेश आगे कैसे बढ़ेगा, खाली पद बांट लेने से सरकार की समस्याओं का समाधान नहीं होगा । मान्यवर, एक शब्द बेरोजगारी पर नहीं बोला गया कि बेरोजगारी कैसे उत्तर प्रदेश की दूर होगी ? समूह "ग" की भर्ती के नाम पर जिन लोगों को भगा दिया गया था उन नौजवानों को रोजगार कहां से मिलेगा ? सिर्फ स्थानान्तरण एक घंटे में एक, "ट्रांसफर माई स्पीडोमीटर–वन ट्रांसफर पर आवर" उत्तर प्रदेश में हर घंटे में एक आई० पी० एस०, एक आई० ए० एस० का स्थानान्तरण इस सरकार में हो रहा है । इसके पहले यह रिकार्ड नहीं रहा । सिर्फ स्थानान्तरण । अच्छी छवि वाले अधिकारियों को अच्छे स्थान मिल जाते तो प्रदेश में आज प्रश्न चिन्ह नहीं उठता उंगलियां नहीं उठती, न भाजपा के लोग कहते न हम लोग कहते । मान्यवर, ताश के पत्ते की तरह उत्तर प्रदेश को फेंट कर यह कह देना कि उत्तर प्रदेश का कभी भला नहीं होने वाला और यह जो कि भा०ज०पा० ने दलित महिला को मुख्य मंत्री बनाया तो हिन्दुस्तान के महामहिम राष्ट्रपति जी भी तो दलित हैं । श्री नारायनन् जी के नाम पर क्यों विरोध कर रहे हैं भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष एक दलित था उसको हटा दिया तब आपका दलित प्रेम कहां था, क्यों हटा दिया ? कैसा दलित प्रेम, बेजोड़ गठबन्धन, बिना उद्देश्य के गठबन्धन सत्ता की भागीदारी के लिये । भाई राम प्रकाश त्रिपाठी जी कह रहे थे कि गठबन्धन इसलिये सफल है कि वह मंत्री बना दिये गये । बिना वसूलों को देखे हुए, दल के विधायक रिवोल्ट कर रहे हैं, राजा भिंगा, महोबा के विधायक रिवोल्ट करें और आप नाम लेंगे तो मैं और दे दूं भारत सिंह जी कहां चले गये, हमारे हरदोई के एक विधायक को सफाई देनी पड़ी । मैं तो कहूंगा कि जमीर मत बेचो । (शोर) अन्तरात्मा की आवाज से काम करें । सदन में सरकार का बहुमत न सिद्ध करके इस प्रदेश के हित में एक सही निर्णय होगा ।

* कृषि मंत्री (श्री हुकुम सिंह)–

मान्यवर, 2-4 मिनट में अपनी बात कहने के लिये खड़ा हुआ हूं । मैं तथ्यों से परे कोई बात कहने वाला नहीं हूं । नेता प्रतिपक्ष हमारे बहुत ही काबिल और बहुत तेजी से बोलते हैं, भाषा पर कमाण्ड है, बोलते भी अच्छा हैं । मैं 2-3 बातें बताना चाहता हूं यह आरोप लगाया गया कि सरकार इकबाल से चलती है, सरकार का इकबाल है कहां, नेता प्रतिपक्ष से सम्मान के साथ कहना चाहता हूं कि जिस इकबाल की बात आप करते हैं वह इकबाल तो हमारे में है नहीं । अगर उस लेबिल की बात करते हैं सत्ता में बैठकर मुख्य मंत्री के पद पर आसीन होकर जितने भी लोकतंत्र के प्रहरी हैं उन पर हल्ला

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

बोलकर बरबाद कर दो, पत्रकारों को न छोड़ो, उनके अखबारों को छीन लो, न्यायपालिका को न छोड़ो, ऐसे हम नहीं हैं और न ही ऐसी बात को पसन्द करते हैं। मान्यवर, संयोग की बात है इधर-उधर बैठने का सबको मौका मिला है। माननीय प्रमोद जी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अध्यक्ष पीठ पर बैठे आप भी इसके साक्षी हैं अगर इकबाल इस बात का है निहत्थे लोगों पर, निहत्थी महिलाओं पर गोली चला कर उनके साथ अमानवीय व्यवहार कर सरकार का इकबाल जाना जाता है तो रामपुर तिराहा इसका साक्षी है।

नेता विरोधी दल (श्री मोहम्मद आजम खां)–

मेरा निवेदन है कि हुकुम सिंह जी बहुत वरिष्ठ हैं। अदालत के फैसले के बाद और हाईकोर्ट के फैसले के बाद बार-बार यह गलत बात सदन में रखना हुकुम सिंह जी को शोभा नहीं देता। हाईकोर्ट ने उत्तर प्रदेश के उस वाकये पर अपनी रूलिंग दे दी है और उस वाकये को गलत बताया है कि कोई बलात्कार नहीं हुआ। यह हाईकोर्ट की रूलिंग है उसके बाद यह बात कहना इतने सीनियर और संजीदा मंत्री को शोभा नहीं देता। मैं इसका खण्डन करता हूं और इसकी निन्दा करता हूं।

* श्री हुकुम सिंह–

मान्यवर, मैं बहुत बड़ा विद्वान तो नहीं हूं। मैंने केवल "अमानवीय व्यवहार" कहा है और जो शब्द आपने कहा उसका प्रयोग मैंने नहीं किया। आपने मा० सुप्रीम कोर्ट के निर्णय की बात कही है, मैंने इसलिये ध्यान आकर्षित किया था भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का, यह स्वयं राम नरेश जी और उनके वरिष्ठ नेता नारायण दत्त तिवारी जी जब रामपुर तिराहे पर गये थे वहां 5 लाख लोग थे उन्होंने बताया था कि जो घटना यहां घटी है उसने जलियांवाला काण्ड को भी पीछे छोड़ दिया है। उस समय कौन मुख्यमंत्री था ? मैं उत्तेजना पैदा नहीं करना चाहता। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि संविधान की हत्या कर दी गयी, सबसे बड़े दल को आमंत्रित नहीं किया। 1993 में भारतीय जनता पार्टी के 176 और सपा के 107 सदस्य थे। सबसे बड़ी पार्टी थी, क्या उसको सरकार बनाने के लिये आमंत्रित किया गया ? 1996 में भाजपा की 175 संख्या थी तब सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने क्या कहा था, कहा था कि कोई व्यवस्था नहीं है कि सबसे बड़े दल को आमंत्रित किया जाए। जब हम बात कहते हैं तो संविधान की परिभाषा दूसरी होती है और जब आप कहते हैं तो संविधान की परिभाषा दूसरी होती है ? कुंवर रेवती रमण सिंह जी ने बोम्मई केस को कोड किया है। अगर हाउस चल रहा है उस समय बहुमत का परीक्षण सदन में होना चाहिये लेकिन महामहिम को यह अधिकार है कि वे किसे बुलायें। यह उनकी संतुष्टि पर है कि वह पार्टी स्थाई सरकार देने की स्थिति में है या नहीं। मान्यवर, मैं बिना उत्तेजना पैदा किये अपनी बात कह रहा हूं। हमारी पार्टी की सरकार पर लांछन लगाये गये कि बड़े-बड़े वायदे किये, कितने लोगों को नौकरी दी है ? राजनाथ सिंह जी का नाम लिया गया। मान्यवर, भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने ही 35 हजार नौजवानों को नौकरी दी और प्रदेश में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसने बी० टी० सी० पास कर ली हो और रोजगार नहीं मिला हो। यह हमारी उपलब्धि में है। हमने चुन-चुनकर मौका दिया। जब बी० टी० सी० प्रशिक्षित लोग नहीं मिले तब बी० एड० को मौका दिया और आज भी हम जनता की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिये यहां आये हैं। हमें अवसरवादी कहते हैं। मान्यवर, ये अगर गठबन्धन करेंगे तो वह अवसरवादी नहीं होगा अगर हम गठबन्धन करेंगे तो वह अवसरवादी होगा। एक स्थिर

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

सरकार देना चाहेंगे तो वह अवसरवादी हो जायेगा । मान्यवर, मैं कुछ तथ्यों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं ।

(इस समय 5 बजकर 25 मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए ।)

(प्रतिपक्ष के कुछ सदस्यों के बोलने पर)

श्री अध्यक्ष–

आप लोग टीका-टिप्पणी न करें ।

श्री हुकुम सिंह–

मान्यवर, एक ही बात कही गयी है कि प्रतिपक्ष में बैठने का वायदा किया था, विपक्ष में बैठने का वायदा किया था । मान्यवर, विपक्ष तो बाद में आता है पहले पक्ष तो आये । पक्ष प्रस्तुत करने की स्थिति में आप थे ? दो महीने की मोहलत मिलने के बाद भी आप अपना पक्ष प्रस्तुत नहीं कर सके तो प्रतिपक्ष में हम कहां से बैठ पाते ? आपको दी गई मोहलत के बाद ही हमने यह कदम उठाया है । अगर इसमें कुछ कमी रही है तो उस कमी को दूर करने का हमारा दायित्व है । आज हम यह संकल्प लेकर आये हैं कि पूरे पांच साल गठबन्धन की सरकार उत्तर प्रदेश में रहेगी । ईमानदारी से रहेगी और यह गठबन्धन केवल छोटे-छोटे नारों पर नहीं है, यह ईमानदारी पर टिका हुआ है और हम ईमानदारी पर सरकार चला कर दिखायेंगे । आप प्रयास करके देख लें । मान्यवर, मैं इनकी पीड़ा को जानता हूं, जब केन्द्र में कांग्रेस को सपा के समर्थन की आवश्यकता पड़ी तो यह कहते हैं कि हम किसी विदेशी महिला को समर्थन देने वाले नहीं हैं । उसी तरह जब इन्हें कांग्रेस की आवश्यकता पड़ी तो इन्हें जवाब मिला कि जब यह हमें प्रधानमंत्री नहीं बना सकते हैं तो हम इन्हें मुख्यमंत्री कैसे बना दें । मान्यवर, प्रदेश की जनता से वायदा किया है कि हम पांच साल स्थाई सरकार चलाकर दिखायेंगे ।मैं इन्हीं शब्दों के साथ, मान्यवर, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं ।

श्री प्रदीप माथुर–

माननीय अध्यक्ष जी, नेता सदन के विश्वास मत के विरोध में आपने मुझे बोलने का मौका दिया इसके लिये मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं । मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी को सत्ता पक्ष में बैठने की आदत सी पड़ गई है । केन्द्र में जैसी इन्होंने सरकार बनायी, एक दूसरे को गाली-गलौज करी और एक हद तक यह किया और आज बसपा-भाजपा गठबन्धन करके सत्ता में जिस तरह से काबिज हुए हैं उसकी आज भी थू-थू हो रही है और प्रदेश की जनता त्राहि-त्राहि कर रही है । मान्यवर, मैं नेता सदन से पूछना चाहता हूं कि आज उन्होंने घोषणा की कि भारतीय जनता पार्टी साम्प्रदायिक पार्टी नहीं है, तो मैं मथुरा के बारे मे पूछना चाहता हूं, जब भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों ने वर्ष 1995 में विष्णु महायज्ञ के नाम पर कृष्ण जन्म भूमि मन्दिर में घुसने की कोशिश की थी और आपने ही वहां पर आर्मी फोर्स और पुलिस बल लगाकर उनके नापाक मंसूबों को समाप्त किया था । आज यह कहते हैं कि इनकी पार्टी साम्प्रदायिक नहीं है । मान्यवर, यह साम्प्रदायिक पार्टी नहीं है तो आपने इस पार्टी से गठबन्धन कैसे कर लिया । मान्यवर, एक मुस्लिम युवक जो अलीगढ़ का रहने वाला था, भारतीय जनता पार्टी के कुछ नेताओं ने मिट्टी का तेल डालकर उसे जला दिया था और इसी भारतीय जनता पार्टी के कुछ बड़े नेताओं ने उस मामले को समाप्त करने की एक साजिश रची थी । मैं पूछना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी साम्प्रदायिक पार्टी है कि नहीं । मैं बहुजन समाज पार्टी से पूछना चाहता हूं कि वह क्यों मौका दे रही है भारतीय जनता पार्टी को सत्ता में बैठने के लिये ?

मान्यवर, आज गुजरात की स्थिति देखिये । पूरा देश यह कह रहा है कि गुजरात में दंगे भारतीय जनता पार्टी के इशारे पर हुए हैं । भारत के प्रधान मंत्री ने भी शर्म से माफी मांगी है । मैं नेता सदन से पूछना चाहता हूं कि इसके बाद भी आप इनको एन०ओ०सी० दे रही हैं कि भारतीय जनता पार्टी साम्प्रदायिक पार्टी नहीं है । मैं यह कहना चाहता हूं कि माननीय नेता सदन के भाषण में उम्मीद कर रहा था कि गरीब किसानों की बात करेंगी, उन किसानों की बात करेंगी जिनका गेहूं खरीदने के लिए पैसा मुक्त नहीं किया गया, किसान चेक लिए घूम रहे हैं । किसान त्राहि-त्राहि कर रहा है । नहरों में पानी नहीं है, बिजली नहीं मिल रही है, कानून व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी है । प्रदेश की आर्थिक स्थिति जर्जर हो चुकी है । पिछली भारतीय जनता पार्टी की सरकार में 96 मंत्री थे, वह करोड़ों-करोड़ रुपये की चाय पी गये । अब आप कहती हैं कि हमारी वित्तीय स्थिति जर्जर है ।

श्री अध्यक्ष–

अब आप समाप्त करिये ।

(सत्ता पक्ष के एक सदस्य द्वारा टोकने पर ।)

श्री प्रदीप माथुर–

आप बैठ जाइये, मंत्री नहीं बनेंगे । मान्यवर, आर्थिक स्थिति खराब है तो विकास क्या होगा ? यह आपका जो बेमेल गठबन्धन हुआ है उसकी जनता में थू-थू हो रही है ।

श्री अध्यक्ष–

अब आप बैठ जाइये । लिखा नहीं जायेगा ।

श्री प्रदीप माथुर–

[xxx]

श्री अध्यक्ष–

कृपया समाप्त कीजिये । अब बिल्कुल नहीं लिखा जायेगा ।

श्री प्रदीप माथुर–

[xxx]

श्री अध्यक्ष–

अब आप बैठिये । अब लिखा नहीं जा रहा है । मैंने अगले वक्ता श्रीमती प्रेमलता कटियार जी का नाम बुला लिया है ।

श्री प्रदीप माथुर–

[xxx]

नोट :–[xxx] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

* श्रीमती प्रेमलता कटियार–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीया नेता सदन द्वारा प्रस्तुत विश्वास मत का समर्थन करने के लिए खड़ी हुई हूं। मैं आज 11.00 बजे से पक्ष और प्रतिपक्ष के कई माननीय सदस्यों को सुनने के बाद यह कहने को विवश हूं कि 14वीं विधान सभा के भाग्य में जिस तरह के जनमत का निर्णय आया था वह निश्चित रूप से कष्टकारी था और अनिर्णय की स्थिति से युक्त था। पहली बार एक स्वथ्य व्यवस्था के नाते महामहिम राज्यपाल महोदय ने बहुत ही स्पष्ट, विवाद मुक्त, निष्पक्ष और पारदर्शी व्यवस्था देते हुए सभी दलों को पूरा मौका दिया कि वह सरकार बनायें। पूरा अवसर देने के बाद संयम बरतते हुए भारतीय ...ा पार्टी और सत्तापक्ष के गठबन्धन से सरकार बनी। पूरा अवसर सबको मिला और विपक्ष में बैठने हमारे निर्णय के बावजूद प्रदेश के हित में यह सरकार बनी। सभी तथाकथित धर्म निरपेक्ष राजनीतिक दलों को अवसर प्रदान किया गया कि वह उत्तर प्रदेश में सरकार बनायें और हमें विपक्ष में बैठने का अवसर दें लेकिन वह सरकार नहीं बना सके, अतीत इसका गवाह है। कुछ राजनीतिक दलों ने अपने व्यवहार से या किसी अन्य कारणों से इस लायक नहीं छोड़ा था कि सरकार बन सकती। इसलिए जनहित में, प्रदेश की आर्थिक जर्जर व्यवस्था को और कष्टकारी न बनाने के लिए और पक्ष और विपक्ष के वह तमाम भाई-बहन जो अपने क्षेत्र की जनता से वादा करके आये थे उसके सहज सुलभ निर्वहन के लिए सरकार बनाने के लिए यह गठबन्धन हुआ है। यह सक्रिय समाज की अभिव्यक्ति है। यह गठबन्धन प्रदेश की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ और प्रदेश को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करेगा। यह गठबन्धन प्रदेश की जनता की कठिनाइयों को दूर करने के लिए संकल्पित है। हमारी पूर्ववर्ती सरकार ने बड़े पैमाने पर जिन कार्यों का शुभारम्भ किया था उन्हीं कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए बहुत कार्य करने हैं और यह गठबन्धन पूरी सहजता के साथ, सक्रियता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करेगा। हम शरीर के लिए 100 वर्ष की आयु सोचते हैं लेकिन पल की खबर नहीं होती है लेकिन यह गठबन्धन की सरकार अपने सुकृत्यों और जनहित के नाते पूरा-पूरा कार्यकाल पूरा करेगी। इन शब्दों के साथ मैंने विश्वास मत के पक्ष में अपनी बात कही है। धन्यवाद।

(श्री अम्बिका चौधरी को पुकारा गया।)

श्री अध्यक्ष–

आप केवल 7 मिनट में अपनी बात समाप्त करें।

श्री अम्बिका चौधरी–

मान्यवर, मुझे बहुत कम समय चाहिए। मैं हमेशा ही कम समय लेता हूं। माननीय अध्यक्ष जी, प्रदेश की मुख्य मंत्री माननीया कुमारी मायावती जी द्वारा रखे गये विश्वास मत के प्रस्ताव की चर्चा में मुझे अपने विचार व्यक्त करने के लिए आपने मौका दिया इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। लगभग 7 धण्टे से विश्वास मत पर चर्चा जारी है और बहुत विद्वतापूर्ण ढंग से बहुत सारे तथ्यों को, संविधान के प्राविधानों को कई राजनीतिक घटनाओं और पिछले इतिहास का यहां पर पक्ष और विपक्ष के द्वारा उल्लेख किया गया। मुझे इस पर बहुत ज्यादा जोर देकर यह बात नहीं कहनी है। मैं वहां से भी नहीं

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

शुरू करना चाहता हूं कि किस तरह से यह गठबन्धन किया गया । मैं इतना निवेदन करना चाहता हूं कि चर्चा का उद्देश्य संख्या बल के आधार पर किसी प्रस्ताव के पक्ष या विपक्ष में निर्णय करने की बात नहीं है । इस प्रस्ताव का जनता से सीधे सरोकार है । उत्तर प्रदेश की तस्वीर कैसी बन रही है हम उन उत्तरदायित्वों का निर्वाह किस तरह से कर रहे हैं इसलिए इस प्रस्ताव पर चर्चा की आवश्यकता है । आप सिर्फ संख्या बल के आधार पर इसको चलाने का काम न करें । विश्वासमत पर चर्चा के समय, आवश्यकता इस बात के परीक्षण की है कि जनता सरकार पर कितना विश्वास कर पा रही है । इस सरकार की जो नीतियां हैं, जो क्रियाकलाप हैं उन पर जनता कितना विश्वास कर रही है । भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने क्या-क्या किया, भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने बहुजन समाज पार्टी की नेता के बारे में क्या-क्या कहा, यह सारा प्रदेश जानता है । जब प्रतिपक्ष में श्री स्वामी प्रसाद मौर्य जी व श्री लालजी वर्मा हमारे बगल में बैठते थे उस समय इन्होंने जो कहा वह एक राजनीतिक कार्यकर्ता होने के नाते मैं जानता हूं कि इन्होंने ऐसा क्यों कहा ? उस समय यह अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह कर रहे थे । इन्होंने जो कहा उसको दोहराना नहीं चाहता हूं ।

भारतीय जनता पार्टी के नेता और कदाचित नेता सदन ने बताया कि मजबूरी में यह गठबन्धन करना पड़ा । मैं, नेता सदन सुश्री मायावती जी से कहना चाहता हूं कि आप साम्प्रदायिकता के बारे में जो क्लीन चिट दे रही हैं, उसकी मियाद तय कर दें, सर्टीफिकेट की तरह कि यह सर्टफिकेट तीन माह, छह माह के लिए वैध है इसको फिर रिनुअल करना पड़ेगा । क्योंकि सहारनपुर में क्या कहा, लखनऊ में क्या कहा या बेगम हजरत महल पार्क में क्या कहा, यह विधान सभा की कार्यवाही में दिया गया वक्तव्य या सर्टीफिकेट फिर दुबारा आपके सामने पढ़ा जाएगा ? कि भा०ज०पा० साम्प्रदायिक पार्टी नहीं है । इसलिये यह मियाद तय कर दें कि तीन माह यह पार्टी साम्प्रदायिक नहीं है । इसको असीमित करने का काम न करें । इसको बिना शर्त गैर साम्प्रदायिक पार्टी घोषित कर दिया तो देश की राजनीति में दलितों की जो अपेक्षाएं आपसे हैं उनको आघात पहुंचेगा । यह समाजवादी पार्टी की राय लेने का सवाल नहीं है, सवाल यह है कि गठबन्धन के बारे गठबन्धन के 24 घण्टे पूर्व आपकी क्या राय थी । यह कहा जा रहा है कि यह सरकार तीन माह चलेगी, छह माह चलेगी लेकिन हमारा यह प्रयास होगा कि यह सरकार तीन मिनट भी सत्ता में न रहे । उसके लिए हम जो भी उपाय कर सकते हैं चाहे सदन के बाहर हों या अन्दर विश्वास मत पर हो, श्री राज्यपाल के अभिभाषण पर रखे गए धन्यवाद प्रस्ताव पर या किसी मनी बिल पर, हम बार-बार प्रयास करेंगे आज से लेकर तब तक-जब तक यह गठबन्धन चला नहीं जाता है । प्रत्येक अवसर पर चाहे सदन के बाहर हम इसकी लड़ाई जारी रखेंगे जितनी हमारी क्षमता है, सामर्थ्य है, उतना हम पुरजोर प्रयास करेंगे कि यह सरकार न चल सकें । मैं एक घटना का जिक्र करना चाहता हूं । बार-बार दलितों के हित की बात की जाती है । आपके शपथ लेने के 6 घण्टे के अन्दर एक ऐसे दलित नौजवान की हत्या हो गई थाना चितबड़ा बलिया में जिसका राजेन्द्र नाम था । जो उप ब्लाक प्रमुख भी था यही नहीं...मैंने और मोहम्मद रिजवी साहब ने जाकर 3 तारीख को बलिया के पुलिस कप्तान को चिट्ठी दी कि इस व्यक्ति की हत्या हो जायेगी । कप्तान ने उस चिट्ठी पर आदेश लिख दिया और उसी रात में 6 घंटे के भीतर उस व्यक्ति की हत्या हो गई । मान्यवर, आज तक दरोगा के खिलाफ कार्यवाही नहीं हुई न ही मुजरिम पकड़ा गया । मान्यवर, मुख्य मंत्री जी के शपथ लेते ही सूचना देने के बाद भी उस दलित व्यक्ति की हत्या हो गई । श्रीमन्, मैंने कुछ तथ्यों का जिक्र किया, मैं किसी उत्तेजनात्मक या विवादास्पद बात में नहीं जाना चाहता हूं । सन् 1967 की राजनीति में जनसंघ साम्प्रदायिक थी कि नहीं,

यह मैं नहीं जानता क्योंकि हम उस समय छोटे थे जो लोग राजनीति करते रहे होंगे वे जानते होंगे। विद्वानों से पूछ लीजियेगा। 1977 में छात्र राजनीति में हम लोग थे, उस समय की भागीदारी याद है। 1977 में किसी भारतीय जनता पार्टी और जनसंघ का सहयोग नहीं लिया गया था। इमरजेन्सी के चलते जय प्रकाश जी के नेतृत्व में, आन्दोलन हिन्दुस्तान में हुआ। श्री जय प्रकाश की सम्पूर्ण क्रान्ति के नारों के साथ सभी दलों ने अपनी-अपनी पहचान को छोड़कर एक अलग पार्टी जनता पार्टी बनाई जिसमें मुलायम सिंह जी द्वारा किसी का सहयोग नहीं लिया गया। (व्यवधान) मान्यवर, मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि माननीया मुख्य मंत्री जी, जो तथ्य है उस तथ्य को स्वीकार करें। आपने जिन भी कारणों से यह गठबन्धन किया है उसके बारे में प्रदेश की जनता को जानने का पूरा पूरा हक है। जनता ने हमको आपको चुनकर प्रतिनिधि के रूप में यहां पर भेजा है और उसी के चलते आप आज यहां मुख्य मंत्री बनी हैं, उसी से यह प्रतिपक्ष है, सदन है। जनता को जानने का पूरा पूरा अधिकार है। परिभाषाओं को बदलने का काम, धोखाधड़ी करने का काम नहीं होना चाहिये। गलत लोगों के साथ आपको किन मजबूरियों में सरकार बनानी पड़ी इसको जनता के सामने रखिये। दोबारा चुनाव हो या न हो, यह विवाद का विषय है। मैं कहना चाहता हूं कि यदि आप में नैतिक साहस नहीं है तो आपको मुख्य मंत्री पद पर रहने और सरकार चलाने का कोई अधिकार नहीं है। आपको यह नैतिक साहस दिखाना चाहिये। अगर संख्या बल है तो हमारे अनुरोध के बाद भी सरकार चलती रहेगी। इसी के साथ मैं सत्ता पक्ष में बैठे उन लोगों को भ्रमित नहीं कहूंगा, क्योंकि विद्वान हैं, लेकिन वे छोटे-मोटे स्वार्थों के कारण, लाभ पाने की लालसा में कि अभी दूसरा विस्तार होगा, तीसरा विस्तार होगा। पहले में, पहली पंक्ति में बैठे लोगों को तो दूसरे या फिर तीसरे विस्तार में हमको लाभ मिलेगा। इस लालच में आप सरकार को समर्थन देने के लिये मजबूर हैं। आज आप अन्तर्आत्मा की आवाज सुनिये प्रदेश की जनता की आवाज सुनिये, जिसने आपको जिताकर यहां भेजा है उसके अनुसार अपना मत व्यक्त करिये और सरकार का जीवन आज ही यहां समाप्त कर देने का काम करेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं, इस विश्वास मत के प्रति विरोध प्रकट करता हूं।

आवास,नगर विकास, पर्यटन, श्रम, पंचायती राज, संस्थागत वित्त, दुग्ध विकास, पशुधन एवं वैकल्पिक ऊर्जा मंत्री (श्री लालजी टण्डन)–

मान्यवर, काफी देर से इस पर चर्चा हो गई है अब इसको समाप्त करिये।

श्री हाजी याकूब–

मान्यवर, मैं इस सरकार का समर्थन करता हूं और आपसे कहना चाहता हूं कि यह विपक्ष के लोग जो आज मुस्लिम समाज, दलित समाज की बात करते हैं। (घोर व्यवधान)

संसदीय कार्य, वस्त्रोद्योग, रेशम उद्योग मंत्री (श्री सुखदेव राजभर)–

मान्यवर, मैं एक निवेदन करना चाहता हूं कि एक अल्प संख्यक समाज का व्यक्ति अपनी बात कह रहा है और यह लोग इतना उपद्रव कर रहे हैं। दया तो करिये इनके ऊपर।

श्री अध्यक्ष–

कृपया शान्त रहें।

श्री हाजी याकूब–

मुसलमानों की रहनुमाई का दावा करने वाले लोगों से कहना चाहता हूं कि आज से पहले जब माननीय मुलायम सिंह की सरकार चली थी।

(व्यवधान)

मैं कहना चाहता हूं माननीय मुलायम सिंह यादव की सरकार जब उत्तर प्रदेश में थी उस वक्त 32 जिलों में दंगे हुये थे व कर्फ्यू लगा हुआ था, गांव-गांव तक में मुसलमानों का कत्लेआम हुआ था और सैकड़ों मंदिर-मस्जिदें शहीद हुये, तब स० पा० के लोग कहां थे, अपने गिरेबान में झांके।

(व्यवधान)

मुसलमान भाइयों पर अत्याचार किये जा रहे थे। मैं बताना चाहता हूं बहुजन समाजवादी पार्टी की सरकार दो बार रही है, उसने मुसलमानों के हित के लिये,उसकी बहबूदी के लिये कार्य किया।

(व्यवधान)

मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

मान्यवर, बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि समाजवादी पार्टी के नेता प्रतिपक्ष श्रीमन्, और उनके दूसरे साथी अपने आपको मुस्लिम समाज का बहुत बड़ा हिमायती मानकर चलते हैं।

(व्यवधान)

दूसरी तरफ बहुजन समाज पार्टी के एक मुस्लिम विधायक को जब आपने बोलने का मौका दिया तो उनकी बात न लिखी जा सके यह लोग इतना शोरगुल कर रहे हैं इससे इनकी मुस्लिम विरोधी मंशा साफ जाहिर होती है मैं इसका विरोध करती हूं।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

कृपया शान्ति बनाये रखें, अभी तक सात घंटे से सदन में बहुत अच्छे ढंग से चर्चा हुई। विश्वास के मत के प्रस्ताव पर कुछ तीखी और कड़ुवी बात हुई। सबको सदन ने सुना। मैं समझता हूं जब समापन की ओर बढ़ रहे हैं, उधर की बात इधर से सुनी जा रही थी और इधर की बात उधर से सुनी जा रही थी, तो जो मत भिन्नता होगी वह तो सदन में प्रकट होगी, अखबार के माध्यम से और समाचार के माध्यम से प्रकट होगी, लेकिन सहिष्णुता भी एक गुण है इसका ध्यान रखना चाहिये।

(व्यवधान)

श्री हाजी याकूब–

मान्यवर, प्रदेश में दो महीने तक किसी की भी सरकार नहीं बनी आज बी० एस० पी०, भाजपा एवं सहयोगी दलों ने मिलकर सरकार बनाई तो यह लोग तरह-तरह की बातें कर रहे हैं।

(व्यवधान)

मान्यवर, अब इससे पहले बी० एस० पी० की दो बार सरकार रही तो मुसलमान समाज के लोगों की सुरक्षा और मान-सम्मान का पूरा ध्यान रखा गया जबकि स० पा० की सरकार ने 32 जिलों में दंगे और कर्फ्यू लगवायें।

(व्यवधान)

मान्यवर, हमारी सरकार कोई भी ऐसा बयान नहीं देगी कि मुस्लिम समाज के लोग अपनी रक्षा के लिये अपनी जेब में कट्टा रखें।

(व्यवधान)

स० पा० की सरकार में मुख्य मंत्री जी ने कहा था कि मुस्लिम समाज के लोग ..... । मैं कहना चाहता हूं जब आपके मुख्य मंत्री थे तो मुस्लिम समाज के लोगों के आर्म्स लाइसेन्स क्यों नहीं बनवाये ?

(व्यवधान के मध्य)

आज उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी की सरकार ने पूरे उत्तर प्रदेश के मुसलमानों को संरक्षण दिया है जिससे उन्होंने बहिन मायावती जी पर विश्वास व्यक्त किया है। इससे मुस्लिम समाज का कल्याण होगा। मैं बहिन मायावती जी का तहे-दिल से समर्थन करता हूं।

(व्यवधान)

(समय शाम के 06 बजकर 02 मिनट)

श्री अध्यक्ष–

कृपया शान्त रहें। माननीय टण्डन जी ने एक अनुरोध किया है। उन्होंने कहा कि लगभग सात घंटे से बहस चल रही है और अब इसको समाप्त किया जाय। कुछ माननीय सदस्य बोलने से रह गये हैं। लेकिन जो स्वरूप है चर्चा का कभी तो मुझे लगता है कि जैसे केन्द्र और प्रदेश की पुरानी सरकार का विरोध कर रहे हैं ! पुरानी सरकार ने क्या किया, कैसे जोड़-तोड़ की यह संगत नहीं है। संगत तो यह है कि इस सरकार में विश्वास मत है। जो साथी बोलने से रह गये हैं अभी महामहिम श्री राज्यपाल जी के अभिभाषण पर चर्चा होनी है उसमें अपनी बात कह दें। माननीय नेता प्रतिपक्ष सहमत हैं माननीय नेता सदन भी सहमत हैं। माननीय नेता सदन क्या आप उत्तर भाषण देना चाहेंगी या फिर मतदान करा लें ?

सुश्री मायावती–

मान्यवर, मैं उत्तर भाषण देना चाहूंगी। माननीय अध्यक्ष जी, विश्वास मत प्रस्ताव पर मा० नेता प्रतिपक्ष और विरोधी दलों ने, नेताओं ने और अन्य माननीय सदस्यों ने तथा सत्ता पक्ष की ओर से भारतीय जनता पार्टी की ओर से तथा उनके सहयोगी दलों ने भी अपने विचार रखे हैं। विपक्ष की तरफ से कुछ सवाल उठाये गये उनका जवाब सत्ता पक्ष की ओर से काफी हद तक उनको मिल गया होगा इसलिए मैं उनका जवाब देना उचित नहीं समझती हूं। लेकिन दो तीन बातें यहां जो विपक्ष की तरफ से उठायी गयी हैं उनका जवाब देना मैं जरूरी समझती हूं। विपक्ष की ओर से यह बात उठायी गयी कि नेता सदन ने, उत्तर प्रदेश की जनता जो विभिन्न समस्याओं से जूझ रही है उनकी तरफ ध्यान नहीं आकर्षित किया है। मैं यह कहना चाहती हूं कि मेरी सरकार कहने में नहीं करने में विश्वास करती है।

मैं विपक्ष को यह बताना चाहती हूं कि जब मैं 1997 में 6 महीने के लिए मुख्य मंत्री बनी थी तो मैंने समाज के हर वर्ग के लिए उनके हितों के लिए पूरा ध्यान रखा लेकिन जो दबे-कुचले लोग थे, पिछड़े वर्ग के लोग या अल्पसंख्यक समुदाय के लोग सिक्ख, ईसाई, पारसी, या मुसलमान इनका, प्रमुखता के आधार पर ध्यान रखा । मैंने 6 महीने के कार्यकाल में 6 साल के बराबर विकास कार्य करके दिखाया था । यह उत्तर प्रदेश की जनता जानती है, इसका प्रमाण-पत्र मुझे विपक्ष से लेने की जरूरत नहीं है । इसका प्रमाण-पत्र उत्तर प्रदेश की जनता ने मुझे दे दिया है । इसलिए जब 14वीं विधान सभा के लिए आम इलेक्शन हुआ तो बसपा का जनाधार बढ़ा है, उसकी सीटें बढ़ी हैं यह इसका सबसे बड़ा सबूत है । इसके अलावा यह भी बात उठायी गयी कि पूर्व की सरकार ने जो सामाजिक न्याय समिति में अलग से अति पिछड़ों और अति दलितों को अलग से आरक्षण की बात कही तो नेता सदन ने इसके बारे में कुछ नहीं कहा है । मैं उनको स्पष्ट करना चाहती हूं कि सामाजिक न्याय समिति के माध्यम से अति दलितों, अति पिछड़ों को अलग से आरक्षण देने की बात आई थी तो ब०स०पा० ने सदन के बाहर ही नहीं सदन के अन्दर भी इसका समर्थन किया था । इस समय यह मामला अदालत में रुका पड़ा है । हमारी सरकार इसके लिए पूरा प्रयत्न करेगी । भारतीय संविधान की समीक्षा के बारे में भी यहां पर बात उठायी गयी है कि जिनके साथ ब०स०पा० बैठी हुयी है वह भारतीय संविधान की समीक्षा के पक्ष में हैं और आप संविधान समीक्षा के खिलाफ । मैं यह स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि भारतीय संविधान की समीक्षा करते समय यदि दलितों, पिछड़ों तथा अल्पसंख्यकों का अहित नहीं होता है और उनका पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है तो हम अपने पूर्व के निर्णय पर पुनर्विचार करेंगे । जहां तक इन्होंने साझा प्रोग्राम के बारे में भी यहां पर यह कहा गया कि नेता सदन ने अपनी सरकार के न्यूनतम साझा प्रोग्राम के बारे में नहीं बताया मैं स्पष्ट करना चाहती हूं कि 3 मई को मैंने जब मुख्य मंत्री पद की शपथ ली थी तो शपथ लेने के बाद जब मैंने पहली प्रेस कान्फ्रेंस की तो उस प्रेस कान्फ्रेंस में यह सवाल पूछा गया था, मैंने यह जवाब दिया था कि बी०एस०पी०, बी०जे०पी० और उनके सहयोगी दलों की जो यह साझा सरकार है जो मेरे नेतृत्व में चल रही है तो सरकार बनने से पहले यह तय हो गया था कि किन प्रोग्राम को लेकर यह सरकार बनायी जायेगी और तीन मई की प्रेस कान्फ्रेंस में जो हमारे न्यूनतम साझा कार्यक्रम हैं जो मैंने प्रेस के रिपोर्टर्स को बता दिये थे मेरी साझा सरकार के न्यूनतम प्रोग्राम कोई लम्बे चौड़े नहीं हैं बहुत स्पष्ट हैं कि हमारी सरकार प्रदेश में अन्यायमुक्त, अपराधमुक्त, भयमुक्त व आर्थिक मामलों में विकास को आगे बढ़ाने का वातावरण पैदा करेगी समाज के हर वर्ग का ध्यान रखेगी लेकिन जो दबे कुचले वर्ग हैं उनका प्राथमिकता के आधार पर ध्यान रखा जायेगा कानून व्यवस्था को चुस्त दुरूस्त बनाया जायेगा यह मेरी सरकार के साझा न्यूनतम कार्यक्रम हैं । (सत्तापक्ष की ओर मेंजों की थपथपाहट) 3 मई को प्रेस मीडिया को बता दिया था ।

मान्यवर, ट्रान्सफर को लेकर बात उठायी गयी कि एक-एक मिनट में एक-एक ट्रान्सफर हुए बहुत तकलीफ हो रही है ट्रान्सफर्स को लेकर के विपक्ष को बहुत तकलीफ हो रही है । मैं उनको यह बताना चाहती हूं कि पंजाब जो उ० प्र० के मुकाबले में बहुत छोटा स्टेट है उ० प्र० की डेढ़ कमिश्नरी के बराबर है अभी वहां पर नयी सरकार का गठन हुआ, ज्यादा दिन नहीं हुए हैं क्योंकि उ० प्र० के साथ ही पंजाब के भी चुनाव हुए थे वहां पर कांग्रेस पार्टी की सरकार बनी है वहां के मुख्य मंत्री ने अभी 3-4 दिन पहले एक चैनल पर कहा, जब उनसे पूछा गया कि सत्ता में आने के बाद आपने लगभग 800 तबादले कर दिये हैं आपको क्या कहना है, उन्होंने कहा कि मैंने 800 ट्रान्सफर्स किये हैं अभी और भी करेंगे यह मेरा

अधिकार है । जब पंजाब के मुख्य मंत्री 800 तबादले करते हैं, जबकि वह उ० प्र० डेढ़ कमिश्नरी के बराबर स्टेट है, क्योंकि वह एक अपर कास्ट के बेटे हैं और जब दलित की बेटी ट्रान्सफर कर दे तो आपको तकलीफ हो रही है, यहां आपकी मनुवादी मानसिकता साफ नजर आती है । यह ट्रान्सफर करना मेरा अधिकार है । उ० प्र० की कानून व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने के लिये प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त करने के लिए माननीय सुप्रीम कोर्ट के जो निर्देश हैं उसको ध्यान में रखकर तबादले किये गये हैं । मैं समझती हूं कि इनको कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए । जब भा०ज०पा० और हमारे सहयोगी दलों ने मिलजुलकर काम किया है उनको तकलीफ नहीं है तो आप लोगों को तकलीफ क्यों हो रही है ? मैं समझती हूं कि तकलीफ नहीं होनी चाहिये । उद्यान को लेकर बात कही गयी उ० प्र० की राजधानी लखनऊ में गोमती नगर के इलाके में जो उद्यान बन रहा है कहा गया कि उस पर 100 करोड़ रु० लग गये हैं । आपका ध्यान उद्यान की तरफ है और किसी तरफ नहीं है । माननीय अध्यक्ष जी, यह नहीं बता रहे हैं कि यह उद्यान किस महान व्यक्ति के नाम पर बनाया गया है । परम पूज्य बाबा साहेब डा० भीम राव अम्बेदकर जी के सम्मान में बनाया गया है जिन्होंने संविधान बनाया । वह बाबा साहेब के नाम से । अब इनको तकलीफ हो रही है । (व्यवधान) मेरे मुख्य मंत्री बनने के बाद कुछ घटनायें घटी हैं, मुझे मालूम है, मुझे यह रिपोर्ट मिली है, उसमें जिन लोगों का हाथ है जैसे ही रिपोर्ट आयेगी तो उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाई की जायेगी । मैं, अन्त में और ज्यादा समय न लेते हुए, मैं पुनः इस सदन से अनुरोध करती हूं कि उत्तर प्रदेश की जनता के हित को ध्यान में रखते हुए सर्वजन के हित को ध्यान में रखते हुए मेरे द्वारा प्रस्तुत इस विश्वास मत के प्रस्ताव का समर्थन करने का कष्ट करें ।

*श्री कल्याण सिंह–

मान्यवर, आपके माध्यम से आपकी अनुमति से मैं माननीय नेता सदन से एक स्पष्टीकरण चाहता हूं क्योंकि उनकी ओर से भी इस संबंध में चर्चा हुई थी । अयोध्या में 6 दिसम्बर, 1992 को एक घटना घटित हुई, 2 एफ० आई० आर० दर्ज हुई, दो का नोटीफिकेशन हो गया, उन पर मुकदमा चलेगा । कोर्ट ने कह दिया कि 13 लोगों का नोटीफिकेशन नहीं हुआ उन पर मुकदमा नहीं चलेगा । इसमें श्री लाल कृष्ण आडवाणी, श्री मुरली मनोहर जोशी और स्वयं मैं भी था । उस समय एक प्रश्न आया था कि नोटीफिकेशन जारी नहीं हुआ, मैं मांग कर रहा हूं कि दूसरा नोटीफिकेशन जारी हो ।

श्री अध्यक्ष–

यह मांग है स्पष्टीकरण नहीं, अलग से मांग कीजियेगा । यह स्पष्टीकरण नहीं है ।

श्री कल्याण सिंह–

क्या स्पष्टीकरण मुख्य मंत्री जारी करेंगी ?

*सुश्री मायावती–

माननीय अध्यक्ष जी, यह जो बात प्रेस नोटीफिकेशन के बारे में कही गयी है । मैंने अभी ज्यादा दिन नहीं हुए हैं मुख्य मंत्री का पद-भार संभाला है इस मामले के सभी कानूनी पहलुओं को देखकर मैं छान-बीन कराकर ही फैसला ले पाऊंगी और इसकी जानकारी मैं इनको दे दूंगी ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री अध्यक्ष–

5 मिनट तक अभी घंटी बजायी जायेगी इसके बाद प्रवेश द्वार बन्द कर दिये जायेंगे ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

माननीय अध्यक्ष महोदय, लगभग सवा सात घंटे तक चली बहस में सत्ता पक्ष की तरफ से पक्ष और विपक्ष में तर्क रखे गये हैं, सबसे पहले नेता सदन ने अपनी राय का इजहार किया है । मान्यवर, मैंने जो बात शुरू में कही थी और उसी पर 2 मिनट में बोल देना चाहता हूं, इस वक्त तो नेता सदन ने सफाई दी है और जो एजेण्डा भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर और जिन मुद्दों को लेकर सरकार बनायी है, टेक्निकल सरकार है यह कामकाज चलाने की सरकार है, यह भरोसे की सरकार नहीं है लेकिन इस वक्त भी जवाब में नेता सदन ने जो कुछ कहा है उसमें मेरा यह कहना है कि प्रदेश की शान्ति के बारे में एक शब्द भी नहीं था ।

*खादी एवं ग्रामोद्योग मंत्री (श्री स्वामी प्रसाद मौर्य)–

ये हल्ला बोल के लोग हैं, अराजकता फैलाना इनका काम है ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

मान्यवर, सत्ता पक्ष की तरफ से एक सौदा हुआ है, यह सौदागरों की सरकार है । आंज से नहीं जमाने से सौदागरों की सरकार है । अगले लोकसभा के चुनाव साथ लड़ेंगे, देश के राष्ट्रपति का चुनाव साथ लड़ेंगे ।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

अब प्रस्ताव के पक्ष और विपक्ष में बहस हो गयी है ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

मुझे लगता है अगर नेता सदन को यह अहसास हुआ होता कि आज भी किसी बुनकर ने परेशान होकर खुदकुशी की है, काश यह सूचना नेता सदन को मिली होती और उसकी सूचना सदन को दी गयी होती । नेता सदन ने एक महीने का अखबार पढ़ा होता । (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

दोबारा बहस नहीं हो रही है ।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

मान्यवर, यह किस नियम के तहत भाषण कर रहे हैं ?

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

सार्वजनिक उद्यम मंत्री (श्री लालजी वर्मा)–

मान्यवर, व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

मान्यवर, नेता सदन का प्रस्ताव इसलिये स्वीकार्य नहीं है । मैं एक जुमले में बात खत्म कर दूंगा और इसलिये भी कि यह जुमला बाहर जाना चाहिये ।

(अनेक सदस्यों द्वारा एक साथ बोलने का प्रयास करने पर व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

केवल स्पष्टीकरण पूछें । आप लोग बैठ जाइये ।

जब माननीय नेता सदन का भाषण समाप्त हो जाय तो स्पष्टीकरण मांगने की परम्परा है, यह स्पष्टीकरण नहीं है ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

मान्यवर, जो आवाज उधर से मुसलमान के नाम पर आई, मैं उस आवाज का जवाब दूंगा ।

श्री अध्यक्ष–

इस सदन के अन्दर सब सदस्य हैं न कोई हिन्दू है, न मुसलमान है और न इसाई ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

आप हमारे संरक्षक हैं, आप हमारे इस अधिकार को नहीं लेंगे । सदन के सम्मुख इस प्रस्ताव के खिलाफ यह कहते हुए डिवीजन की मांग करता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

अभी समय नहीं आया है उसका नियम में समय दिया है ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

मान्यवर, [x x x]

श्री अध्यक्ष–

यह अंतिम वाक्य नहीं लिखा जायेगा और न कार्यवाही का अंग बनेगा ।

नोट :–[xxx] यह अंश मा० अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

*सुश्री मायावती–

माननीय अध्यक्ष जी, नेता प्रतिपक्ष ने जो कुछ कहा है, उसका जवाब मैं दे चुकी हूं और दोबारा देना उचित नहीं समझती हूं। बी० एस० पी० के जिन 14 मुस्लिम विधायकों के बारे में कहा गया है कि आज जुम्मे की नमाज है, उन्होंने पढ़ी नहीं है। मान्यवर, जरूरी नहीं है कि मस्जिद में जाकर ही नमाज पढ़ें, हो सकता है अपने दफ्तरों में ही पढ़ी हो। आपको उनसे सर्टीफिकेट लेने की जरुरत नहीं है।

(प्रतिपक्ष के कई सदस्यों के खड़े होने पर)

श्री अध्यक्ष–

कृपया बैठ जायें।

सुश्री मायावती–

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे 14 मुस्लिम विधायकों ने बताया है कि बीच में वे लोग गये थे और जाकर नमाज पढ़ी है।

(कई सदस्यों के बोलने पर व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता सदन ने मंत्रि-परिषद् में विश्वास के मत के संबंध में जो प्रस्ताव आज प्रस्तुत किया था, उस पर चर्चा समाप्त हुई। अब 5 मिनट तक घण्टी बजायी जायेगी और उसके बाद सदन के प्रवेश द्वार, सारे दरवाजे बन्द कर दिये जायेंगे। सदन में इस सदन के सदस्य को ही मत देने का अधिकार है। विधान परिषद् के जो माननीय सदस्य सभाकक्ष में हैं उनसे अनुरोध है कि कृपया वे मतदान के समय सदन या सभाकक्ष में न रहें। महाधिवक्ता महोदय भी सदन में उपस्थित हैं, वे उपस्थित रह सकते हैं लेकिन उन्हें मत देने का अधिकार नहीं है। दूसरे सदन के जो माननीय मंत्री हैं, मंत्रि-परिषद् के सदस्य हैं लेकिन दूसरे सदन के सदस्य हैं उन्हें सदन में बैठने का अधिकार तो है लेकिन मत देने का अधिकार नहीं है। सदन में विधान सभा सचिवालय के वे ही कर्मचारी और अधिकारी उपस्थित रहेंगे जो ड्यूटी पर हैं। अब घण्टी बजायी जाये।

(घण्टी लगातार पांच मिनट तक बजती रही)

श्री अध्यक्ष–

पांच मिनट हो गये, घण्टी बज गयी, अब कृपया प्रवेश द्वार बन्द कर दें। मैं अब प्रश्न उपस्थित कर रहा हूं।

प्रश्न यह है कि यह सदन मंत्रि-परिषद् में विश्वास व्यक्त करता है ?

जो माननीय सदस्य इसके पक्ष में हों कृपया "हां" कहें।

(माननीय सदस्यों ने "हां" कहा)

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

जो माननीय सदस्य इसके विरोध में हो कृपया "नहीं" कहें।

(माननीय सदस्यों ने "नहीं" कहा)

श्री अम्बिका चौधरी–

मान्यवर, लॉबी डिवीजन करवा लें।

श्री अध्यक्ष–

उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम 298 में इस बात का प्राविधान है कि मत आवाजों द्वारा या विभाजन द्वारा लिये जा सकेंगे और यदि कोई सदस्य ऐसा चाहेंगे तो विभाजन द्वारा लिये जायेंगे। परन्तु अध्यक्ष यदि समझें कि विभाजन की मांग अनावश्यक रूप से की गयी है तो वे हाथ उठवाकर मत ले सकेंगे।

श्री अम्बिका चौधरी–

मान्यवर, लाबी डिवीजन करवा लिया जाये, वैसे आपका अधिकार और विवेक है। लेकिन इसके पूर्व अनेक दृष्टान्त हैं। मेरी प्रार्थना है कि इसमें आप लॉबी डिवीजन करवा लें।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, लाबी डिवीजन ही करवा लें, पहले हाथ उठवायें फिर लाबी डिवीजन करवायें तो गए दो बार क्यों करवायेंगे ?

श्री अध्यक्ष–

लॉबी डिवीजन आवश्यक नहीं है।

प्रश्न यह है कि "यह सदन मंत्रिपरिषद् में विश्वास व्यक्त करता है ?"

जो माननीय सदस्य "पक्ष" में हों कृपया हाथ उठायें।

(प्रस्ताव के पक्ष में माननीय सदस्यों ने हाथ उठाये)

श्री अध्यक्ष–

संख्या गिन ली जाय।

(प्रस्ताव के पक्ष में हाथ उठाये माननीय सदस्यों की संख्या गिने जाने के मध्य)

श्री मोहम्मद आजम खां–

अध्यक्ष जी, अभी रवि गौतम जी जो विधान परिषद् के सदस्य हैं, ने हाथ उठा रखा है।

श्री अध्यक्ष–

माननीय रवि गौतम जी, कृपया हाथ नीचे करिये, आप विधान परिषद् के सदस्य हैं।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मैं आपका आभारी हूं कि सबने हाथ का पंजा उठा रखा है।

श्री अध्यक्ष–

अब इसी बात पर माननीय प्रमोद जी इधर आ जाइये ।

(कुछ समय उपरान्त)

श्री अध्यक्ष–

आप हाथ नीचे कर सकते हैं, गिनती हो गयी है ।

श्री अतीक अहमद–

मान्यवर, व्यवस्था का प्रश्न है । एम० एल० सी० ने हाथ उठायें हैं ।

श्री अध्यक्ष–

यहां 2 एम० एल० सी० हैं एक ने हाथ नहीं उठाया दूसरे के हाथ नीचे हैं ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

मान्यवर, हम लाबी डिवीजन की मांग करते हैं ।

श्री अध्यक्ष–

पहले स्थिति सामने आ जाय ।

अब जो माननीय सदस्य इस प्रस्ताव के विरोध में हों वह कृपया अपना हाथ उठायें ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

मान्यवर, लाबी डिवीजन करवा दें ।

श्री अध्यक्ष–

मैं नियमानुसार चलूंगा । मैंने पहले कह दिया है कि मैं पहले हाथ उठाकर गिनती कराऊंगा और बाद में यदि आवश्यकता होगी तो लाबी डिवीजन कराऊंगा । अभी मैं लाबी डिवीजन की मांग अस्वीकार कर रहा हूं ।

(विपक्ष के कुछ सदस्यों ने हाथ उठाये ।)

श्री प्रमोद कुमार–

माननीय अध्यक्ष जी, आप नाराज मालूम होते हैं ।

श्री अध्यक्ष–

एक व्यवस्था है, जो पहले के दृष्टान्त हैं मैं उसी का अनुसरण कर रहा हूं । नियमावली में व्यवस्था है "परन्तु अध्यक्ष, यदि समझें कि विभाजन की मांग अनावश्यक रूप से की गयी है तो वे हाथ उठवाकर मत ले सकेंगे और विभाजन का परिहार कर सकेंगे ।" लाबी डिवीजन की मांग अनावश्यक की गयी है इसलिये मैं अस्वीकार कर रहा हूं । आप हाथ उठायें । प्रस्ताव के पक्ष में लोगों को देखते हुये मुझे लग रहा है कि माँग अनावश्यक है । मैं इसकी संख्या अभी घोषित नहीं कर रहा हूं ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, आप नियमों को देखिये ।

श्री अध्यक्ष–

मैंने देख लिया है ।

श्री प्रमोद कुमार–

नेता प्रतिपक्ष मांग कर रहे हैं और आप अनावश्यक कह रहे हैं । नेता प्रतिपक्ष का पद महत्वपूर्ण होता है । अगर हम लॉबी डिवीजन की मांग करते हैं तो वह अनावश्यक नहीं है ।

श्री अध्यक्ष–

हाथ उठाकर भी संख्या मालूम हो जायेगी ।

श्री प्रमोद कुमार–

यह दुर्भाग्यपूर्ण है । लाबी डिवीजन की माँग नेता प्रतिपक्ष करें तो स्वीकार करना चाहिये ।

श्री अध्यक्ष–

मैं बार-बार कह रहा हूं कि लाबी डिवीजन की आवश्यकता नहीं है । जो इस प्रस्ताव के विरोध में हों कृपया अपने हाथ उठायें । मैंने लाबी डिवीजन का प्रस्ताव अस्वीकार किया है । जितने हाथ उठे हैं उनकी गणना कर लीजिये ।

श्री मोहम्मद आजम खां–

मेरी माँग मान लें ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता प्रतिपक्ष, अनावश्यक मांग करने से कोई फायदा नहीं है ।

हाथ उठाकर संख्या तो मालूम कर लीजिये ।

(घोर व्यवधान)

जो इस प्रस्ताव के विरोध में है वे हाथ उठा दें इसके बाद संख्या आ जाएगी आप स्वयं परिणाम देख लीजियेगा ।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

मान्यवर, अगर कोई सदस्य आपत्ति करता है तो आपको इसको स्वीकार करना चाहिए ।

* श्री हुकुम सिंह–

मान्यवर, यह नियमों का उल्लंघन है, यह सदन नियमों से चलेगा या विपक्ष की हठधर्मी से चलेगा ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, आप कृपया सुन लें।

श्री अध्यक्ष–

आपको विरोध करने का उतना ही अधिकार है जितना नियमों में दिया गया है !

*श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मुझे सुन लें, आप पढ़ लें। अगर आप सुनेंगे नहीं तो कैसे चलेगा। [× × ×] मैं विनम्रतापूर्वक 298 पर व्यवस्था का प्रश्न उठा रहा हूं। यह महत्वपूर्ण क्षण है। आप लाबी डिवीजन करा लें, आपका यह न कराना दुर्भाग्यपूर्ण क्षण हैं।

श्री अध्यक्ष–

प्रस्ताव के पक्ष में जो हाथ उठाए गये हैं उनकी संख्या है–216, आपके लाबी डिवीजन कराने की बात मैं स्वीकार करता हूं।

मैंने यह जो संख्या बताई है यह पक्ष में पड़े मतों की है।

अब लाबी डिवीजन करा लीजिये।

* श्री अम्बिका चौधरी–

मान्यवर, आप इस समय क्रोध में हैं। आप हमारे संरक्षक हैं, क्रोध में यह फैसला उचित नहीं है। मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूं। क्रोध का कारण क्या है यह मैं नहीं जानता हूं।

श्री अध्यक्ष–

मैंने आपकी लाबी डिवीजन की मांग मान ली है।

श्री अम्बिका चौधरी–

मान्यवर, मैं आभारी हूं।

(समय शाम के 07 बजकर 05 मिनट।)

श्री अध्यक्ष–

आदरणीय सदस्यगण, सदन की लाबीज में विभाजन सूची में हस्ताक्षर द्वारा मत विभाजन की प्रक्रिया को मैं पढ़कर सुना रहा हूं। आप लोग शान्तिपूर्वक उस प्रक्रिया को सुनें।

सदन के सभा कक्षों (लाबीज) में जाकर लिखित विभाजन की प्रक्रिया के बारे में, मैं आप सभी माननीय सदस्यों को अवगत कराना चाहूंगा। सदन की "हां" व "नहीं" लाबी में विभाजन सूची रखी गयी है, मेरी दाहिनी ओर "हां" लाबी है और बायीं ओर "नहीं" लाबी है। माननीय सदस्यगण अपने

नोट :–[× × ×] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

नाम के सामने स्पष्ट हस्ताक्षर करेंगे और उसके आधार पर मत विभाजन होगा । प्रस्ताव के पक्ष में मत देने वाले माननीय सदस्य "हां" लाबी में जाकर विभाजन सूची में हस्ताक्षर करके अपना मत अंकित करेंगे और उसके विरोध में मत देने वाले माननीय सदस्य "नहीं" लाबी में जाकर मत विभाजन सूची में अपने हस्ताक्षर करके अपना मत अंकित करेंगे । विभाजन के पूर्व ऐसे भी व्यक्ति जो विधान सभा के सदस्य नहीं हैं (मंत्रि-परिषद् के सदस्यों एवं महाधिवक्ता को छोड़कर) सभा मण्डप एवं उसकी दोनों लाबियों से बाहर चले जायेंगे ।

सभा मण्डप एवं उनकी दोनों लाबियों में विधान सभा सचिवालय के वही अधिकारी/कर्मचारी विभाजन के समय रह सकेंगे, जिनकी सदन के कार्य में ड्यूटी लगायी गयी है, मत विभाजन के लिए 5 मिनट तक घण्टी बजायी जायेगी, घण्टी बन्द होने पर सदन के बाहरी दरवाजे बन्द कर दिये जायेंगे । तत्पश्चात् विचाराधीन प्रस्ताव के पक्ष एवं विपक्ष में जो माननीय सदस्य मतदान करना चाहें, वह कृपया हमारी दायीं ओर एवं बायीं ओर की "हां" एवं "नहीं" लाबी में जायेंगे और पहले बतलायी गयी रीति के अनुसार विभाजन सूची में अपने नाम के सामने स्पष्ट हस्ताक्षर करके पुनः सदन में आकर अपना स्थान ग्रहण करेंगे । सदन की दोनों लाबीज में ड्यूटी पर तैनात अधिकारी विभाजन सूची पर हस्ताक्षर करने वाले माननीय सदस्यों के हस्ताक्षर को सत्यापित करेंगे । माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे लाबी में तैनात अधिकारियों को अपना परिचय-पत्र अवश्य दिखला दें । यदि वह अपना परिचय-पत्र लाना भूल गये हों तो अपने परिचय का समाधान ड्यूटी पर तैनात अधिकारियों को अवश्य करा दें ताकि उनके हस्ताक्षर को सत्यापित करने में कोई असुविधा न हो ।

जो माननीय सदस्य लाबियों में अपने हस्ताक्षर कर लें वह पुनः सदन में आकर अपना स्थान ग्रहण कर लें और दूसरी लाबी में कदापि न जायें । सभी माननीय सदस्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह लाबियों में मत विभाजन को प्रभावित करने का प्रयास न करें ।

मत विभाजन की प्रक्रिया आरम्भ करने से पूर्व सभा मण्डप के सभी प्रवेश द्वार तब तक के लिये बन्द कर दिये जायेंगे, जब तक विभाजन का परिणाम घोषित न कर दिये जायं तब तक कोई सदस्य बाहर नहीं जायेंगे ।

मत विभाजन के लिए 5 मिनट तक घण्टी बजाई जायें ।

घंटी बजाई गयी तत्पश्चात् लाबी डिवीजन से मतदान हुआ ।

श्री अध्यक्ष–

यदि सभी माननीय सदस्यों ने मतदान कर लिया हो तो जो लाबी में रजिस्टर पर अधिकारी नियुक्त किये गये हैं वह हस्ताक्षर पंजिका यहां ले आयें । कुछ माननीय सदस्य वहां पर गिनने का प्रयास कर रहे हैं यह उचित नहीं है । अगर किन्हीं माननीय सदस्य ने मतदान नहीं किया है तो कृपया अपनी स्वेच्छा से "हां" या "ना" लाबी में मतदान कर लें । यदि नहीं हैं तो रजिस्टर प्रमाणित करवाकर मंगा लिया जाय ।

माननीय मुख्य मंत्री जी के द्वारा इस प्रस्ताव पर कि "यह सदन मंत्रि-परिषद् में विश्वास व्यक्त करता है" पहले ध्वनि-मत से मतदान कराया गया, उसके पश्चात् विभाजन की मांग प्रतिपक्ष से की गई । मैंने उस मांग को अस्वीकार करते हुए हाथ उठाकर मतदान कराने की प्रक्रिया अपनाई । प्रस्ताव के पक्ष में हाथ उठाकर मतदान कराने के बाद, परन्तु प्रस्ताव के विरोध में हाथ उठाकर मतदान कराने के पूर्व ही

माननीय नेता प्रतिपक्ष और अन्य प्रतिपक्ष के नेताओं ने इस बात की मांग की कि मतदान लाबी डिवीजन के द्वारा किया जाय । यद्यपि पहले मैंने इस मांग को अस्वीकार कर दिया था परन्तु माननीय प्रतिपक्ष के नेताओं के द्वारा अनुरोध करने पर मैंने उनके इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया । सदन के समक्ष लाबी विभाजन की प्रक्रिया पढ़ी गई । प्रस्ताव उपस्थित करने के पश्चात् और लाबी डिवीजन के पश्चात् जो परिणाम आये हैं वह इस प्रकार से हैं :–

दिनांक 17 मई, 2002 को मंत्रि-परिषद् में विश्वास प्रस्ताव पर मतदान

विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में–217

1–अकीलुर्रहमान खां, श्री

2–अक्षयवर लाल, श्री

3–अजय कुमार, श्री

4–अजय राय, श्री

5–अजीत कुमार उर्फ राजू यादव, श्री

6–अनिल कुमार, श्री

7–अनिल कुमार मौर्य, श्री

8–अनिल कुमार वर्मा, श्री (हरदोई)

9–अनीस अहमद खां उर्फ फूलबाबू, श्री

10–अनुराधा चौधरी, सुश्री

11–अब्दुल मन्नान, श्री

12–अमरजीत सिंह जनसेवक, श्री

13–अमरमणि, श्री

14–अमर सिंह यादव पुत्र श्री सुन्दर सिंह, श्री

15–अमिता सिंह, श्रीमती

16–अयोध्या प्रसाद पाल, श्री

17–अरुण कुमार मेहरोत्रा, डा०

18–अली बहादुर, श्री

19–अवधेश कुमार, श्री (शाहजहांपुर)

20–अशोक कुमार, श्री

21–अशोक कुमार सिंह चौहान, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

22–आनन्द प्रकाश लोधी, श्री

23–आर०एस० कुशवाहा, श्री

24–आर० के० चौधरी, श्री

25–आर०के० सिंह पटेल, श्री

26–इन्द्रजीत सरोज, श्री

27–इन्द्रदेव, श्री

28–इलम सिंह, श्री

29–उदयभान करवरिया, श्री

30–उदयभान सिंह, श्री

31–उमा किरन, श्रीमती

32–उमाशंकर कुशवाहा, श्री

33–ओइम्वेश, स्वामी

34–ओम प्रकाश (ओ०पी० सिंह), श्री

35–ओम प्रकाश पाण्डेय, श्री

36–ओम प्रकाश सिंह, श्री

37–कपिल देव, श्री

38–कमला प्रसाद रावत, श्री

39–कालीचरन राजभर, श्री

40–किशन लाल बघेल, सेठ

41–कुतुबुद्दीन, श्री

42–कुलदीप सिंह, श्री

43–कृष्ण कुमार सिंह उर्फ सतीश वर्मा, श्री

44–कृष्णानन्द, श्री

45–कृष्णा पासवान, सुश्री

46–कैलाश नाथ सिंह यादव, श्री

47–कोविद कुमार, श्री

48–कौकव हमीद खां, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

49–गंगा प्रसाद पुष्कर, श्री

50–गंगा बक्श सिंह, श्री

51–गंगा भक्त सिंह, श्री

52–गया चरण दिनकर, श्री

53–गुलाब देवी, श्रीमती

54–घनश्याम शुक्ल, श्री

55–घूराराम, श्री

56–चन्द्र किशोर, श्री

57–चन्द्रदेव राम यादव करैली, श्री

58–चन्द्रमणि कान्त सिंह, श्री

59–चौधरी बाबूलाल, श्री

60–छोटे लाल वर्मा, श्री

61–जगदीश नारायण (राय), श्री

62–जगदीश मिश्र बाल्टी बाबा, श्री

63–जगन प्रसाद गर्ग, श्री

64–जटाशंकर सिंह, श्री

65–जय प्रकाश यादव, श्री

66–जय प्रताप सिंह, श्री

67–जयवीर सिंह, श्री

68–जयवीर सिंह, ठाकुर

69–जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भैया, श्री

70–ज्ञानेन्द्र सिंह, श्री

71–तेजपाल सिंह, श्री

72–दद्दू प्रसाद, श्री

73–दयाराम, श्री

74–दयाशंकर वर्मा, श्री

75–दुर्गा प्रसाद मिश्र, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

76–देवकी नन्दन, श्री

77–देव नरायन उर्फ जी०एम० सिंह श्री

78–देवेन्द्र नागपाल, श्री

79–द्वारिका प्रसाद, श्री

80–धनन्जय सिंह, श्री

81–धर्मपाल, श्री

82–धर्मपाल सिंह, श्री

83–धर्मराज निषाद, श्री

84–धर्म सिंह, श्री

85–धर्मेन्द्र कुमार, श्री

86–धू राम, श्री

87–नत्थू सिंह, श्री

88–नरेन्द्र कुमार, श्री

89–नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, डा०

90–नरेन्द्र सिंह, श्री

91–नरेन्द्र सिंह सिसौदिया, श्री

92–नवाब सिंह नागर, श्री

93–पकौड़ी लाल, श्री

94–पूरन सिंह बुन्देला, श्री

95–प्रताप चौधरी, श्री

96–प्रमोद गौड़, श्री

97–प्रागी लाल अहिरवार, श्री

98–प्रेमलता कटियार, श्रीमती

99–प्रेम सिंह, श्री

100–फतेह बहादुर, श्री

101–फसीहा मुराद लारी उर्फ गजाला, श्रीमती

102–फागू, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

103–बादशाह सिंह, श्री

104–बाबू राम, एम०काम०, श्री

105–बाबू लाल कुशवाहा, श्री

106–विजय सिंह, श्री

107–बृजेन्द्र कुमार व्यास, (डमडम महाराज), श्री

108–बृजेन्द्र प्रताप सिंह, श्री

109–भगेलू राम, श्री

110–भरत, श्री

111–भरतेन्द्र सिंह, कुंवर

112–भूपेन्द्र सिंह, श्री

113–मुंशी लाल गौतम, श्री

114–मतेश चन्द्र सोनकर, श्री

115–मदन भैया, श्री

116–मदन सिंह उर्फ सन्तोष कुमार, श्री

117–मयंकेश्वर शरण सिंह, श्री

118–मलिक मसूद, श्री

119–मस्तराम, श्री

120–महेन्द्र अरिदमन सिंह, राजा

121–महेन्द्र सिंह, श्री

122–महेन्द्र सिंह यादव, श्री

123–महेश चन्द्र, श्री

124–माया प्रसाद, श्रीमती

125–मायावती, सुश्री

126–मिथलेश कुमार, श्री

127–मुकुट बिहारी वर्मा, श्री

128–मो० आकिल उर्फ मुन्ना मियां, श्री

129–मो० इरशाद खां, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

130–माहम्मद बशीर, श्री

131–मो० मुजतबा सिद्दीकी, श्री

132–मो० शफीर, श्री

133–यशवन्त सिंह, डा०

134–याकूब हाजी

135–योगेश प्रताप सिंह उर्फ योगेश भइया, श्री

136–रणवीर राणा, श्री

137–रमापति उर्फ रमाकान्त, श्री

138–रमेश कान्त लवानियां, श्री

139–रमेश कुमार शर्मा, श्री

140–रमेश चन्द विन्द, डा०

141–रविन्द्र पुण्डीर, प्रो०

142–राज किशोर सिंह, श्री

143–राजनाथ सिंह, श्री

144–राजपाल सिंह बालियान, श्री

145–राजपाल सिंह सैनी, श्री

146–राजरानी, सुश्री

147–राज लक्ष्मी वर्मा, श्रीमती

148–राजाराम, श्री

149–राजीव कुमार सिंह, श्री

150–राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह, श्री

151–राजेन्द्र सिंह चौहान, श्री

152–राजेन्द्र सिंह राणा, श्री

153–राजेश अग्रवाल, श्री

154–राजेश कुमार, श्री

155–राधा मोहन दास अग्रवाल, डा०

156–राम अचल राजभर, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

157–राम इकबाल, श्री

158–राम कृष्ण, श्री

159–रामजी शुक्ला, श्री

160–रामनाथ, श्री

161–राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री

162–राम प्रताप सिंह, श्री

163–राम प्रसाद चौधरी, श्री

164–रामबादू हरित, डा०

165–राम भुआल, श्री

166–रामवीर उपाध्याय, श्री

167–रामशंकर, श्री

168–राम स्वरूप, श्री (कानपुर देहात)

169–रामहेत, श्री

170–रिजवान अहमद खां, श्री

171–लक्ष्मीकान्त बाजपेयी, डा०

172–लल्लू सिंह, श्री

173–लालजी टण्डन, श्री

174–लालजी वर्मा, श्री

175–विद्या चौधरी, श्रीमती

176–विद्यासागर गुप्ता, श्री

177–विनय शाक्य, श्री

178–विनोद कुमार सिंह, श्री

179–विनोद तिवारी, डा०

180–विमल कृष्ण अग्रवाल उर्फ पप्पी, श्री

181–वीरेन्द्र सिंह, श्री (मुजफ्फरनगर)

182–वेदराम भाटी, श्री

183–शंखलाल मांझी, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

184–शारदा प्रसाद, श्री

185–शिवचरन, श्री

186–शिव तपस्या, श्री

187–शिवाकान्त ओझा, प्रो०

188–शिवेन्द्र सिंह उर्फ शिव बाबू, श्री

189–शैलेन्द्र यादव "ललई", श्री

190–श्याम, श्री

191–श्यामदेव राय चौधरी, श्री

192–श्याम सुन्दर शर्मा, श्री

193–सन्दीप अग्रवाल, श्री

194–सतीश महाना, श्री

195–सत्य प्रकाश अग्रवाल
(कैलाश डेरी वाले), श्री

196–सदल प्रसाद, श्री

197–सत्य नारायण, श्री

198–समरपाल सिंह, श्री

199–सर्वेश कुमार उर्फ राकेश, कुंवर

200–सलिल विश्नोई, श्री

201–सुखदेव राजभर, श्री

202–सुरेन्द्र पाल वर्मा, डा०

203–सुरेन्द्र प्रताप, श्री

204–सुरेन्द्र विक्रम सिंह, श्री

205–सुरेश कुमार खन्ना, श्री

206–सुरेश कुमार श्रीवास्तव, श्री

207–सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री

208–सोमारू राम सरोज, श्री

209–सोवरन सिंह, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

210–स्वामी प्रसाद मौर्य, श्री

211–हरि प्रताप सिंह, श्री

212–हरिशंकर तिवारी, श्री

213–हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव "हरीश जी", श्री

214–हीरा लाल गौतम, श्री

215–हुकुम सिंह, श्री

216–होशियार सिंह, श्री

217–पीटर फैन्थम, श्री

विश्वास प्रस्ताव के विपक्ष में–180

1–अखिलेश कुमार सिंह, श्री

2–अजय कपूर, श्री

3–अजीम भाई, श्री

4–अतीक अहमद, श्री

5–अनवर महमूद, श्री

6–अनार सिंह दिवाकर, श्री

7–अनिल कुमार पाण्डेय, श्री

8–अनिल कुमार वर्मा, श्री (सीतापुर)

9–अनिल कुमार सिंह यादव, श्री

10–अनिल, श्री

11–अनुग्रह नारायण उर्फ खोखा सिंह, श्री

12–अनूप कुमार पाण्डेय, श्री

13–अन्सार अहमद, श्री

14–अब्दुल कलाम, श्री (वाराणसी)

15–अब्दुल कलाम, श्री

16–अब्बास अली जैदी उर्फ रुश्दी मियां, श्री

17–अम्बिका चौधरी, श्री

18–अम्बेश कुमारी, श्रीमती

उत्तर प्रदेश विधान सभा

19–अरविन्द गिरि, श्री

20–अरुण कुमारी, श्रीमती

21–अरुणवीर सिंह, श्री

22–अरुणा तोमर, श्रीमती

23–अवधेश प्रसाद, श्री (फैजाबाद)

24–अशोक वाजपेयी, डा०

25–आदित्य विक्रम सिंह (बोकू सिंह), श्री

26–आनन्द सेन, श्री

27–आलमबदी, श्री

28–आलोक कुमार शाक्य, श्री

29–आशा किशोर, श्रीमती

30–आशीष यादव, श्री

31–आशुतोष मौर्य उर्फ राजू, श्री

32–इकबाल महमूद, श्री

33–उदयराज, श्री

34–ऊषा वर्मा, श्रीमती

35–ओमकार सिंह यादव, श्री

36–ओम प्रकाश, श्री (गाजीपुर)

37–ओम प्रकाश, श्री (सीतापुर)

38–ओमवती देवी, श्रीमती

39–कमलेश कुमार पाठक, श्री

40–कमाल यूसुफ मलिक, श्री

41–कल्याण सिंह, श्री

42–कल्यान सिंह दोहरे, श्री

43–काजिम अली खां उर्फ नवेद मियां, नवाब

44–कामेश्वर उपाध्याय, श्री

45–काशीराम, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

46–किरणपाल कश्यप, श्री

47–किरनपाल सिंह, श्री

48–कैलाश, श्री

49–कैलाश चौरसिया, श्री

50–कौशल किशोर, श्री (खीरी)

51–कौशल किशोर, श्री (लखनऊ)

52–गीता सिंह, श्रीमती

53–चन्द्रभद्र सिंह, श्री

54–चितरंजन स्वरूप, श्री

55–छेदी राम, श्री

56–छोटे लाल, श्री

57–जगदम्बिका पाल, श्री

58–जगदीश सिंह राणा, श्री

59–जगदीश सोनकर, श्री

60–जगराम, श्री

61–जमालुद्दीन सिद्दीकी, श्री

62–जियाउद्दीन रिजवी, श्री

63–दिनेश सिंह, श्री

64–दीनानाथ कुशवाहा, श्री

65–दीनानाथ भास्कर, श्री

66–दुर्गा प्रसाद यादव, श्री

67–देवेन्द्र प्रताप, श्री

68–देवेन्द्र प्रताप सिंह, श्री

69–नरेन्द्र सिंह यादव, श्री

70–नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री

71–नारद राय, श्री

72–नूर मोहम्मद, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

73–परमेश्वर दयाल, श्री

74–पारसनाथ यादव, श्री

75–पी०के० राय, डा०

76–पीतम राम, श्री

77–पूर्णमासी देहाती, श्री

78–प्रदीप माथुर, श्री

79–प्रभू दयाल, श्री

80–प्रभू नारायण, श्री

81–प्रमोद कुमार, श्री

82–प्रेमपाल सिंह यादव, श्री

83–बंशीधर राज, श्री

84–बलराम यादव, श्री

85–बाबू लाल, श्री

86–बीजू पटनायक, श्री

87–बीना भारद्वाज, श्री

88–वीरेन्द्र सिंह बुन्द भगत–राजा, श्री

89–बैजनाथ, श्री

90–बैजनाथ दुबे, श्री

91–ब्रह्माशंकर त्रिपाठी, श्री

92–भगवत सरन गंगवार, श्री

93–मदन गोपाल वर्मा, श्री

94–मदन चौहान, श्री

95–मशहूद खां, श्री

96–महबूब अली, श्री

97–महेन्द्र कुमार सिंह, श्री

98–महेन्द्र सिंह राजपूत, श्री

99–महेश नारायण सिंह, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

100–माता प्रसाद पाण्डेय, श्री

101–मानपाल सिंह, श्री

102–मुश्ताक सोलंकी, हाजी

103–मूलचन्द, श्री

104–मोहनदेव शंखवार, श्री

105–मोहम्मद आजम खां, श्री

106–मोहम्मद रिजवान, श्री

107–यशपाल चौधरी, श्री

108–योगेन्द्र कुमार, श्री

109–रतनजीत प्रताप नारायण सिंह, कुंवर

110–रतनलाल अहिरवार, श्री

111–राकेश कुमार वर्मा, श्री

112–राकेश पाण्डेय, श्री

113–राकेश सचान, श्री

114–राजपाल त्यागी, श्री

115–राजेन्द्र प्रसाद, श्री

116–राधेश्याम, श्री

117–राधेश्याम सिंह, श्री

118–राम करन आर्य, श्री

119–राम किशुन, श्री

120–राम कृपाल, श्री

121–राम गोविन्द चौधरी, श्री

122–रामजीत राजभर, श्री

123–राम नरेश यादव, श्री

124–रामपाल यादव, श्री

125–राम विशुन आजाद, श्री

126–राम लाल अकेला, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

127–रामवीर सिंह, श्री

128–राम सेवक, श्री

129–रामस्वरूप सिंह, श्री (बिजनौर)

130–रामेश्वर सिंह यादव, श्री

131–रियाज अहमद, श्री

132–रेवती रमण सिंह, कुंवर

133–लाल बहादुर, श्री

134–लुईस खुर्शीद, श्रीमती

135–वकार अहमद शाह, डा०

136–वसीम अहमद, श्री

137–विजय कुमार मिश्र, श्री

138–विजय बहादुर पाल, श्री

139–विजय सिंह, श्री

140–विजमा यादव, श्रीमती

141–विजेन्द्र सिंह, श्री

142–विनोद कुमार उर्फ पण्डित सिंह, श्री

143–विनोद कुमार यादव कक्का, श्री

144–विवेक बंसल, श्री

145–विशम्भर प्रसाद निषाद, श्री

146–विश्राम सिंह यादव, श्री

147–वीरेन्द्र प्रताप सिंह "मुन्ना", श्री

148–वीरेन्द्र सिंह, श्री (बरेली)

149–वीरेश्वर, श्री

150–शचीन्द्र नाथ त्रिपाठी, श्री

151–शब्बीर, श्री

152–शमीमुल हक, श्री

153–शरदवीर सिंह, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

154–शहजिल इस्लाम, श्री

155–शाकिर अली, श्री

156–शारदा देवी, श्रीमती

157–शारदा नन्द अंचल, श्री

158–शाहिद मंजूर, श्री

159–शिव कुमार बेरिया, श्री

160–शिव पाल सिंह यादव, श्री

161–शिव प्रताप उर्फ डा० शिव प्रताप यादव, श्री

162–शिशुपाल सिंह यादव, श्री

163–श्याम नारायन, श्री

164–श्यामलाल रावत, श्री

165–श्याम सूरत उपाध्याय, श्री

166–संजय गर्ग, श्री

167–संजीव दरियाबादी, श्री

168–संध्या कठेरिया, कु०

169–सिद्ध गोपाल साहू, श्री

170–सियाराम सागर, डा०

171–सीताराम निषाद, श्री

172–सुखदेवी वर्मा, श्रीमती

173–सुन्दर लाल, श्री (उन्नाव)

174–सुन्दर सिंह, श्री (बुलन्दशहर)

175–सुरेन्द्र प्रकाश गोयल, श्री

176–सुरेन्द्र सिंह पटेल, श्री

177–सुल्तान बेग, श्री

178–सुशील चौधरी, डा०

179–सूरज सिंह शाक्य, श्री

180–हरि ओम, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(दो सदस्य मतदान से विरत रहे तथा एक सदस्य अनुपस्थित रहे)

श्री अध्यक्ष–

प्रस्ताव के पक्ष में 217 और प्रस्ताव के विरोध में 180, इस प्रकार माननीय मुख्य मंत्री द्वारा प्रस्तुत किया गया यह प्रस्ताव पारित हुआ।

अब हम उठते हैं और 20 मई, 2002 को पूर्वाह्न 11 बजे फिर मिलेंगे।

(इसके बाद सदन का उपवेशन 7 बजकर 32 मिनट पर सोमवार दिनांक 20 मई, 2002 दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया)

लखनऊ :

दिनांक 17 मई, 2002

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

पी०एस०यू०पी०–एल० 230 विधान सभा (395–2002–813 प्रतियां।